ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

वैशाख-ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही ५४७
वर्ष ८ अंक ९ मई 2015

संपादक : सिमरजीत सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

जा का मीतु साजनु है समीआ ॥
तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥१॥
जा की प्रीति गोबिंद सिउ लागी ॥
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागी ॥१॥ रहाउ ॥
जा कउ रसु हरि रसु है आइओ ॥
सो अन रस नाही लपटाइओ ॥२॥
जा का कहिआ दरगह चलै ॥
सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥३॥
जा का सभु किछु ता का होइ ॥
नानक ता कउ सदा सुखु होइ ॥४॥ *(पन्ना १८६)*

श्री गुरु अरजन देव जी गउड़ी राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में मनुष्य की परमात्मा के साथ अटूट सांझ के परिणाम को बड़े खूबसूरत ढंग से बयान कर रहे हैं तथा समझा रहे हैं कि सभी मनुष्यों को परमात्मा के साथ ही प्रीति बनानी चाहिए। परमात्मा के साथ प्रीति बन जाने से अन्य अस्थिर सहारों की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती।

गुरु जी फरमान कर रहे हैं कि जिस मनुष्य का यह विश्वास बन जाए, जिसे यह अनुभव हो जाए कि उसका सखा, साजन-- परमात्मा हर स्थान पर मौजूद है, उस मनुष्य को किसी चीज़ की कमी नहीं रह जाती अर्थात् परमात्मा के सर्वव्यापक होने का विश्वास रखने वाले मनुष्य की प्रत्येक जगह, हर घड़ी मदद परमात्मा करता है। जिस मनुष्य का प्रेम परमात्मा के साथ बन जाता है उस मनुष्य का हर दुख, दर्द, भ्रम मन से भाग जाता है, दूर हो जाता है। जिस मनुष्य को परमात्मा के नाम-सिमरन का रस, आनंद आ जाता है उसके लिए अन्य सांसारिक रस, आनंद किसी काम के नहीं रह जाते अर्थात् उस मनुष्य को सांसारिक रस, आनंद अपनी लपेट में नहीं लेते। (परमात्मा पर विश्वास रखने वाले) ऐसे मनुष्य की कही हुई हर बात परमात्मा के दर पर स्वीकार होती है उसे अन्य किसी की कोई मुहताजी नहीं रह जाती।

अंतिम पंक्तियों में गुरु जी का उपदेश है कि जिस परमात्मा का बनाया हुआ यह सारा संसार है, ऐसे परमात्मा का जो मनुष्य सेवक बन जाता है उसे सदा सुख की प्राप्ति होती है; उसके मन में सदा आनंद बना रहता है।

उपरोक्त शबद में सार रूप में यही उपदेश है कि मनुष्य को सदा परमात्मा का ही सहारा लेना चाहिए। ऐसी बात मनुष्य के मन में पक्के तौर पर बैठ जानी चाहिए कि परमात्मा का सहारा पाकर अन्य सांसारिक सहारों की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती। जब सारा संसार परमात्मा का ही बनाया हुआ है तो सबको सहारा भी परमात्मा का ही लेना चाहिए।

संपादकीय

सभ्य समाज के सृजनहार : सिक्ख सिद्धांत

अपने गौरवमयी इतिहास को जानकर उस पर फख्र करना प्रत्येक मनुष्य की फितरत रही है। अपने इतिहास की अच्छी बातों को जानना, पढ़ना तथा उस पर अमल करना आवश्यक है। जो कौमें अपने सभ्याचार को संभाल कर रखती हैं वे समय के मुश्किल दौर को बहुत ही दृढ़ता से पार कर लेती हैं। सिक्ख सभ्याचार में श्री गुरु नानक देव जी ने हर सिक्ख को नाम जपने, किरत करने तथा बांटकर छकने के सिद्धांत पर पहरा देने का आदेश दिया है। सिक्ख इतिहास पर दृष्टि डालते हुए इस बात की भली-भांति जानकारी मिल जाती है कि सिक्खों ने इन सिद्धांतों पर पहरा देते हुए बहुत बड़ी मुश्किलों को हल कर लिया था। अनेकों सिंघों ने शहीदियां देकर अपनी ज़िंदा-दिली व आज़ाद हस्ती का सबूत दिया। बड़े-बड़े शूरवीरों, योद्धाओं ने इतिहास को नया रुख दिया।

मानवीय समाज में नेकी एवं बदी का संघर्ष शुरू से चला आ रहा है। जब भी समाज में बदी सिर उठाने लगती है तो सुचेत मनुष्य इसको जानकर उसी समय समाज को जगाने के लिए क्रियाशील हो जाता है। 'खालसा' चेतन मनुष्य है। समाज में से कुरीतियों को दूर कर खालसाई सिद्धांतों पर आदर्श समाज की सृजना की जा सकती है।

खालसा पंथ की आमद से पूर्व भारतीय इतिहास को देखने पर यहां की तरसयोग्य हालत दृष्टिगोचर होती है। बाहरी हमलावर आ-आकर यहां की धन-दौलत लूटकर वापिस चले जाते रहे, धार्मिक स्थानों को नेसतो-नाबूद करते रहे, यहां की इज़्जत-आबरू को पांवों तले रौंदकर वापिस जाते समय हज़ारों की संख्या में लड़कियों को बंदी बनाकर साथ ले जाते रहे। इसी श्रृंखला में सिबीयन, तुर्क, लोधी, पठान, मुगल आए तथा लूटपाट करते रहे। श्री गुरु नानक देव जी के सृजित सिक्ख पंथ से उत्पन्न हुआ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सजाया खालसा पंथ इन जुल्मों के विरुद्ध डटकर खड़ा हो गया। खालसा फौज ने विदेशी हमलावरों के सारे रास्ते बंद कर दिए। खालसा फौज के अनेकों सिंघों ने शहादत के जाम पीकर नयी मिसालें कायम कीं। स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया, स. बघेल सिंघ जी, स. जस्सा सिंघ रामगढ़िया, बाबा दीप सिंघ जी, बाबा गरजा सिंघ तथा बाबा बोता सिंघ जी, स. तारा सिंघ घेबा, भाई मनी सिंघ जी, भाई सुबेग सिंघ जी तथा भाई शाहबाज़ सिंघ जी जैसे अनेकों जांबाज शूरवीरों ने नया इतिहास सृजित किया जो आज भी नौजवान पीढ़ी के लिए पथ-प्रदर्शक है। इनमें से अनेक ऐसे शहीद भी हैं, जिनका इतिहास समय की मार तले दफ़न हो गया है। उस इतिहास को उजागर करके नौजवान पीढ़ी तक पहुंचाना आज के समय की मुख्य ज़रूरत बनती जा रही है। माता-पिता एवं बुजुर्गों का यह अहम फ़र्ज बनता है कि वे बच्चों तक इतिहास को पहुंचाएं और चलता रखें। कई बार यह जानकर बहुत दुख होता है कि जब किसी नौजवान को अपने ही गांव

की प्रसिद्ध शख़्सियत का नाम तथा इतिहास मालूम नहीं होता। इसमें उन नौजवानों का इतना कसूर मैं नहीं समझता जितना उनके माता-पिता तथा बुजुर्गों का है, जिन्होंने उनको इतिहास नहीं बताया तथा इतिहास बताना अपना फर्ज़ नहीं समझा।

आज का युग बहुत तेजी से चलने वाला युग है। हमारे पास सुख-साधनों की भरमार है किंतु फिर भी हम सभ्याचारक रूप से गरीब होते जा रहे हैं। गुरु साहिबान द्वारा बख़्शे सिद्धांत हमारे जीवन में से धीरे-धीरे मनफी होते जा रहे हैं। हम निजवाद में इतने उलझ चुके हैं कि दूसरों के सुख-दुख का हमें कोई ख़्याल नहीं रहता। किरत करने की जगह हम निठल्ले रहकर हुक्म करने के आदी हो चुके हैं। हम चाहते हैं कि काम कोई अन्य करे किंतु उसका फल हमें मिलता रहे। हमारी बोली-शैली, गीत-संगीत, पहरावा आदि सब दूसरों की नकल हो गया है। मंडीकरण वाले प्रत्येक हथकंडा अपनाकर हमें अपने अनुसार जीवन जीने के आदी बनाकर हमारी जेबों पर डाके डाल रहे हैं। परिणामस्वरूप अमीरी और गरीबी में खाई बढ़ती जा रही है। आज हमें सुचेत होने की अति आवश्यकता है। हमें अपने सभ्याचारक सिद्धांत-- नाम जपो, किरत करो तथा बांटकर छको पर डटकर पहरा देना होगा। एक मंच पर इकट्ठा होकर उभर रही बुराइयों का डटकर विरोध करना होगा तभी हम खुशहाल समाज की सृजना की आशा रख सकेंगे।

भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥

*-डॉ. जगजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त शेख़ फरीद जी का सलोक अंकित है :

फरीदा काली जिनी न राविआ धउली रावै कोइ ॥
करि सांई सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइ ॥
(पन्ना १३७८)

सलोक का भाव है-- काले केशों के रहते अर्थात् युवा आयु में जिसने प्रभु-पति से प्रेम नहीं किया उनमें से धवल केश राशि भाव वृद्धावस्था आने पर कोई विरला भाग्यवान ही प्रभु-स्मृति में रत हो सकता है। इस सलोक के स्पष्टीकरण में तृतीय गुरु श्री गुरु अमरदास जी उपदेश करते हैं :

फरीदा काली धउली साहिब सदा है जे को चिति करे ॥
आपणा लाइआ पिरमु न लगई जे लोचै सभु कोइ ॥
एहु पिरमु पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥
(पन्ना १३७८)

अर्थात् यदि कोई जीव मन से समर्पित होकर प्रभु की भक्ति करे तो काली केश राशि व धवल केश राशि, आयु के पड़ावों से कोई अंतर पड़ने वाला नहीं है। भक्ति का दान परमात्मा की बख़्शिश है। अपने पुरुषार्थ से यह प्राप्त होने वाला नहीं है, भले ही कोई कितनी कामना करता रहे। प्रेम का प्याला प्रभु की बख़्शिश है। वह जिसे चाहता है, उसे ही देता है। काली-धवली, जवानी, बुढ़ापा कोई महत्त्व नहीं रखते। यह प्रेमासिक्त गहन अनुभूति गुरुदेव जी निजी अनुभव के आधार पर संभवतः व्यक्त कर रहे हैं। वैसे यह तथ्य स्पष्ट है कि समग्र मानवता को अतीव आनंद, सुकून और परम संतोष प्रदान करने वाली श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपूर्ण बाणी इसीलिए इतनी प्रभावोत्पादक है, क्योंकि यह परम आध्यात्मिक, रूहानी शख़्सियतों के स्वअनुभूत भाव-लोक पर आधारित है। परम ज्योति अकाल पुरख की प्रेम-साधना में तल्लीन होकर गुरु-ज्योति ने जो अनुभव किया उसे ही लोक-कल्याण हित शबद रूप में प्रदान कर दिया। श्री गुरु अमरदास जी ने भी स्वभुक्त अनुभव ही दर्शाया है।

श्री गुरु अमरदास जी का जन्म ८ ज्येष्ठ, संवत् १५३६ तद्नुसार ५ मई, सन् १४७९ ई. को श्री अमृतसर ज़िले के गांव बासरके में भाई तेजभान तथा माता सुलक्खणी जी के घर हुआ। आपका विवाह श्री देवी चंद की सुपुत्री माता राम कौर उर्फ़ माता मनसा देवी जी के साथ हुआ, जिनसे आपके दो सुपुत्र-- बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी एवं दो सुपुत्रियां-- बीबी दानी जी एवं बीबी भानी जी पैदा हुईं। बाल्यावस्था से ही आप शील, संयमयुक्त धार्मिक प्रावृत्ति के थे। आर्थिक अवस्था उच्च स्तरीय होने से किरत-व्यापार भी करते और लगभग प्रत्येक वर्ष हरिद्वार गंगा-स्नान को जाया करते थे। इक्कीसवीं बार जब आप हरिद्वार-यात्रा पर गए तो वहां से लौटते हुए पंडित दुर्गा दत्त से

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (उ. प्र.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६*

मुलाकात हुई जिसने इनका दिया हुआ दान यह कहकर लौटा दिया कि वह निगुरे के हाथ से कुछ स्वीकार नहीं करता। इस बात से गुरु जी के हृदय को गहरी ठेस पहुंची और उन्होंने निश्चय किया कि वे गुरु धारण करके रहेंगे। संयोग भी ऐसा ही बन पड़ा कि इन्हें अपने घर के सहयोग से गुरु की प्राप्ति हो गई।

द्वितीय ज्योति श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री बीबी अमरो जी इनके भाई की पुत्र-वधू थीं। प्रतिदिन नियम से प्रात: स्नान कर घर के काम-काज में जुटी अत्यंत मधुर कंठ से 'जपु जी साहिब' व 'आसा की वार' की रूहानी बाणी-गायन करती रहतीं। अचानक श्री गुरु अमरदास जी के कानों में मधुर बाणी की आवाज़ पड़ी तो वे भावविगलित हो पुत्र-वधू से पूछ बैठे, तो उत्तर मिला कि यह मधुर बाणी श्री गुरु नानक देव जी की है, जिनकी गुरगद्दी पर इस समय उसके पूज्य पिता श्री गुरु अंगद देव जी प्रतिष्ठित हैं। बस फिर क्या था, दर्शन की लालसा जागृत हुई। बीबी अमरो जी को साथ ले खडूर साहिब पहुंच गए। *"दर्शन भेटत होत अनंदा"* वाली स्थिति बन पड़ी। रिश्ते से समधी का विचार नहीं आया, गुरु-चरणों से जा लगे। तब सेवा की वह मिसाल पेश की कि इतिहास में सेवा की प्रतिमूर्ति, सेवा के पुंज हो चरितार्थ हुए। उस समय श्री गुरु अंगद देव जी लगभग ३६ वर्ष के थे और श्री गुरु अमरदास जी की आयु ६२ वर्ष थी किंतु सेवा में कोई व्यवधान नहीं आने दिया। श्री गुरु अंगद देव जी को स्नान करवाने की सेवा अपने जिम्मे ले ली। पहर रात रहते ब्यास दरिया पर जाते, पानी की गागर भरकर कंधे पर रख खडूर साहिब लाकर गुरुदेव को प्रेम सहित स्नान करवाते, फिर संगत की हाज़री भरते। खडूर साहिब गुरु-संगत का तांता लगा ही रहता। लंगर-पानी की व्यवस्था और अन्य सेवाओं में भी रत रहते।

एक दिन प्रात: शीत काल की घोर आंधी-तूफान की बेला में श्री गुरु अमरदास जी गत १२ वर्षों के नियमानुसार जल की गागर कंधे पर रखे ब्यास दरिया से खडूर साहिब आ रहे थे। आंधी-तूफान के कारण अचानक पैर रास्ते में गाड़ी गई जुलाहे की खड्डी में जा पड़ा। आवाज़ होने पर जुलाहे के पूछने पर जुलाही ने उत्तर दिया, "होगा वही 'अमरू' निथावां, जिसका न घर है न घाट।" श्री गुरु अंगद देव जी के पास जब यह वार्ता पहुंची तो जुलाही को बुलाया गया और क्षमा-याचना के लिए कहा गया। भरी संगत के सामने श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को अनेकानेक आशीर्वाद देकर "निथाविआं दी थां, निओटिआं दी ओट, निआसरिआं दा आसरा" कहा।

इन्हीं दिनों भाई गोइंदा गुरु-दर्शन को खडूर साहिब आया। उसने गुरु जी से अपनी पिता-पुरखी भूमि पर नगर बसाने की प्रार्थना की। यद्यपि यह ज़मीन ब्यास दरिया के किनारे थी। दोआबा (जलंधर) का क्षेत्र होने से यहां लाहौर आने-जाने वाले यात्रियों का मार्ग पड़ता था। ऊंचे स्थान पर होने से प्राकृतिक सौंदर्य भी था। भाई गोइंदा की विनती पर श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को यह सेवा सौंपी। श्री गुरु अमरदास जी ने वहां पर नगर बसाया।

३ वैशाख, संवत् १६०९ तद्नुसार २९ मार्च, १५५२ ई को श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को तीसरे गुरु के रूप में गुरगद्दी प्रदान की। श्री गोइंदवाल साहिब नगर तो श्री गुरु अमरदास जी गुरगद्दी पर विराजमान

होने से पहले ही बसा चुके थे, बाद में इन्होंने वहां पर संगत की पानी की सुविधा के लिए बाउली (बावली) का निर्माण करवाया। बाउली १५६४ ई में बनकर तैयार हुई। श्री गुरु अमरदास जी का परिवार तथा अन्य सिक्ख संगत यहां रहने लगी। चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी इसी बाउली की सेवा में लगे हुए श्री गुरु अमरदास जी के संपर्क में आए। बीबी भानी जी से उनका विवाह-कारज संपन्न हुआ। बाउली के निर्माण से *"गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम"* अति समृद्ध नगरी रही है। मुगलों के समय और बाद में कपूरथला व नाभा रियासतों की ओर से प्रदत्त भारी जागीर और आस-पास के गांवों की ज़मीन इस धार्मिक स्थान के पास है।

श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गोइंदवाल साहिब तथा बाउली का निर्माण ही नहीं किया, सिक्ख मत की परंपरा के अनुसार कथा-कीर्तन, नाम-बाणी का प्रवाह और लंगर-पंगत की परंपरा को भी और आगे बढ़ाया। श्री गुरु अमरदास जी ने तो नियम बना दिया-- "पहिले पंगत, पाछै संगत।" गुरु-दर्शन को आने वाले प्रत्येक प्राणी के लिए पहले पंगत में बैठ लंगर-प्रसाद छकना अनिवार्य था और बाद में दरबार में जाकर संगत-दर्शन करने का हुक्म था। जात-पात, ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटा 'सब मानव एक समान' की वृत्ति को बढ़ावा दिया गया। यहां तक कि स्वयं अकबर बादशाह जब गुरु-दर्शन को आया तो उसने भी पहले पंगत में बैठकर लंगर-प्रसाद ग्रहण किया। अनेकों कट्टर वैष्णव साधु, जो भोजन तैयार करने में अत्यंत सुचमन चौंके की पवित्रता, छूआ-छूत में विश्वास रखते थे, गुरु-उपदेश सुनकर कि पवित्रता अंतरात्मा की होनी चाहिए बाहरी नहीं, गुरु-चरणों के कायल हुए। माई सेवा दास जैसे वैष्णव साधु लंगर से प्रसाद छकने लगे; केशो गोपाल पंडित जैसे गुरु-घर की सेवा में लगे।

श्री गुरु अमरदास जी उत्साही सुधारक थे। अब तक समाज में वे कुरीतियां, जो मानव के बीच अड़चन बन स्वस्थ समाज-निर्माण में बाधक थीं, गुरु जी के पावन उपदेशों से दूर हुईं। गुरु साहिब ने समाज-सुधार के अनेक उपकार-कार्य किए।

श्री गुरु नानक साहिब के आगमन के पूर्व काल से ही स्त्री वर्ग की समाज में हीन अवस्था थी। क्रांतिकारी श्री गुरु नानक देव जी ने नारी वर्ग का पक्ष-समर्थन किया। श्री गुरु अमरदास जी ने इसी क्रम में पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा, बाल-विवाह आदि का विरोध किया। गुरु जी ने बताया कि पुरुष की मृत्यु पर स्त्री का जीवित चिता में जलकर सती होना उचित नहीं है। गुरुदेव जी ने उपदेश दिया :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥
सेवनि साई आपणा नित उठि संमालंन्हि ॥

(पन्ना ७८७)

पर्दा-प्रथा के विरोध में जब हरीपुर का राजा हरी चंद रानी समेत गुरु-दर्शन को आया तो घूंघट में लिपटी रानी को गुरु साहिब ने आदेश दिया कि घूंघट खोलकर दरबार में आए। समझाया कि पर्दा गुलामी का प्रतीक है। उस समय समाज में कन्या का जन्म अभिशाप माना जाता था। गुरु साहिब ने इसका भी विरोध किया। कन्या का धन खाने वाले, कन्या को हीन मानने वाले को फटकारा :

ब्रहमण कैली घातु कंञका अणचारी का धानु ॥

फिटक फिटका कोड़ु बदीआ सदा सदा अभिमानु ॥
(पन्ना १४१३)

गुरु साहिब ने विधवा विवाह, पुनर्विवाह और अंतर्जातीय विवाह को मान्यता दी। विवाह के समय जात-पात, गरीब-अमीर के भेदभाव को नव दृष्टि दी। गुरु साहिब ने धर्म प्रचार हेतु २२ मंजीआं (धर्म प्रचार केंद्र) स्थापित कीं और ५२ पीड़े स्त्री वर्ग के लिए कायम किए। २२ मंजीओं में एक मंजी भाई सचन सच को दी। भाई सचन सच का विवाह जाति-विचार से रहित किया गया था। इसी प्रकार गुरु-कृपा से जब प्रेमे नामक व्यक्ति का कुष्ठ रोग ठीक हो गया तो उसका नाम मुरारी रखकर शीहे उप्पल की बेटी मथो के साथ उसका विवाह करवा उसे भी मंजी प्रदान की गई। गुरु साहिब ने अपनी सुपुत्रियों का विवाह भी बिना धन-प्रतिष्ठा, जात-पात के विचार से किया। बड़ी सुपुत्री बीबी दानी जी का विवाह भाई रामा जी से किया, जिनकी आर्थिक स्थिति अति साधारण थी। बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी से किया जो उस समय घुंघणियां बेचा करते थे तथा बाद में श्री गुरु रामदास जी के नाम से प्रतिष्ठित हुए।

गुरु साहिब ने नशा-पान का विरोध किया और स्वस्थ, संतुलित चिंतन की प्रेरणा दी। गुरु साहिब ने अपनी पावन बाणी में थिति, वार, सत, रुति, दिवस, मास, ऋतुएं सभी का संकीर्ण दृष्टि से विचार करने का विरोध किया। उपदेश दिया कि सभी दिन, ऋतुएं, वार, मुहूर्त परमात्मा के बनाए हुए हैं, सभी शुभ हैं, मानव के लिए कल्याणकारी हैं, इनके प्रति वहमों में पड़ना सामाजिक बुराई है। गुरु साहिब ने स्पष्ट बताया :

थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥ (पन्ना ८४३)

उस समय समाज में जन्म और मृत्यु-संस्कारों को लेकर कई प्रकार की कुरीतियां प्रचलित थीं। पिंड, पत्तल, दीप-दान, गौ-दान आदि कई प्रथाएं मृत्यु-काल में प्रचलित थीं। रामकली राग में उच्चरित गुरु साहिब के पड़पोत्र बाबा सुंदर जी की 'सद' शीर्षक से संकलित बाणी में फरमान है कि उनका (गुरु जी का) बिबान, पिंड, पत्तल, दीप-दान केवल प्रभु का नाम-सिमरन मात्र है :

अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ (पन्ना ९२३)

गुरु साहिब ने आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन से सम्बंधित सभी उपदेश अपनी पावन बाणी द्वारा दिए हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अमरदास जी के ८९१ शबद १७ रागों में उच्चरित हैं। चार वारें-- गूजरी, सूही, रामकली और मारू राग में हैं। रामकली राग में अनंदु साहिब और आसा राग में पटी गुरु जी की बाणी है। अनंदु साहिब तो इतनी लोकप्रिय बाणी है कि इसे अमृत संस्कार की बाणियों में समाहित किया गया है। यह बाणी मंगलमय समाप्ति, आनंद की प्राप्ति के प्रतीक रूप में गायन की जाती है। मानव शरीर के नेत्र, कर्ण, रसना, हाथ, पैर इन सभी की सार्थकता केवल और केवल नाम-आराधना, सेवा-कार्य और प्रभु-सेवा में ही मानी गई है। इतना गहन पांडित्य-ज्ञान, दार्शनिक गहनता गुरु जी की बाणी में भरपूर है कि इसी विद्वत ज्ञान और आत्म-तत्ववेत्ता अनुभूतियों के आधार पर 'गुर बिलास पातशाही १०' के रचयिता भाई कुइर सिंघ श्री गुरु नानक देव जी को *"धरम हेत गुर नानक रूपा"* बताते हैं तो श्री गुरु अमरदास जी को "गिआन रूप" बताते हैं। ज्ञान, भक्ति, साधना से संपन्न आपका व्यक्तित्व इतना सुदृढ़ था कि उस समय की विपरीत परिस्थितियों में, कलयुगी घोर अंधड़-

तूफ़ान में भी गुरु जी पर्वत की भांति अडोल रहे। ऐसा भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी रामकली की वार में बताते हैं :

अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु ॥
झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥
जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥
(पन्ना ९६८)

श्री गुरु अमरदास जी का व्यक्तित्व इतना प्रखर प्रभावशाली था कि जहां से गुरु जी गुज़रते वहां का जनसमूह विस्मादित हो देखता ही रह जाता। श्री गुरु रामदास जी पातशाह तुखारी राग में ज़िक्र करते हैं कि श्री गुरु अमरदास जी २२वीं और अंतिम बार जब हरिद्वार की यात्रा पर *"सब लोक उधरण अरथा"* गए तो पहला पड़ाव कुरुक्षेत्र किया। दूसरे पड़ाव पर यमुना नदी पार की। रिवायत के अनुसार यात्रा-कर वसूल किया जाता था नदी पार की यात्रा के लिए, किंतु 'जमजागाती' मसूलिए गुरु-दर्शन कर ऐसे मंत्रमुग्ध हो गए कि कर वसूलना ही भूल गए। चूंकि गुरुदेव का यह उपक्रम लोक-कल्याण के लिए था, यात्रा-कर व्यर्थ का यात्रियों पर बोझ है, यही दर्शाना उद्देश्य था। सारी सिक्ख संगत यमुना पार हुई :

त्रितीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥
सभ मोही देखि दरसनु गुर संत किनै आढु न दामु लइआ ॥
आढु दामु किछु पइआ न बोलक जागातीआ मोहण मुंदणि पई ॥ . .
नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ . .
मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥ . .
तीरथ उदमु सतिगुरू कीआ सभ लोक उधरण अरथा ॥ (पन्ना ११६)

हरिद्वार में कनखल के सती-घाट पर गुरु-स्मृति में सुंदर गुरुद्वारा सुशोभित है। कहते हैं कि इसके सोने के बाईस कलश बाईस बार की यात्रा के प्रतीक हैं। सोने के कलश महाराजा पटियाला, नाभा, जींद व सिंधी संगत के प्यार का परिणाम हैं। सिंधी प्यार से सेवा करते हैं। काफी भूमि गुरुद्वारे के पास है, जिसका पट्टा भाई दरगाह सिंघ के नाम है, जिन्हें दशम पिता ने काशी (बनारस), हरिद्वार पुरातन सांस्कृतिक ग्रंथों के अध्ययन हेतु भेजा था। वे यहां रहकर सेवा करते रहे।

श्री गुरु अमरदास जी में विनम्रता, सहनशीलता, सुहृदयता, जीवों के प्रति दया-भाव, सहानुभूति आदि दिव्य गुण मौजूद थे। ऐसे महान गुरुदेव को इसी लिए तो भट्ट कल सहार जी ने सत्य सूरमा, शीलवान, सहज स्वभाव, निरवैर, धैर्य की श्वेत ध्वज हाथ में लेकर जनमानस को बैकुंठ मार्ग दिखाने वाला बताया है :

सति सूरउ सीलि बलवंतु सत भाइ संगति सघन गरूअ मति निरवैरि लीणा ॥
जिसु धीरजु धुरि धवलु धुजा सेति बैकुंठ बीणा ॥

भट्ट भिखा जी के अनुसार आकाश के बादलों की बूंदें, बसंत के फूल, ज्ञान की गहनता की तो संभवत: कोई गणना कर भी ले किंतु श्री गुरु अमरदास जी के गुणों की गणना नहीं हो सकती :

भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ (पन्ना १३९६)

श्री गुरु अमरदास जी : जीवन तथा विचारधारा

-डॉ. परमजीत कौर*

विनम्रता के पुंज, सेवा की मूर्ति, स्त्री की आज़ादी के समर्थक, कोमल-हृदय श्री गुरु अमरदास जी का प्रकाश ८ ज्येष्ठ, संवत् १५३६ तद्नुसार ५ मई, १४७९ ई को भाई तेजभान जी के गृह गांव बासरके, ज़िला श्री अमृतसर में हुआ। भाई तेजभान जी खेती भी करते थे तथा व्यापार भी। लगभग २४ वर्ष की आयु में आप जी का विवाह क्षत्रियों के बहिल घराने में हुआ। आपके दो सुपुत्र--बाबा मोहन जी तथा बाबा मोहरी जी और दो सुपुत्रियां-- बीबी भानी जी तथा बीबी दानी जी थीं। आपकी तीर्थों पर जाने में रुचि थी। हरिद्वार स्नान करने गये तथा लगातार २०-२२ वर्ष तक प्रतिवर्ष नियम से जाते रहे। संवत् १५९७ में हरिद्वार से लौटते समय श्री गुरु अमरदास जी की रास्ते में एक वैष्णव साधु से भेंट हुयी। वह साधु गांव बासरके तक साथ ही आया। जब उसको यह ज्ञात हुआ कि अभी तक श्री गुरु अमरदास जी ने 'गुरु' धारण नहीं किया तो उसको 'निगुरे' (गुरु-रहित) के साथ संगत करने का बहुत अफसोस हुआ। अपना यह विचार उसने श्री गुरु अमरदास जी के समक्ष प्रकट भी कर दिया। उस साधु की बातों से आपका हृदय बहुत आहत हुआ।

एक दिन संयोग से आपने श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री बीबी अमरो जी (जिनका विवाह श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे के साथ हुआ था) के मुख से श्री गुरु नानक देव जी की बाणी बहुत ही मधुर स्वर में सुनी। गुरु-बाणी सुनकर वे इतने प्रभावित हुए कि खडूर साहिब आकर श्री गुरु अंगद देव जी की शरण ली तथा सेवा में लग गए। उस समय आप जी की आयु ६२ वर्ष थी। आप प्रतिदिन नियमानुसार आधी रात में उठकर गागर लेकर खडूर साहिब से ब्यास जाकर, स्वयं स्नान करके अपने गुरु पातशाह के लिए पानी की गागर भरकर लाते तथा अमृत वेला में उन्हें स्नान करवाते। श्री गुरु अमरदास जी ने लंगर के बर्तन मांजना, ईंधन लाना, पानी ढोना, गर्मी की ऋतु में पंखा झलना, गुरु-घर आई हुई संगत की अन्य प्रकार से सेवा करना अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। उनके हाथ सेवा में रहते तथा चित्त परमात्मा के सिमरन में लगा रहता। गर्मी, सर्दी, बरसात किसी भी समय, किसी भी ऋतु में उनके इस नियम में अंतर न पड़ता।

सिक्ख इतिहास में एक घटना का उल्लेख है कि एक दिन अंधेरी रात में जब वर्षा हो रही थी, तब पानी से भरी गागर लाते हुए खडूर साहिब के एक बुनकर की खड्डी में ठोकर खाकर गिर पड़े। गिरने की आवाज़ सुनकर जब बुनकर ने आवाज़ का कारण अपनी पत्नी से पूछा तो उसने कहा कि "वही होगा अमरू निथांवां, जिसका कोई ठिकाना नहीं है।" श्री गुरु अमरदास जी ने बुनकर की पत्नी के इन शब्दों का बुरा नहीं मनाया और खुद को संभालते हुए आगे बढ़ गए।

कठोर मेहनत, शीतल स्वभाव, अत्यधिक विनम्रता, गुरु के वचनों में असीम विश्वास, लोगों के उपहास तथा उलाहनों के प्रति लापरवाही श्री गुरु अमरदास जी के इन गुणों के कारण श्री गुरु

*६२०, गली नं २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा); फोन : ९८१२३-५८१८६

अंगद देव जी को विश्वास हो गया कि श्री गुरु नानक देव जी के मिशन के उत्तरदायित्व को श्री गुरु अमरदास जी ही संभाल सकते हैं। ३ वैशाख, संवत् १६०९ तद्नुसार २९ मार्च, १५५२ ई को सारी संगत के समक्ष श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को गुरगद्दी प्रदान की तथा वचन किया कि श्री गुरु अमरदास जी ठिकानों से रहित लोगों का ठिकाना हैं तथा आश्रय-रहित जनों का आश्रय हैं।

श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्ख धर्म का प्रचार-केंद्र गोइंदवाल साहिब को बनाया। श्री गुरु अंगद देव जी के पद-चिन्हों पर चलते हुए गरीबों तथा निम्न जाति के समझे जाने वालों पर हो रहे अत्याचार को दूर करने के लिए तथा भाईचारे की भावना को और भी मज़बूती प्रदान करने के लिए आप जी ने आदेश दिया कि दीवान में केवल उन्हीं लोगों को बैठने की आज्ञा दी जायेगी जो लंगर में सबके साथ एक पंगत में बैठकर परशादा छकेंगे। 'पहले पंगत फिर संगत' का नियम बनाकर 'संगत तथा पंगत' की गहरी सांझ पैदा कर दी। जब कुछ जाति-अभिमानियों ने सांझे कुओं से पानी लेने वाले गरीबों को तंग करना शुरू कर दिया तो गुरु जी ने मानवीय एकता तथा भाईचारे के सिद्धांत को वास्तविक रूप देने के लिए गोइंदवाल साहिब में बाउली बनवानी आरंभ की, जहां से पानी भरने तथा स्नान करने की सबको छूट थी।

श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्ख धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए २२ मंजियों (उप-प्रचार केंद्र) की स्थापना कर २२ बुद्धिमान सिक्ख प्रचारक नियुक्त किए। गुरु साहिब ने स्त्री जाति के अधिकारों की स्वतंत्रता के लिए पर्दा-प्रथा को समाप्त किया। गुरु जी के दरबार में स्त्रियों को पर्दा करके (घूंघट ओढ़कर) आने की मनाही थी। स्त्री भी पुरुष के समान संगत में आज़ादी से आकर सेवा आदि कर सकती थी। यही नहीं, गुरु जी ने सती-प्रथा के विरुद्ध भी आवाज़ उठायी। उस समय पति की मृत्यु होने पर स्त्री की मर्जी के खिलाफ़ उसको जबरदस्ती पति के साथ चिता में जलने के लिए मज़बूर किया जाता था। गुरु जी ने उपदेश देकर समझाया कि वे स्त्रियां सती नहीं हैं जो पति की देह के साथ जलकर मर जाती हैं वरन् सती उन्हें समझना चाहिए जो पति-परमेश्वर के वियोग की अग्नि में मर जायें तथा शील-संतोष का जीवन निर्वाह करें :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥
सेवनि साई आपणा नित उठि संमालंन्हि ॥

(पन्ना ७८७)

श्री गुरु अमरदास जी ने अग्रलिखित १७ रागों में बाणी के ८९१ शबदों का उच्चारण किया :- सिरी राग, माझ, गउड़ी, आसा, गूजरी, वडहंस, सोरठि, धनासरी, सूही, बिलावल, रामकली, मारू, भैरउ, बसंत, सारंग, मलार तथा प्रभाती।

गुरु जी की बाणी में दिए गए उपदेश नित्यप्रति के जीवन के बहुत निकट हैं तथा गुरसिक्ख की कई आशंकाओं का समाधान करते हुए गुरमति के अनुसार जीवन-यापन करने के लिए प्रेरित करते हैं। श्री गुरु अमरदास जी अपनी बाणी द्वारा बार-बार यह दृढ़ करवाते हैं कि गुरु की शरण के बिना प्रभु का प्रेम प्राप्त नहीं होता और न ही उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त की जा सकती है। गुरु की मति के अनुसार जीवन-यापन किए बिना मन पवित्र नहीं होता और न ही सहज अवस्था बनती है :

बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ ॥
ऐसा सतगुरु लोड़ि लहु जिदू पाईऐ सचु सोइ ॥
(पन्ना ३०)

जिस जीव के हृदय में गुरबाणी बस जाती है उसका गुरबाणी के साथ प्रेम हो जाता है तथा वह नाम-प्राप्ति के मार्ग पर चल पड़ता है :

इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥ (पन्ना ७९७)

गुरु साहिब दृढ़ करवा रहे हैं कि गुरमति धारण किए बिना जब शरीर कर्म करता है, पाठ करता है, जाप करता है तो मन प्राय: भटकता रहता है, परमात्मा के साथ नहीं जुड़ता। इस तरह किए गए शारीरिक कर्म, जप-तप आदि कई बार मन में अहंकार पैदा कर देते हैं। हउमै (अहंकार) का परमात्मा के नाम के साथ विरोध है। ये दोनों एक साथ हृदय में नहीं रह सकते। गुरु जी समझाते हैं :

जपु तपु संजमु होरु कोई नाही ॥
जब लगु गुर का सबदु न कमाही ॥
(पन्ना १०६०)

मन को वश में किए बिना आत्मिक जीवन में कोई लाभ नहीं होता। मन का आश्रय लेकर ही काम, क्रोध, लोभ आदि विकार गति प्राप्त करते हैं। ये विकार मनुष्य को असत्य के मार्ग पर ले जाते हैं। मन सदा चिंताग्रस्त रहता है, दुविधा में पड़ा रहता है। दुविधा में पड़े हुए अपवित्र मन से सिमरन नहीं किया जा सकता :

मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ॥
(पन्ना ३९)

सचियार प्रभु से मिलने के लिए सत्य के मार्ग पर चलना ज़रूरी है। गुरु साहिब का कथन है :

ऐथै साचे सु आगै साचे ॥
मनु सचा सचै सबदि राचे ॥
सचा सेवहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥
(पन्ना ११६)

'मैं कुछ हूं' इस भाव को त्यागकर, गरीबी (नम्रता) वाला स्वभाव बनाकर, आशाओं तथा मन की दौड़ को मिटाकर, गुरु की शरण में आकर, प्रभु की रज़ा में रहने से ही प्रभु-दर पर सत्कार मिलता है :

सतिगुर अगै ढहि पउ सभु किछु जाणै जाणु ॥
आसा मनसा जलाइ तू होइ रहु मिहमाणु ॥
सतिगुर कै भाणै भी चलहि ता दरगह पावहि माणु ॥ (पन्ना ६४६)

जो परमात्मा की रज़ा को सहज-भाव से स्वीकार नहीं करते उनको परमात्मा दूर प्रतीत होता है :

नानक हुकमु न मंनई ता घर ही अंदरि दूरि ॥
(पन्ना ५१०)

सच्ची भक्ति वह है जिसमें परमात्मा की याद सदा बनी रहे :

इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ ॥
(पन्ना ३५)

श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी बाणी में स्थान-स्थान पर समझाया है कि गुरसिक्ख के लिए प्रभु का सिमरन ही संध्या है, भक्ति है। तंत्र-मंत्र आदि पाखंडों के लिए गुरु के सिक्ख के जीवन में कोई स्थान नहीं है :

एहा संधिआ परवाणु है जितु हरि प्रभु मेरा चिति आवै ॥ (पन्ना ५५३)

गुरु साहिब के अनुसार मनुष्य के लिए परमात्मा का नाम ही असली खज़ाना है जो उसके साथ जाता है अर्थात् नाम से ही आत्मिक उन्नति होती है, अंदर गुण पैदा होते हैं तथा आचरण ऊंचा होता है। मनुष्य जैसे कर्म करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। अन्य कोई धन या खज़ाना मनुष्य की इस तरह सहायता

नहीं कर सकता चाहे उसके पास लाखों-करोड़ों की जायदाद क्यों न हो :

इसु जुग महि नामु निधानु है नामो नालि चलै ॥
एहु अखुटु कदे न निखुटई खाइ खरचिउ पलै ॥
हरि जन नेड़ि न आवई जमकंकर जमकलै ॥
से साह सचे वणजारिआ जिन हरि धनु पलै ॥
(पन्ना १०९१)

प्रभु-मिलाप के लिए मन में वैराग्य होना ज़रूरी है। प्रभु के नाम-सिमरन से प्रभु का निर्मल भय पैदा होता है तथा मन माया से उपराम हो जाता है :

जां भउ पाए आपणा बैरागु उपजै मनि आइ ॥
बैरागै ते हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥
(पन्ना ४९०)

इसलिए स्वार्थवश झूठी मान-प्रतिष्ठा आदि की प्राप्ति के लिए, दुनिया भर की प्रशंसा पाने के लिए संसार के लोगों की खुशामद करनी छोड़कर परमात्मा का गुण-कीर्तन तथा नाम-सिमरन करना चाहिए। गुरु जी सचेत कर रहे हैं :

दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी ॥
लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई ॥
वाहु मेरे साहिबा वाहु ॥
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु ॥
(पन्ना ७५५)

गुरु साहिब बताते हैं कि गुरु की शरण में आकर जो जीव प्रभु के गुण-कीर्तन में मन लगाता है, उसके पिछले किए गए सारे पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। सर्वकला समर्थ प्रभु उसे अपने चरणों में स्थान दे देता है :

सभे गुनह बखसाइ लइओनु मेले मेलणहारि ॥
नानक आखणु आखीऐ जे सुणि धरे पिआरु ॥
(पन्ना ४२८)

श्री गुरु अमरदास जी के मत में सेवा सिमरन में सहायक है। गुरु साहिब ने स्वयं कई वर्ष श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में सेवा करके एक मिसाल कायम की थी। सेवा करने से मन निर्मल हो जाता है, अहंकार दूर हो जाता है तथा सेवक विनम्रता, दया, संतोष आदि गुणों को धारण कर लेता है :

सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर ॥
(पन्ना ६९)

गुरु साहिब ने अंतिम श्वास तक सेवा करने की ताकीद की है :

जिचरु अंदरि सासु तिचरु सेवा कीचै जाइ मिलीऐ राम मुरारी ॥ (पन्ना ९११)

गुरु जी सेवा करने का तरीका बता रहे हैं कि शरीर तथा मन गुरु को अर्पण करके सावधान होकर सेवा करनी चाहिए। सतिगुरु के सम्मुख हुआ गुरमुख अपना आपा-भाव मिटाता है तथा सारी सृष्टि का राज्य ले लेता है अर्थात् सारे संसार से प्रशंसा प्राप्त कर लेता है अर्थात् परमात्मा के निकट पहुंचकर वो आत्मिक रूप से सर्वोच्च हो जाता है :

मनु तनु आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ ॥
इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु स्रिसटि का लेइ ॥ (पन्ना ६४७)

मनुष्य कई तरह के भ्रमों में पड़कर दुविधा का शिकार बना रहता है। गुरु साहिब गुरसिक्ख के जीवन-ढंग के बारे में समझाते हुए कहते हैं कि भ्रम का जाल काटने के लिए गुरु के दर पर जाकर परमात्मा को याद करो। परमात्मा सदा अंग-संग है। भ्रम का पर्दा हटाकर हृदय में परमात्मा की ज्योति को टिकाओ। हरि का नाम अमर करने वाला है। यह दारू (नुक्ता) प्रयोग में लाओ। सतिगुरु का भाणा (हुक्म) मानना सीखो तथा प्रेम रूपी रहित धारण करो। इस तरह लोक तथा परलोक दोनों सुधर जायेंगे :

सतिगुरू फुरमाइआ कारी एह करेहु ॥
गुरू दुआरै होइ कै साहिबु संमालेहु ॥
साहिबु सदा हजूरि है भरमै के छउड़ कटि कै अंतरि जोति धरेहु ॥
हरि का नामु अंम्रितु है दारू एहु लाएहु ॥
सतिगुर का भाणा चिति रखहु संजमु सचा नेहु ॥
नानक ऐथै सुखै अंदरि रखसी अगै हरि सिउ केल करेहु ॥ *(पन्ना ५३४)*

गुरमति मार्ग पर चलने के लिए शराब पीनी वर्जित है। इसको पीने से मन में विकार पैदा होते हैं, अपने-पराये की पहचान नहीं रहती, बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तथा मनुष्य परमात्मा को भूल जाता है :

जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥
(पन्ना ५५४)

गुरु साहिब समझाते हैं कि मनुष्य को नाम का नशा करना चाहिए। यह उसी को प्राप्त होता है जिस पर प्रभु की कृपा होती है :

नानक नदरी सचु मदु पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥
सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ ॥
(पन्ना ५५४)

मनुष्य यह भूल गया है कि वह परमात्मा का अंश है। गुरु जी समझा रहे हैं कि अपने मूल (परमात्मा) से सांझ बनाओ। वह सदा तुम्हारे अंग संग है :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
(पन्ना ४४१)

सदा यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभु! कृपा करो। जितना समय मैं जीवित हूं मैं आपकी सिफति-सालाह करता रहूं, सदैव आपके साथ जुड़ा रहूं :

हरि जीउ तुधु नो सदा सालाही पिआरे जिचरु घट अंतरि है सासा ॥
इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा ॥ *(पन्ना ६०१)*

भट्ट साहिबान श्री गुरु अमरदास जी की उपमा का गायन करते हुए फरमान कर रहे हैं कि श्री गुरु अमरदास जी नारायण-रूप हैं। निरंकार ने श्री गुरु अमरदास जी का आकार-रूप धारण करके संसार में जन्म लिया है :

आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥
निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥
(पन्ना १३९५)

जिन्होंने श्री गुरु अमरदास जी की सेवा की है उनके सारे दुख दूर हो गये हैं :

गुरु अमरदासु जिन्ह सेविअउ तिन्ह दुखु दरिद्रु परहरि परै ॥ *(पन्ना १३९५)*

अंत में भट्ट भल जी के शब्दों में कहा जा सकता है कि बादलों के कण, धरती की वनस्पति, बसंत के फूल गिने नहीं जा सकते। सूर्य तथा चंद्रमा की किरणें, समुद्र का उदर, गंगा की तरंगें, इन सबका अंत कौन पा सकता है? देवताओं के समान पूर्ण समाधि लगाकर तथा सतिगुरु की कृपा से प्राप्त ज्ञान द्वारा उपर्युक्त पदार्थों का चाहे कोई वर्णन कर सके मगर हे श्री गुरु अमरदास जी! आपके गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता। आप जैसे आप स्वयं ही हैं :

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥
रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥
रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्ह उनह जुो गावै ॥
भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ *(पन्ना १३९६)*

श्री गुरु अमरदास जी

-डॉ. गुरमेल सिंघ*

श्री गुरु अमरदास जी के बारे में गुरु-घर के रबाबी सिक्खों भाई सत्ता जी, भाई बलवंड जी ने 'परबतु मेराणु' कहकर उनकी महान शख़्सियत की ओर संकेत कर दिया है कि श्री गुरु अमरदास जी विषय-विकारों तथा सांसारिक मोह-माया की अंधड़ में डगमगाने वाले नहीं बल्कि मेराण पर्वत की तरह अडिग हैं।[१] ऐसे सूझवान महापुरुष के जीवन-कार्य को दर्शाने के लिए हम निम्नलिखित अनुसार वर्गीकरण करेंगे तथा अपने विषय की सीमा का घेरा ज्यादातर गुरु जी की दार्शनिक विचारधारा पर ही केंद्रित करेंगे :-

१. जीवन/शख़्सियत/कार्य
२. बाणी २.१. बाणी-वर्गीकरण
३. विचारधारा ३.१ सैद्धांतिक पक्ष ३.२ कला पक्ष
४. सार

१. जीवन/शख़्सियत/कार्य :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अमरदास जी का ज़िक्र लगभग २६ बार अलग-अलग प्रसंगों/अर्थों तथा व्याकरणिक (अमरदास/सि/सु आदि) रूपों में हुआ है। अर्थ की दृष्टि से बाणी में गुरु जी का ज़िक्र ज्यादातर 'गुरु-शख़्सियत' तथा 'गुरु-ज्योति' के रूप में हुआ है। लगभग चार स्थानों[२] पर आप जी की शख़्सियत के बारे में विशेष जानकारी मिलती है। इसके अलावा ऐतिहासिक संकेत भी मिलते हैं।[३]

भाई गुरदास जी की वारों में जहां गुरु साहिब की उच्च आत्मिक शख़्सियत के दर्शन होते हैं, वहां ऐतिहासिक दृष्टिकोण से गुरु जी के गोइंदवाल साहिब बसाने संबंधी दासू आदि के विरोध के बारे में संकेत भी मिलते हैं।[४] श्री गुरु अमरदास जी के सिक्खों के (नाम/स्थान/गोत्र आदि) बारे में भी पता चलता है।[५]

१८वीं या १९वीं शताब्दी के स्रोतों (विशेषतः गुरमुखी) में गुरु साहिब के जन्म, वंश, ज्योति-जोत, कार्यों आदि के बारे में थोड़ी-बहुत विभिन्न जानकारी मिलती है। इसी तरह आधुनिक विद्वानों में भी राय-भिन्नता है। यहां अकेले-अकेले स्रोत या राय-भिन्नता को विचारना तो संभव नहीं परंतु गुरबाणी/भाई गुरदास जी/प्रारंभिक स्रोतों/आधुनिक विद्वानों आदि से कुल मिलाकर गुरु साहिब की शख़्सियत या जीवन-अवधि के बारे में जो जानकारी स्पष्ट होती है, उसको (अति संक्षिप्त रूप में) ऐसे दर्शाया जा सकता है।

श्री गुरु अमरदास जी का जन्म ५ मई, १४७९ ई को गांव बासरके, ज़िला श्री अमृतसर में भाई तेजभान जी तथा माता सुलक्खणी जी के घर हुआ। १५०२ ई में आप जी का विवाह माता राम कौर जी उर्फ़ माता मनसा देवी जी के साथ हुआ, जिनके उदर से दो सुपुत्रियों-- बीबी दानी जी (सुपत्नी भाई रामा जी), बीबी भानी जी (सुपत्नी श्री गुरु रामदास जी) तथा दो सुपुत्र--बाबा मोहरी जी व बाबा मोहन जी पैदा हुए।

अनन्य भक्ति, सेवा आदि से खुश होकर १५५२ ई में श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा आप जी को गुरिआई की महान जिम्मेवारी/सेवा सौंपी गई। आप जी ने सिक्ख धर्म के विकास के लिए अनेकों वर्णनीय काम किए, जिनमें बाईस मंजियों (प्रचार-केंद्र) की स्थापना, बाउली का निर्माण, सती आदि प्रथाएं बंद करवाना, संगत-पंगत

*श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२

संस्थाओं को मज़बूत करना इत्यादि शामिल हैं।

गुरु जी का व्यक्तित्व अति गंभीर, दार्शनिक होने के साथ-साथ प्यार-भरा, नम्र, मीठा तथा बुजुर्गी वाला था।

२. *बाणी :* श्री गुरु अमरदास जी की बाणी १७ रागों में ८९१ शबद हैं।

२.१. बाणी वर्गीकरण :- श्री गुरु अमरदास जी की बाणी का वर्गीकरण कई आधारों/विधियों द्वारा किया जा सकता है, जैसे :

२.१.१ : रागबद्ध बाणी तथा राग रहित बाणी (भक्त कबीर जी, भक्त शेख़ फरीद जी के सलोकों तथा 'सलोक वारां ते वधीक' वाली)

२.१.२ : लंबे आकार वाली बाणियां (अनंदु, पटी तथा वारें), छोटे आकार वाली बाणियां (अलाहणीआं, सतवारा) तथा फुटकल (शबद, सलोक, पदे आदि)

२.१.३ : वर्णनात्मक (जैसे पटी), कालमान (जैसे सतवारा) आदि आधारित

२.१.४ : विषय पक्ष से (जैसे 'अनंदु' उच्च आत्मिक अवस्था वाली बाणी है, जबकि 'वार' सामाजिक प्रकृति के ज्यादा निकट है) दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक आदि।

इस तरह कई तरीकों से, कई आधार अपनाकर गुरु जी की बाणी का वर्गीकरण किया जा सकता है।

३) विचारधारा :- ३.१ : सैद्धांतिक पक्ष : समूची 'गुरमति-धारा' की प्रकृति क्या है?[६] यह एक जटिल सवाल है, क्योंकि गुरमति विचारधारा (जिसका केंद्र गुरबाणी है) ने मात्र आध्यात्मिक प्रसंगों की बात ही नहीं की बल्कि जीवन-प्रकृति के समुच्चय को शामिल किया है। समुच्चय को सामने रखकर जीवन की बुनियादी कीमतों तथा धरातलों को गुरबाणी ने 'नाम', 'हुक्म' आदि के दृष्टिकोण से व्याख्यायित किया है। गुरमति-विचारधारा की इसी (सैद्धांतिक) श्रृंखला में श्री गुरु अमरदास जी ने भी उन प्रारंभिक 'मामलों' को छुआ है जिनकी बात समूची गुरमति विचारधारा ने की है। ये 'मामले' जहां उनको विरासत (श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी) के रूप में मिलते हैं, वहीं इनका उल्लेख गुरु साहिब के अपने निजत्व के मौलिक अनुभव पर आधारित है, किसी अन्य पूर्ववर्ती प्रणाली या चिंतन का अनुकरण या रूपांतरण नहीं।[७] इस विलक्षण, मौलिक अनुभव का प्रकटावा गुरु साहिब काव्य-माध्यम के द्वारा समकालीन या रूढ़ हो चुकी धाराओं के मुहावरों द्वारा करते हैं। मुहावरे केवल समकालीन ही नहीं बल्कि सदियों से लोक-मानस में इनकी जगह है।

मानव-चिंतन के सामने बेअंत मामलों में से तीन प्रारंभिक मामले हैं, जिनको दर्शन, पराभौतिक शीर्षक तले विचारा जा सकता है। इन प्रारंभिक मामलों को गुरु साहिब ने अपने मौलिक अनुभव द्वारा गुरबाणी के माध्यम से प्रकट किया है परंतु ये प्रसंग बाणी में किसी तार्किक श्रृंखला में नहीं आए, बल्कि ये स्वाभाविक रूप से अलग-अलग प्रसंगों में उपलब्ध होते हैं। यहां इन प्रसंगों का एक तार्किक श्रृंखला में योजनाबद्ध ढंग से संक्षिप्त विश्लेषण किया जाता है।

३.१.१ परम सत्य : अंतिम सत्य क्या है? यह मानवीय चिंतन का सबसे प्रारंभिक सवाल है। दुनिया की धार्मिक परंपराएं अपने-अपने सामाजिक, भौगोलिक, लोकयानिक आधारों पर अंतिम सत्य के लिए रब, यहोवा, राम, वाहिगुरु आदि नाम देती हैं। कई दार्शनिक, धार्मिक प्रणालियां (बुद्ध, जैन आदि) ने ऐसे अस्तित्व से स्पष्ट इंकार भी किया है। गुरमति-दर्शन का समूचा निर्माण, परम सत्ता के अस्तित्व के प्रति अति दर्जे की निष्ठा से स्थापित हुए भावात्मक संबंधों तथा चिंतन के गहर-गंभीर प्रबंधों में से स्थापित हुआ है। दूसरे शब्दों में, गुरमति का परम सत्य जहां भावात्मक

संबंधों में दयालु, मेहरबान, माता-पिता आदि है, वहीं पराभौतिक पक्ष से अगम्य, अगोचर, अटल, गहरा तथा हर पक्ष से बेअंत है। समूचा विस्तार उस एक (प्रभु) का ही प्रकटावा है तथा सदैवता का गुण केवल उसी का है। भावात्मक संबंधों के मध्य परम सत्य जब जनता के अंग-संग तथा प्रकटावे रूप में प्रत्यक्ष है तो धर्म की तकनीकी भाषा में वो सगुण है। इसके विपरीत जब अगम-अगोचर सदैवता बेअंत-बेअंत समय से, दूर से दूर, मानवीय सोच से दूर है तो निर्गुण है। इस तरह श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में परम सत्य का चार प्रकार वाला स्वरूप निश्चित होता है :

(क) निर्गुण
(ख) सगुण
(ग) एक
(घ) सदीवी

चाहे 'एक' तथा 'सदीवी' उसके अस्तित्व के लक्षण हैं परंतु व्यापक अर्थों में ये 'स्वरूप' के तौर पर ही सामने आते हैं। गुरु साहिब की बाणी में इस बात का बार-बार उल्लेख मिलता है।

(क) निर्गुण का शाब्दिक अर्थ-- 'गुण-रहित' या बिना गुणों के परंतु तकनीकी भाव में इसका अर्थ है-- 'गुण-अतीत' या 'गुणों से बाहर।' रचना करने से पहले आकार-रहित 'निरंकार' जब अकेला (एक) था तो निर्गुण भी था :

आपणा आपु उपाइओनु तदहु होरु न कोई ॥
मता मसूरति आपि करे जो करे सु होई ॥
तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥
तदहु आपे आपि निरंकारु है ना ओपति होई ॥
(पन्ना ५०९)

'गुप्त' से 'प्रकट' या जब वो 'निर्गुण' से 'सगुण' हुआ तो उसका वास्तविक स्वरूप (निर्गुण) परिवर्तित नहीं होता, बल्कि 'जोति' रूप होकर वह हर जगह बसने लग जाता है :

-गुपतु परगटु वरतै सभ थाई जोती जोति मिलावणिआ ॥ *(पन्ना १२०)*
-सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ ॥ *(पन्ना ६६४)*

(ख) 'सगुण' का अर्थ है-- सर्वगुण-संपन्न। निर्गुण जब सगुण स्वरूप में दृष्टिमान होता है तो इस घटनाक्रम की विधि 'हुक्म' है। दूसरे शब्दों में निर्गुण अपने किसी अगम्य हुक्म के कारण बेअंत पसारों में गुप्त होता है :

-हुकमे ही सभ साजीअनु रविआ सभ वणि त्रिणि ॥ *(पन्ना ९४८)*
-घटि घटि आपे हुकमि वसै हुकमे करे बीचारु ॥
(पन्ना ३७)

जब सगुण स्वरूप में 'परम सत्य' जीवों की भावनाओं में निरूपित होता है तो यहां वो बख्शिशें करने वाला, रहीम, मेहरबान आदि स्वरूप ,में सामने आता है :

सभ नदरी अंदरि रखदा जेती सिसटि सभ कीती ॥ *(पन्ना ९५१)*

(ग) एक-- जब 'परम सत्ता' को 'एक' कहा जाता है तो इसका अर्थ है कि जो कुछ भी दृश्यमान/अदृश्यमान है, सब 'एक' का ही प्रकट रूप है। श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार 'निर्गुण' तथा 'सगुण' का द्वैत नहीं है। रचना के अस्तित्व से पहले वाला 'निर्गुण' ही अपना वेष बदलकर 'सगुण' हुआ है। यहां दूसरे भाव या दुयी (द्विष) का अस्तित्व नहीं। श्री गुरु अमरदास जी ने समाज तथा प्रकृति में से प्रतीक लेकर परम सत्य के एकत्व स्वरूप को इस प्रकार दर्शाया है :

आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु ॥
आपे सागरु आपे बोहिथा आपे ही खेवाटु ॥
(पन्ना २७६)

(घ) सदीवी-- जो पैदा हुआ है उसने नाश हो जाना है परंतु सदैवता उस 'एक' की ही बनी रहेगी। दूसरे शब्दों में, 'निर्गुण' ने जो 'सगुण' का पसारा किया है, यह अल्प समय के लिए है,

सदैवता रूप में उसकी ही हस्ती कायम रहेगी। गुरु जी ने बाणी में परमात्मा की सदैवता का संकेत करते हुए कई शब्द 'सदा', 'सच', 'अमर', 'जुग-जुग', 'अकाल', 'अचुत' आदि प्रयोग किए हैं :

सो पिरु साचा सद ही साचा ना ओहु मरै न जाए ॥ *(पन्ना ५८३)*

३.१.२ सृष्टि : जो पैदा की गई है, सृजित की गई है, वो सृष्टि है। गुरमति के अनुसार 'अकाल' की 'कालगत' स्थिति, 'निर्गुण' का 'सगुण' स्वरूप, गुप्त का प्रकट होना यह सृष्टि है। सृष्टि-रचना के बारे में दार्शनिक स्तर पर उठाये जाते लगभग प्रत्येक प्रारंभिक सवाल का जवाब अपनी तरह से श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में से मिल जाता है। सृष्टि-रचना के बाबत आम सवाल इसका रचना-काल, क्रियाएं, इसका स्वरूप, विधि (रचना-प्रक्रिया), सीमा आदि हैं। भारतीय परंपरा में सृष्टि-रचना के उल्लेख से 'माया', 'युग' आदि संकल्पों की चर्चा भी की जाती है। श्री गुरु अमरदास जी ने इन संकल्पों (खासकर माया) को भी प्राचीन मुहावरे तथा शब्दावली द्वारा गुरमति दृष्टिकोण से व्याख्यायित किया है।

गुरु साहिब के अनुसार सृष्टि-रचना अनादी नहीं नादी है अर्थात् रची गई है तथा इसकी रचना-प्रक्रिया (विधि) दैवी-हुक्म का खेल है :

-निरंकारि अकारु उपाइआ ॥ *(पन्ना १०६६)*

-हुकमे ही सभ जगतु उपाइआ ॥ *(पन्ना १०५५)*

सृष्टि-रचना से पहले समय निरोल सुन्न अर्थात् चुप का समय था। इस 'धुंधूकारे' के समय (जब समय नहीं था) वह केवल खुद (प्रभु) ही था। उस समय को बयान कर सकना मानव-चेतना के वश में नहीं। उस वक्त जो उसको अच्छा लग रहा था, बस वही था :

जिउ तिसु भावै तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ *(पन्ना ५०९)*

'सुन्न-स्वरूप' में जब 'हुक्म' का खेल घटित होता है तो जीवन/आकारों के लाखों दरिया बहने लगते हैं। इस असगाह प्रवाह की गिनती गिनने में नहीं आती :

हुकमी स्रिसटि साजीअनु बहु भिति संसारा ॥
तेरा हुकमु न जापी केतड़ा सचे अलख अपारा ॥ *(पन्ना ७८६)*

सृष्टि-रचना के बाद प्रभु खुद उसमें निवास करने लगा :

आपे स्रिसटि साजीअनु आपि गुपतु रखेसा ॥ *(पन्ना ९५५)*

जगत-प्रपंच की प्रकृति से जुड़ा अहम सवाल इस पसारे के स्वरूप के बारे में है। क्या यह रचना झूठ, धोखा या माया है या इसका कोई वास्तविक अस्तित्व है? भारतीय परंपरा (शंकर के अद्वैतवाद) ने इस पसारे को 'माया' कहा है, जिसका तात्पर्य है कि इस सृष्टि का असल में कोई अस्तित्व नहीं; यह धोखा या भ्रम है। श्री गुरु अमरदास जी ने माया जगत-प्रपंच के संदर्भ में नहीं ली। गुरु जी के अनुसार जगत 'माया' नहीं बल्कि इस जगत-प्रपंच का वह मोह है, जो जीव को अपने मूल से बिछोड़ देता है। इस तरह माया जीव तथा मूल के बिछोड़े का एक कारण है :

एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ *(पन्ना ९२१)*

इसी तरह जगत-पसारा माया नहीं, बल्कि तीन गुणों में विचरने वाले जीव की 'वृत्ति' (दृष्टिकोण) ही माया है।[८] जगत-पसारे का तो वास्तविक अस्तित्व है :

सो प्रभु साचा सद ही साचा साचा सभु आकारा ॥ *(पन्ना ११३१)*

वास्तव में इस बेअंत कौतुकों वाले असगाह पसारे की (प्रत्येक पक्ष से) कीमत मनुष्य सीमित समझ होने के कारण जान नहीं सकता। इसकी असल हकीकत तो वही जानता है, जो किरत का

कारण है :
करतै कारणु जिनि कीआ सो जाणै सोई ॥
(पन्ना ७८७)

३.१.३ जीवन : ब्रह्मांड में इस छोटी-सी जगह धरती पर जीवन का आगमन एक बड़ा आश्चर्य भरा करिश्मा है। परम सत्ता तथा बेअंत भौतिक पसारे के बाद मानवीय चेतना तथा चिंतन के सामने जीवन एक रहस्यमयी पहेली है। जगत के पसारे को समझने हेतु मनुष्य ने इसको टुकड़ों में बांटा है। इसी तरह जीवन की पहेली को बूझने के लिए इसके दो रूप मुख्य तौर पर किए हैं :

(अ) जड़-संसार
(ब) जीवंत-संसार

जीवंत या चेतन संसार के दो प्रमुख हिस्से हैं :

१) वनस्पति-जगत
२) जीव-जगत

जीवंत संसार के जीव-जगत में से मनुष्य सबसे विकसित जीव है। मानवीय चिंतन के सामने जीवन की इस विकसित इकाई के बारे में तीन प्रारंभिक सवाल हैं :

१) जीवन क्या है?
२) जीवन का उद्देश्य क्या है?
३) उद्देश्य-प्राप्ति का साधन क्या है?

(१) श्री गुरु अमरदास जी ने (मानव) जीवन की व्याख्या इसके भौतिक तथा पराभौतिक पक्षों को लेकर की है। गुरु साहिब के अनुसार मानव शरीर पांच तत्वों के सुमेल से बना है। मनुष्य केवल शरीर ही नहीं इस शरीर में 'हरि' (ज्योति-रूप, आत्मा-रूप) बसता है। दूसरे शब्दों में, पांच तत्वों का पुतला शरीर हरि के आत्मा-रूप में बसने के लिए मंदिर है, घर है :
-पंच ततु मिलि देही का आकारा ॥(पन्ना ११२८)
-हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ ॥ *(पन्ना १३४६)*

इस तरह मनुष्य शरीर तथा ज्योति का सुमेल है।

(२) श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार मानव-जीवन का उद्देश्य इसका अपने 'मूल' को जानना है। 'मूल' का स्वरूप 'ज्योति' है। इस प्रकार 'ज्योति' पहचानना ही इस जीवन का वास्तविक उद्देश्य है :
मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
(पन्ना ४४१)

(३) जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार मनुष्य को बाहर जाने अर्थात् भटकने की ज़रूरत नहीं। हर किस्म की संभावनायें (जिनमें से 'मूल' जानने की संभावना मुख्य है) इसकी देह में ही हैं :
मेरै करतै इक बणत बणाई ॥
इसु देही विचि सभ वथु पाई ॥ *(पन्ना १०६४)*

इस काया अंदर पड़ी असंख्य वस्तुएं *"नउ खंड प्रिथमी इस तन महि रविआ निमख निमख नमसकारा"* में से असल वस्तु ढूंढने की ज़रूरत है। चाहे यह वस्तु शरीर में ही पड़ी है परंतु इस बात की समझ गुरु-ज्ञान या गुरु-शबद से ही आती है :
घर ही विचि महलु पाइआ गुर सबदी वीचारि ॥
(पन्ना ३०)

उपरोक्त संक्षिप्त विचार का निष्कर्ष यह है कि श्री गुरु अमरदास जी ने जहां मानव-चिंतन के बुनियादी 'मामले' लिए हैं, वहीं अपने ढंग से इनका समाधान भी किया है। इनके अंतर्गत आते अन्य अनेक संकल्पों (गुरु, मुक्ति, संगत, हउमै आदि) के बारे में गूढ़ विचार मिलते हैं। परंपरा में प्राप्त हर सच को जहां खुले रूप में अपनाया है, वहीं वहमप्रस्ती के हर तथ्य को निर्भय होकर रद्द भी किया है। सामाजिक,

आर्थिक दुष्वारियों के खिलाफ़ गुरु जी की बाणी में एक 'जंग' छिड़ी हुई है। अत: इस विशाल अनुभव/चिंतन के पीछे गुरु जी की बुजुर्गी की छाप साफ नज़र आती है।

३.२. कला-पक्ष : बाणी का विषय अनुभव, अतीत तथा प्रकृति के पक्ष से रहस्यवादी होने के कारण इसका निरोल साहित्यिक काव्य-विधियों की दृष्टि से अध्ययन करना ज्यादा तर्कसंगत नहीं। वास्तव में हमारे विद्वान अभी इस विषय के रूबरू हैं कि क्या बाणी को काव्य के क्षेत्र में रखा जाए या धर्म/दर्शन के ? चाहे कोई भी विचार अभी तक स्पष्ट रूप से सामने नहीं आया परंतु यह बात यकीनन है कि पश्चिमी (हडसन आदि) धारा की शैली, कल्पना, बुद्धि आदि या भारतीय काव्य-धारा की रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, रस आदि धाराओं से जोड़कर बाणी का अध्ययन करना ज्यादा ठीक परिणाम नहीं निकाल सकेगा। बाणी में धर्म/दर्शन/काव्य का सुमेल प्राप्त है। विषय पक्ष से जहां यह धर्म/दर्शन की 'वस्तु' होकर रह जाती है, वहीं प्रकट पक्ष से यह काव्य/साहित्य के घेरे में है। इसमें कई साहित्यिक-काव्य (बारह माहा, थिती, दिन रैणि, बिरहड़े, बावन अखरी, रुती, वणजारा आदि) तथा लोक-काव्य (अंजुली, अलाहणीआं, सदु, करहला आदि) रूपों का प्रयोग किया गया है; लोक-मुहावरों को अपनाया है। इसको यहां से दूर करके निरोल धर्म-सैद्धांतिक या दार्शनिक विधियों द्वारा भी अध्ययन नहीं किया जा सकता। खैर, विद्वान किसी धर्म-सैद्धांतिक, काव्य-शास्त्र की तालाश में हैं। यही बात श्री गुरु अमरदास जी की बाणी के बारे में भी हू-ब-हू लागू होती है।

यहां काव्य-पक्ष से जो वर्णनयोग्य तथ्य हैं उनका बानगी-मात्र उल्लेख किया जा रहा है। श्री गुरु अमरदास जी की बाणी इनको उजागर करने में पूरी तरह समर्थ है।

३.२.१-- काव्य का ज़रूरी तथ्य/तत्व उसका वो अनुभव होता है जिसने उसको आधार प्रदान किया हो। गुरु साहिब का काव्य-अनुभव आध्यात्मिकता के क्षेत्र का है। यह क्षेत्र जितना गहरा, विशाल तथा रसदायक है उतनी ही गंभीरता एवं रस इनकी बाणी में है :

-गुर कै सबदि अंतरि ब्रहमु पछाणु ॥
(पन्ना ३६४)

-काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा ॥ *(पन्ना ७५४)*

३.२.२-- गुरबाणी के अर्थों के संचार के लिए आम तौर पर समाज तथा प्रकृति में से प्रतीक लिए हैं। श्री गुरु अमरदास जी भी अपने विचारों का आम जनता तक संचार करने के लिए समाज तथा प्रकृति में से ही प्रतीक लेते हैं। इनमें हंस, बबीहा, कूंज, सांप, वरमी, हट, वणज, वापार आदि अनेकों प्रतीक शामिल किए जा सकते हैं। उदाहरणस्वरूप मनूर, मारू आदि प्रतीक मानव अधोगति का प्रतीक हैं तथा कंचन, सीतल आदि आत्मिक विकास की निशानियां हैं।[१०]

-मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइ ॥ *(पन्ना ६३८)*

-मारू ते सीतलु करे मनूरहु कंचनु होइ ॥
(पन्ना ९९४)

३.२.३-- गुरु जी ने आंतरिक आत्मिक अवस्था तथा आध्यात्मिक प्राप्ति के चाव को प्रकट करने के लिए भिन्न-भिन्न बिंब प्रयोग किए हैं :

ऊंनवि ऊंनवि आइआ अवरि करेंदा वंन ॥
(पन्ना १२९०)

३.२.४-- अलंकारों के पक्ष से गुरु जी की बाणी में रूपक, उपमा, दृष्टांत उलास, प्रमाण आदि के अनेकों नमूने मिल जाते हैं। ये अलंकार स्वाभाविक रूप से ही बाणी का शृंगार बने हैं।

उदाहरणस्वरूप रूपक :

मनु कुंचरु पीलकु गुरू गिआनु कुंडा जह खिंचे तह जाइ ॥ (पन्ना ५१६)

३.२.५-- भाषायी पक्ष से जहां गुरु जी का शब्द-कोश विशाल है, वहीं आपने अरबी-फारसी के शब्द कम ही प्रयोग किए हैं। आप जी की भाषा वर्तमान पंजाबी से काफी संयोगात्मक है। समकालीन समय की यह केवल बोलचाल की भाषा ही नहीं, बल्कि साहित्यक भाषा भी है। इसमें संस्कृत, अपभ्रंष की बानगियां भी मिल जाती हैं।

३.२.६-- आप जी की समस्त बाणी (लगभग) संगीतबद्ध/रागबद्ध होने के कारण जहां एक विशेष प्रकार की लय, राग तथा सुगमता में बंधी हुई है, वहीं गुरु साहिब राग-विशेष को ज्यादा तरजीह नहीं देते। गुरु जी राग/संगीत का सम्बंध गाने/सुनने/मानने वाले के इख़लाक से जोड़ते हैं अर्थात् राग/संगीत की भी तभी महानता है अगर मनुष्य उच्च इख़लाकी गुणों का धारणी हो :

-गुरमुखि मलार रागु जो करहि तिन मनु तनु सीतलु होइ ॥ (पन्ना १२८५)

-धनासरी धनवंती जाणीऐ भाई जां सतिगुर की कार कमाइ ॥ (पन्ना १४१९)

सार : उपरोक्त के निष्कर्ष रूप में इतना कहना ही वाज़िब है कि श्री गुरु नानक साहिब की ज्योति की निरंतरता की तीसरी महान शख़्सियत ने गुरमति पंथ को अपने अमली कार्यों में से अनेकों संस्थाओं (लंगर, मंजी, पंगत आदि) तथा गहरे अनुभव/चिंतन में से सदैवकालीन अमरता की बहुगुणी विचारधारा (बाणी) बख़्शकर मानवता के परोपकार के लिए बड़ी कोशिश की है।

पाद-टिप्पणियां :

१) झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ (पन्ना ९६८)

२) रामकली 'सदु' (पन्ना ९२३), रामकली की वार राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी, पन्ना ९६६; तुखारी महला ४, पन्ना १११६ तथा सवईए महले तीजे के ३, पन्ना १३९२

३) 'सदु' बाणी में गुरु जी का ज्योति-जोत समाने एवं श्री गुरु रामदास जी को गुरगद्दी प्रदान करने का हवाला है। रामकली की वार में भी गुरगद्दी-प्राप्ति तथा इसकी जिम्मेवारी का संकेत है। 'तुखारी महला ४' में कुरखेतर (कुरुक्षेत्र) आदि तीर्थों पर जाने और भटकी जनता का भला करने की गवाही है।

४) देखें वार १:४६; वार ३३:२६

५) देखें वार १६:११

६) दार्शनिक दृष्टिकोण से गुरमति-धारा की प्रकृति को विद्वानों ने अकालवाद, हुकमवाद, एक ओअंकारवाद आदि के नाम देने की कोशिश की है, परंतु गुरबाणी शुद्ध दार्शनिक प्रकृति वाली नहीं, इसमें समाज, धर्म, दर्शन आदि कई तत्वों के साथ 'काव्य' भी शामिल है।

७) काइआ सरीरै विचि सभ किछु पाइआ ॥ (पन्ना ११७)

श्री गुरु नानक साहिब के प्रसंग में इस बात की पुष्टि गुरबाणी (माझ १, वार २३ : १-३, पन्ना १४८; २७ :१-८, पन्ना १५०), भाई गुरदास जी (वार १:२४) आदि के बिना 'पुरातन जनमसाखी' (संपा: भाई वीर सिंघ, मैनेजर, खालसा समाचार, श्री अमृतसर, १९४८, पृष्ठ १६-१७) ने बहुत खूबसूरत ढंग से की है।

८) त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखि चउथा पदु पाइ ॥ (पन्ना ३०)

९) इस काइआ अंदरि वसतु असंखा ॥ (पन्ना ११०)

१०) विस्तार के लिए देखें :- "अमर कवी गुरू अमरदास, डॉ. बलबीर सिंघ, भाषा विभाग, पटियाला, १९७५.

अनुवादक : स. गुरप्रीत सिंघ 'भोमा'

शाणित पुंज : श्री गुरु अरजन देव जी

*–बीबी प्रीतइंद्र कौर**

भारतीय संत परंपरा में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का विशेष तथा महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनकी उत्कृष्ट बाणी तथा अनुपम कुर्बानी ने सिक्खों के जीवन में जो रंग भर कर उसे गौरवमयी बनाया, वह इतिहास के सुनहरे पृष्ठों से प्रकट है। गुरु जी ने लोगों को सामाजिक कल्याण तथा परमार्थिक बोध का एहसास करवाया। बाणीकार तथा संगीतकार होने के अतिरिक्त गुरु जी विद्वान संपादक भी थे, जिन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में बाणी का अद्वितीय संग्रह तैयार करके भारतीय संस्कृति पर महान उपकार किया।

श्री गुरु अरजन देव जी सिक्खों के पंचम गुरु थे। इन्होंने श्री गुरु रामदास जी और माता भानी जी के घर १९ वैसाख, संवत् १६२० तद्नुसार १५ अप्रैल, १५६३ ई को गोइंदवाल साहिब, ज़िला तरनतारन (पंजाब) में जन्म लिया। श्री गुरु अमरदास जी आपके नाना थे। आप श्री गुरु रामदास जी के तीसरे और सबसे छोटे सुपुत्र थे। आपके दो बड़े भाई–– प्रिथीचंद और महादेव थे। आपका बचपन प्रकृति के खुले आंगन में दरिया ब्यास के किनारे व्यतीत हुआ। गुरु जी अपने ननिहाल में पैदा हुए। गुरमति की घुट्टी आपको अपने घर से ही मिली।

बचपन के ११ साल तक श्री गुरु अरजन देव जी गोइंदवाल साहिब में ही रहे। इनके ऊपर अपने नाना जी के आध्यात्मिक जीवन का गहरा प्रभाव पड़ा। गुरबाणी-कीर्तन और नाम-सिमरन का प्रवाह तो घर में चल ही रहा था, जिससे आपने बचपन से ही प्रभु-भक्ति को जीवन का एकमात्र आधार बना लिया। अगले पांच वर्ष आप अपने पिता श्री गुरु रामदास जी के पास श्री अमृतसर में रहे।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी के संरक्षण में उनके आदेश अनुसार बाबा बुड्ढा जी से गुरमुखी विद्या प्राप्त की और गुरबाणी-चिंतन किया। घर में आपको आध्यात्मिक विद्या सहज स्वाभाविक ही मिलती रही। भाई गुरदास जी और भाई सावन मल आपके सहपाठी थे। देवनागरी, संस्कृत की विद्या आपने पंडित बेणी से प्राप्त की। गांव के स्कूल से आपने फारसी की विद्या प्राप्त की। पांच वर्षों में आपने गुरमुखी, देवनागरी, संस्कृत और फारसी का ज्ञान प्राप्त कर लिया। आपने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन का कार्य सुव्यवस्थित ढंग से किया। शब्द-जोड़ और व्याकरण नियमों के अनुसार बाणी को एक न्यायशीलता प्रदान की। गुरु जी का विवाह २३ आषाढ़, संवत् १६३६ तद्नुसार १५७९ ई में भाई किशन चंद की सुपुत्री माता गंगा जी के साथ हुआ। गुरु जी के घर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जन्म लिया।

श्री गुरु अरजन देव जी बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। आप क्षमा, सहनशीलता, नम्रता, सहृदयता और कोमलता की साकार मूर्ति थे। आपके भाई प्रिथीचंद ने आपके रास्ते में कई बार अवरोध खड़े करने का प्रयत्न किया। आप आयु में चाहे अपने दोनों भाइयों से छोटे थे परंतु ज्ञान और गुणों में आप उनसे बहुत ऊंचे थे। गुरु जी का सारा जीवन निर्भय और निरवैर रहने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। आपका न तो किसी से कोई वैर था और न ही आपको किसी का भय था :

ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के

**रीसर्च स्कालर, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बारी, ज़िला झुनझुनू (राजस्थान), फोन : ९४६३३२८८००*

बैराई ॥ . .
सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ *(पन्ना ६७१)*

श्री गुरु अरजन देव जी का जीवन-इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि ये कला-प्रेमी थे। आप काव्य-कला, संगीत-कला, वास्तु-कला और संपादन-कला से जुड़े हुए थे। श्री गुरु नानक देव जी से चली आ रही कीर्तन परंपरा को आपने ज्यों का त्यों कायम रखा। भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी आपके दरबार में कीर्तन करते थे। गुरु जी कीर्तन करने वालों का आदर करते थे। एक दिन भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी ने गुरु जी से अपनी बहन के विवाह के लिए कीर्तन की एक दिन की भेटा मांग ली। गुरु जी ने देने को सहमति दे दी। संयोगवश उस दिन कीर्तन-भेंट अन्य दिनों के मुकाबले कम एकत्र हुई। यह देखकर दोनों क्रोधित हो उठे और अगले दिन कीर्तन करने नहीं आए तथा गुरु-घर की निंदा करनी शुरू कर दी। गुरु जी के बुलाने पर भी उन्होंने आने से इंकार कर दिया। गुरु जी ने स्वयं कीर्तन किया और संगत को भी कीर्तन करने का आदेश दिया। कुछ समय बाद भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी को अपने किए का एहसास हुआ और वे ग्लानि महसूस करने लगे। उन्होंने भाई लद्धा जी के माध्यम से गुरु जी से क्षमा मांगी और पुनः गुरु-घर में कीर्तन करना शुरू कर दिया।

श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी उनकी निर्भयता का अनुपम उदाहरण है। आपने मनुष्यता के हित में दबी-कुचली, पीड़ित एवं मासूम जनता को ज़ालिम और निर्दयी साम्राज्य के विरुद्ध जागरूक करने के लिए अपना बलिदान दिया। श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरु साहिबान के अलावा गुरमति विचारधारा से मेल खाती बाणी को भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान दिया। मुगल बादशाह जहांगीर ने गुरु जी के इस पुनीत कार्य पर संदेह प्रकट किया तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की तैयारी पर एतराज जताया। बादशाह के कुछ वज़ीरों आदि ने भी उसे गुरु जी के विरुद्ध भड़काने में कोई कसर न छोड़ी। उकसाहट में जाकर जहांगीर ने गुरु जी को लाहौर में बंदी बना लिया। लाहौर जाने से पहले आपने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरगद्दी सौंपी और पांच सिक्खों को अपने साथ लेकर लाहौर चले गए। आप पर जुर्माना किया गया। गुरु जी ने जुर्माना देने से इंकार कर दिया। इससे क्रोधित होकर गुरु साहिब को शहीद करने के लिए फरमान जारी कर दिया गया। चंदू आदि ने नाज़िम से कहकर गुरु जी को गरम लौह पर बिठाया और शीश पर गर्म-गर्म रेत डाली गई। ज्येष्ठ माह की कड़क धूप में उबलते हुए पानी में बिठाया। गुरु जी अपनी सहन-शक्ति से सारी यातनाएं सहन करते रहे। इस प्रकार गुरु जी को पांच दिन तक निरंतर कष्ट दिए जाते रहे। बाद में और प्रताड़ित करने हेतु गुरु जी को रावी नदी में स्नान कराया गया। इस प्रकार अनेक यातनाओं को अपने तन पर झेलते हुए गुरु जी १ आषाढ़, संवत् १६६३ तद्नुसार ३० मई, १६०६ ई को शहादत प्राप्त कर गए।

श्री गुरु अरजन देव जी सिक्ख पंथ में प्रथम शहीद बनकर शहीदों के सिरताज बने। आप शांत एवं गंभीर स्वभाव के स्वामी थे। आप दिन-रात संगत-सेवा में लीन रहते थे। आप सभी धर्मों के प्रति अथाव स्नेह रखते थे। मानव-कल्याण के लिए आपने आजीवन शुभ कार्य किए। आपने बाणी के माध्यम से संतप्त मानवता को शांति का संदेश दिया। श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा ३० रागों में उच्चरित २३१३ शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित हैं।

शहीदी प्रसंग श्री गुरु अरजन देव जी

*-डॉ. कशमीर सिंह 'नूर'**

शहीदों के सिरताज, इंकलाबी, क्रांतिकारी मसीहा, नम्रता के पुंज, परम परोपकारी, सहिष्णुता व शहादत की ऊंची मिसाल कायम करने वाले, गुरबाणी के बोहिथ, दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संकलनकर्ता और महान् संपादक पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में लासानी, अद्वितीय, युग बदलने वाली, दुनिया और मानवता के इतिहास को नई पहचान देने वाली माना जाता है। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने एक-एक रोम को, एक-एक श्वास को, एक-एक क्षण को शहादत के आलोक में प्रदीप्त किया। इससे अन्याय, अत्याचार, अधर्म, कट्टरता के सघन-गहन अंधेरे को दूर करने में बहुत भारी मदद व सफलता मिली तथा मीरी और पीरी की विरासत को मज़बूत आधार मिला।

यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि प्रत्येक सच्चे रहबर, संत को, मार्गदर्शक, शूरवीर योद्धा को, युगद्रष्टा, इंकलाबी शख़्सियत को, क्रांतिकारी, को कई बार किसी काम की कीमत अपने प्राणों की आहुति तक देकर चुकानी पड़ती है। इतिहास इस बात का गवाह है कि जब भी मानवीय समाज का कोई भाग अपना गौरव तथा अपनी स्वतंत्रता खो देता है तो दिव्य ज्ञान के अमृत कलश को लिए कोई महान् शख़्सियत जगत में प्रकट होती है तथा इतिहास का रुख मोड़कर रख देती है। ऐसी शहादत के फलस्वरूप ही परिवर्तनकारी इंकलाबी लहर पैदा होती है, जो बाद में क्रांति का रूप धारण कर लेती है।

अपनी लासानी, अद्वितीय शहादत से इतिहास का रुख मोड़ने वाले, शांति के आलोक-स्तंभ, युगद्रष्टा, सहनशीलता के सागर श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म १९ वैसाख, संवत् १६२० तद्नुसार १५ अप्रैल, सन् १५६३ ई को गोइंदवाल साहिब में हुआ। इनकी मां माता भानी जी थीं और पिता श्री गुरु रामदास जी थे। श्री गुरु अरजन देव जी के दो भाई थे-- प्रिथी चंद एवं महादेव। प्रिथी चंद ईर्ष्यालु स्वभाव का था और माया से भी काफी मोह रखता था। महादेव अलमस्त स्वभाव का था। श्री गुरु अरजन देव जी धार्मिक विचारों वाले, नम्रता व उदारता वाले थे। उनमें सद्भावना, कोमलता, सेवा, परोपकार, क्षमा, दया, प्रेम आदि अनेक गुण मौजूद थे, इसीलिए श्री गुरु रामदास जी ने गुरगद्दी देने के लिए इन्हीं का चयन किया। श्री गुरु अरजन देव जी की दसतारबंदी की रस्म में भट्ट साहिबान भी शामिल हुए और उन्होंने 'सवैयों' का उच्चारण किया।

श्री गुरु अरजन देव जी को गुरिआई-पद की प्राप्ति गुरु-संतान होने के नाते नहीं, बल्कि उनकी सेवा-भावना, आज्ञाकारिता की भावना यानि गुरु के हुक्म मुताबिक कर्त्तव्य निभाने की भावना के कारण हुई। गुरु-घर में सेवा, सिदक (संतोष), प्रेम-भक्ति को ही सर्वोच्च स्थान दिया जाता है, अन्य रिश्तों को नहीं।

शहज़ादा खुसरो जहांगीर का छोटा पुत्र था। वह राजा मान सिंह की बहन की कोख से

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

पैदा हुआ था। वह अत्यंत सुंदर व उच्च आचरण वाला था। उसकी शादी मिर्ज़ा अज़ीज़ कोका की लड़की के संग हुई थी। खुसरो का कथन था, "गुरु अरजन देव जी मेरे मुर्शिद हैं। मैं जब भी उनसे मिला, तब मेरे लिए रूहानियत के द्वार खुल गए। उनके लंगर में बैठकर मैंने जो खाना (लंगर) खाया, उसकी लज़्ज़त व पाकीज़गी को मैं कभी भूल नहीं सकता। गुरु अरजन देव जी की शख़्सियत में मिकनातीसी (चुंबकीय) कशिश है।" खुसरो के संबंध कट्टरपंथी व जुनूनी स्वभाव वाले अपने पिता जहांगीर के साथ अच्छे नहीं थे। दोनों के स्वभाव और आचरण में ज़मीन-आसमान का अंतर था। मिर्ज़ा अज़ीज़ कोका व राजा मान सिंह चाहते थे कि खुसरो तख़्त पर बैठे। अकबर की इच्छा के विपरीत जहांगीर (सलीम) ने गद्दी पर अधिकार जमा लिया। खुसरो ने हुसैन बेग़ व अब्दुर रहीम जैसे अपने मददगारों की सहायता से बगावत कर दी।

पंचम पातशाह की शहादत केवल प्रिथी चंद या चंदू की ईर्ष्या से और कट्टरवादी शेख़ अहमद सरहंदी की साज़िशों के कारण ही नहीं हुई अपितु इसकी मुख्य वजह जहांगीर की वह कट्टरपंथी नीति भी थी, जिसका गुरु पातशाह शुरू से ही विरोध करते आ रहे थे। गुरु जी धर्म के काम में राजनीति के दख़ल के विरुद्ध थे। वे किसी के धर्म के दमन को अकाल पुरख के सिद्धांत एवं न्याय का घोर उल्लंघन समझते थे। पंचम पातशाह जी ने अपनी शहादत द्वारा ज़ालिम जहांगीर के जुल्म का मुंह तोड़ जवाब दिया। ऐसा जवाब, जो कि विश्व के इतिहास के पन्नों पर सुनहरी अक्षरों में अंकित हो गया। उनकी अद्वितीय शहादत का विवरण पढ़-सुनकर लोगों का रोम-रोम कांप उठता है और आंखों से अश्रुओं की अविरल धारा बह निकलती है। उन्होंने अपनी शहादत द्वारा मानवीय संवेदना, संकल्प, सहन-शक्ति, दृढ़ इच्छा-शक्ति, हौसले व धैर्य को पराकाष्ठा पर पहुंचाते हुए एक नई पहचान दी, बुलंदी बख़्शिश की। ज़ालिम और कट्टरवादी जहांगीर ने अपनी आत्म-कथा 'तुज़कि-जहांगीरी' में लिखा है, "दरिया ब्यास के किनारे गोइंदवाल में (गुरु) अरजन (देव) नाम का एक हिंदू (सिक्ख) रहता था जो धार्मिक गुरु अथवा मुर्शिद कहलाता था। उसकी ख्याति बढ़ रही थी और हर दिशा से लोगों की भीड़ उसके पास जमा हो रही थी। बहुत संख्या में साधारण हिंदू व कुछ मूर्ख मुसलमान भी उसको सच्चा मुर्शिद तस्लीम कर रहे थे। तीन-चार पीढ़ियों से यह काम चल रहा था। मैं काफ़ी लंबे समय से दुकाने-बातिल (झूठ की इस दुकान) को बंद करवाना या उसको इसलाम में शामिल करना चाहता था।"

बागी खुसरो के गुरु-घर में ठहरने को, गुरु-घर की परंपरा व सिक्खी सिद्धांतों के अनुरूप उसको संरक्षण देने के कारण क्रूर जहांगीर ने गुरु जी को शहीद करने का बहाना बनाया। वह तो सिक्ख धर्म के संगठित प्रचार से लोगों में आ रही जागृति, जुर्रत और साहस को अपने मुगल साम्राज्य के लिए ख़तरा समझने लगा था। उसने मुर्तजा ख़ान को शाही फ़रमान जारी किया कि गुरु पातशाह को गिरफ़्तार कर लिया जाये, सब माल-ओ-असबाब ज़ब्त कर लिया जाए। मुर्तजा ख़ान ने पंचम पातशाह को गिरफ़्तार कर चंदू लाल के सुपुर्द कर दिया। गुरु जी के विरुद्ध प्रिथी चंद ने बादशाह के कान तो भरे ही थे, चंदू लाल ने भी कोई कसर बाकी नहीं रखी थी, क्योंकि गुरु जी ने अहंकारी चंदू का अहं चकनाचूर किया था और गुरु-घर के निंदक चंदू की बेटी का रिश्ता अपने साहिबज़ादे श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब के लिए संगत के कहने पर नामंजूर कर

दिया था। हकूमत की शर्तें थीं कि गुरु जी इसलाम धर्म कबूल कर लें या गुरबाणी में हज़रत मोहम्मद साहब की स्तुति में पंक्तियां शामिल करें। गुरु जी ने स्पष्ट उत्तर दिया कि धर्म धारण करना व उसका पालन करना निजी मान्यता एवं आस्था पर आधारित होता है। हकूमत का इससे कोई सरोकार नहीं होता है। दूसरी बात, गुरबाणी प्रभु की बाणी है, मेरे अपने बोल नहीं हैं। इस अमृत (बाणी) में खुशामिद की कांजी (विष) को नहीं मिलाया जा सकता। कट्टरपंथी हकूमत को ये बातें नागवार गुज़रीं। 'तुजकि-जहांगीरी' में एक और जगह पर जहांगीर लिखता है, "मैं उसकी (श्री गुरु अरजन देव जी) काफ़िराना चालों को पहले से ही अच्छी तरह जानता था। मैंने हुक्म दिया कि उसे हाज़िर किया जाये और मैंने उसका घर-घाट व बच्चे मुर्तज़ा खां के हवाले कर दिए तथा उसका मालो-असबाब ज़ब्त कर हुक्म दिया कि उसे यातनाएं देकर कत्ल किया जाये।"

इससे स्पष्ट होता है कि जहांगीर पहले से ही किसी बहाने की तलाश में था। खुसरो के गुरु जी के पास ठहरने को उसने गुरु जी द्वारा खुसरो की मदद करना बताया। मुर्तज़ा ख़ान ने गुरु जी को यातनाएं देने हेतु दीवान चंदू को लगाया गुरु जी को गर्म तवी पर बैठाकर उनके शीश पर गर्म-गर्म रेत डाली गई। फिर उबलते पानी में बिठाया गया। संपूर्ण शरीर छालों से भर गया। गुरु जी ने *"तेरे भाणे में अंम्रित वसै"* की धुन जारी रखी। साईं मियां मीर जी ने हस्तक्षेप करने की कोशिश की। गुरु जी ने साईं मियां मीर जी को वाहिगुरु के हुक्म में रहने का उपदेश दिया। उन्होंने फ़रमान किया, "क्या हुआ अगर तन तप रहा है? साईं के प्यारों को प्रभु-रज़ा में रसानुभूति करनी चाहिए। तन व संसार झूठा है। आत्मा निर्लेप है।"

गुरु जी जानते थे कि बलिदान देकर ही परम सच, धर्म की रक्षा की जा सकती है; जुल्म व अन्याय को मात दी जा सकती है। जल्लादों ने गुरु जी को ज्यादा दुख देने हेतु उनके तपते जिस्म पर रावी दरिया का ठंडा पानी डाला। छाले (फफोले) फूट पड़े। टीस का कोई अंत न था। पांच दिन लगातार यातनाएं दी जाती रहीं। छठे दिन १ आषाढ़, संवत् १६६३ तद्नुसार ३० मई, १६०६ ई को गुरु जी शहीदी प्राप्त कर गए।

कविता

हमारे पंचम गुरुदेव

हमारे पंचम गुरुदेव।
मन-तन देव सिरदेव।
नर्म नाज़ जज़्बात।
बारीक बीन समझात।
बलिदानी जिनके जैसा न और।
हक प्रवान परम सिरमौर।
मेरी नत्तमसना अविराम।
मेरी कलम का दंडवत प्रणाम।
कुर्बानी रूप पंथ प्यार।
इतिहास को दी तेज धार।
तख़्तो-ताज को दी ललकार।
शांतमयी अर्पण अपरंपार।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, मो. ९४१७१-७५८४६

शहादत परंपरा की बुनियाद रखने वाले श्री गुरु अरजन देव जी

*-डॉ. मनजीत कौर**

शहीदों के सिरताज, पवित्रता के सागर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादक, ब्रह्मज्ञानी, विनम्रता के पुंज, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी सिक्खों के सम्मानित पंचम गुरु थे। आप जी का जन्म १९ वैशाख, संवत् १६२० तद्नुसार १५ अप्रैल, १५६३ ई को पिता श्री गुरु रामदास जी के गृह में माता भानी जी की पावन कोख से हुआ। भाणा (प्रभु-हुक्म) मानने वाली मां माता भानी जी के महान सपूत ने गर्म तवी पर अडोल बैठकर, शीश पर गर्म रेत डलवाकर, उबलते पानी की देग में बैठकर भी अकाल पुरख परमेश्वर के चरणों में केवल यही अरदास की कि हे ईश्वर! बाकी सब कुछ चाहे जितना भी तपे किंतु तेरी रहमत सदका मेरा मन तेरा सिमरन करता हुआ सदैव शीतल रहे।

वस्तुत: श्री गुरु अरजन देव जी ने कुर्बानी की एक आश्चर्यजनक मिसाल पेश की। उन्होंने तो अकाल पुरख के चरणों में यही अरदास की :

तेरा कीआ मीठा लागै ॥
हरि नामु पदारथ नानकु मांगै ॥ (पन्ना ३९४)

सी. एच. पेन लिखते हैं कि गुरु साहिब ने देख लिया था कि सिक्खों को बगैर शस्त्र अपनाए जीना मुश्किल है। अत: उन्होंने (शहीदी के लिए) लाहौर जाते वक्त इस संदर्भ में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को स्पष्ट बता दिया था-- "बुरा वक्त आ गया है। बदी की शक्तियां प्रारंभिक मानव हकों को खत्म करने पर तुली हुई हैं। गुरु नानक पातशाह का घर सदैव सत्य, प्यार एवं आज़ादी का समर्थक रहा है। जनता को वहमों और भ्रमों से निकालने का काम हमने अमन और शांत तरीके से किया है परंतु इसका नतीजा कुछ विपरीत ही निकला है। . . . समय बहुत तेजी से आ रहा है जब नेकी तथा बदी की ताकतों की टक्कर होगी। तैयार हो जाओ! खुद शस्त्र पहनो तथा अपने अनुयायियों को भी शस्त्र पहनाओ!! ज़ालिमों का मुकाबला करो जब तक वे अपने आप को सुधार न लें।"

परिणामस्वरूप सर्वत्र यह ख़बर फैली कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मीरी तथा पीरी की दो कृपाणें धारण की हैं तथा फौज भी रख ली है। यह महसूस किया गया कि वास्तव में शस्त्र धारण किए बिना अन्य कोई चारा नहीं। इसी कारण सिक्खों में संत के साथ सिपाही का भी स्वरूप आया। विद्वानों के चिंतनानुसार श्री गुरु अरजन देव जी की अद्भुत शहादत ने सिक्खों की रूप-रेखा ही बदल दी।

इतिहास गवाह है कि शहीदों का खून कभी व्यर्थ नहीं जाता। किसी चिंतक ने खूब लिखा है :

शहीद की जो मौत है, वो कौम की हयात है।
हयात तो हयात है, मौत भी हयात है।

अर्थात् शहीदों की मौत भी ज़िंदगी देने वाली होती है।

श्री गुरु अरजन देव जी की अद्वितीय

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

शहादत ने सिक्खों में नया जोश उत्पन्न किया, उन्हें संगठित किया तथा हथियारबद्ध होने हेतु प्रेरित किया। इस जोश को देखकर सरकार ने सख़्ती शुरू की। सिक्ख कौम इस सख़्ती से निपटने हेतु तत्पर होने लगी।

श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत का एक कारण यह भी माना जाता है कि श्री गुरु अरजन देव जी ने खुसरो की मदद की है, जो कि जहांगीर का बागी पुत्र था तथा अफगानिस्तान जाते वक्त गुरु साहिब के दर्शन हेतु आया था। गुरुदेव ने दर्शनार्थ आए खुसरो को आशीर्वाद दिया और राह खर्च हेतु पैसे भी दिए। शरणागत की रक्षा करना गुरु-घर की मर्यादा रही है। गुरु जी ने उसका निर्वाह किया। जहांगीर को बहाना मिल गया। उसने गुरु साहिब को बुलावा भेजा तथा खुसरो की सहायता करने का स्पष्टीकरण मांगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में से (इसलाम के खिलाफ़) कुछ शब्दों को हटाने को कहा। प्रत्युत्त र में गुरु साहिब का जवाब दृढ़तापूर्वक था-- "जो गोलक मेरे पास है वह ज़रूरतमंदों की ज़रूरतें पूरी करने हेतु है। दूसरी बात, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की जा सकती। उसमें कोई भी बात किसी भी धर्म के अनुयायी का दिल दुखाने हेतु नहीं है।"

इस बयान से जहांगीर आग बबूला हो गया। उसके द्वारा गुरु साहिब को क्रूर यातनाएं देकर शहीद करने का फरमान जारी किया गया। गुरु जी को उबलते पानी की देग में बिठाया गया। गर्म तवी पर बिठाया गया। पावन शीश पर गर्म रेत के कड़छे भर-भरकर डाले गए। अडोल अवस्था में ध्यान अकाल पुरख के चरणों में लगाकर बैठे पंचम पातशाह का शरीर छाले-छाले हो गया। एक तरफ ज़ालिमों के जुल्म की इंतहा तो दूसरी ओर गुरु साहिब के सब्र और संतोष की हद थी सिलसिला जुल्म का यहां भी नहीं थमा। गुरु साहिब को रावी नदी में स्नान करवाया गया इस संपूर्ण घटनाक्रम में सूबेदार चंदू ने भी जलती आग में घी का काम किया। अपनी बेटी के ठुकराए गए रिश्ते के कारण गुरु साहिब के खिलाफ़ जुल्म करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

घोर यातनाएं सहन करते हुए श्री गुरु अरजन देव जी १ आषाढ़, संवत्, १६६३ तद्नुसार ३० मई, १६०६ ई को लाहौर में शहीद हो गए।

संघर्ष करते हुए शहीद होने की भावना सिक्खों के स्वभाव का स्थायी भाव है। इस भावना को स्थायित्व प्रदान किया शहीदों के सिरताज धन्य-धन्य श्री गुरु अरजन देव जी ने। श्री गुरु अरजन देव जी सदृश्य महान युगपुरुषों के आविर्भाव से ही धरती पवित्र होती है। भारतीय संस्कृति के संरक्षक तथा मानवीय मूल्यों के रक्षक श्री गुरु अरजन देव जी की अद्वितीय शहादत को शत्-शत् नमन !



श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी में विनम्रता की महिमा

-डॉ. नवरत्न कपूर*

हउमै और उसके पर्याय : भारतीय शब्द-माला में 'हउमै' शब्द को शामिल करने का सारा श्रेय सिक्ख गुरु साहिबान को है। इस शब्द में दो पद्यांश हैं-- 'हउ+मै', जिसका संधि रूप हउमै (Egoism, Arrogance) बना है। इस मनोभाव का निषेध श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनेक पदों में हुआ है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने हउमै जैसे कटु विचार का त्याग करने के लिए कहीं पर इसी शब्द का प्रयोग किया है और कहीं पर इसके पर्यायवाची शब्दों-- अहंकार, गुमान, गरब (गर्व) जैसे शब्दों का प्रयोग भी किया है। उनकी पवित्र बाणी से कुछ उदाहरण पेश हैं, यथा :

हरि जन का राखा एकु है किआ माणस हउमै रोइ ॥
(पन्ना ४२)

अर्थात् ईश्वर-भक्त का रक्षक एकमात्र प्रभु है। हे मनुष्य! तू अपने अभिमान में डूबकर रुआंसा क्यों होता है?

कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिलै सतिगुर देव ॥
(पन्ना १३४१)

अर्थात् जिस व्यक्ति को सच्चे गुरु की प्राप्ति हो जाती है उसके काम, क्रोध, अहंकार आदि सारे विकारों का नाश हो जाता है।

धन भूमि का जो करै गुमानु ॥
सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥ . . .
धनवंता होइ करि गरबावै ॥
त्रिण समानि कछु संगि न जावै ॥ . . .
किसै न बदै आपि अहंकारी ॥
धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥
गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥
सो जनु नानक दरगह परवानु ॥ . . .
अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥ (पन्ना २७८)

अर्थात् जो व्यक्ति अपने धन और ज़मीन के कारण अभिमानी बन जाता है, वस्तुतः वह मूर्ख है और अज्ञान में लिप्त अंधा है। जो धनवान होने के कारण अभिमान दिखाता है, (उसे समझना चाहिए कि) मृत्यु होने पर एक तिनका भी उसके साथ नहीं जाएगा। अहंकारी मनुष्य भला किसको बदनाम नहीं करता! उसके इस पाप के फलस्वरूप धर्मराज की सभा में उसे अपमानित होना पड़ेगा। जो व्यक्ति अभिमान को त्याग देता है और सच्चे गुरु की शरण में जाता है वो परमात्मा को स्वीकृत हो जाता है। बहुत-से लोग तपस्या करने से अपने लिए अहंकारवश तपस्वी शब्द का प्रयोग करने लगते हैं। ऐसे लोगों को मुक्ति नहीं मिलती बल्कि उनको कभी स्वर्ग के समान सुखों की प्राप्ति होती है और कभी दुखों के भंवर में फंसे रहने से नरक जैसा जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

गुरु साहिब की इन शिक्षाओं से निष्कर्ष निकलता है कि चाहे मनुष्य अपने रुपए-पैसे के कारण धनवान कहलाए अथवा पूजा-पाठ के फलस्वरूप तपस्वी बन जाए, उसे अपनी इन जीवन-उपलब्धियों का अभिमान छोड़कर विनम्र बन जाना चाहिए।

'हउमै' का विपरीतार्थिक शब्द 'विनम्रता' : संस्कृत-हिंदी शब्द 'विनम्रता' के अरबी-फारसी और उर्दू में अनेक अर्थवाचक शब्द मिलते हैं, यथा : आजज़ी (फारसी शब्द), ख़ाकसारी (फ़ारसी शब्द) तथा हलीमी (अरबी शब्द)। नम्र स्वभाव वाले (विनम्र) व्यक्ति के लिए श्री गुरु अरजन देव जी ने अनेक

**१६९७, जीवन संत कॉटेज, देवान मूल चंद स्ट्रीट, नजदीक आर्य समाज, पटियाला-१४७००१ (पंजाब)*

शब्दों का प्रयोग किया है। उनकी पवित्र बाणी से चुनकर ऐसे शब्दों का उल्लेख अक्षर-क्रमानुसार प्रस्तुत है, यथा :

१) अनाथ :

अनाथ के नाथे स्रब के साथे जपि जूऐ जनमु न हारीऐ ॥ *(पन्ना ८०)*

२) सेवक :

प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥
प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥
जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥
नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ॥
(पन्ना २८५)

३) खसमै बंदा (प्रभु-भक्त) :

गुर की सेवा सेवको नानक खसमै बंदा ॥
(पन्ना ४००)

४) खिजमतदार (मूल शब्द 'खिदमतगार', जिसका अर्थ है नौकर) :

हउ बंदी प्रिअ खिजमतदार ॥
ओहु अबिनासी अगम अपार ॥
ले पखा प्रिअ झलउ पाए ॥
भागि गए पंच दूत लावे ॥ *(पन्ना ३९४)*

५) जाचक (याचक, मांगने वाला) :

जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥
करि किरपा देवहु हरि नामु ॥ *(पन्ना २८९)*

६) दास :

अपने दास कउ देइ वडाई ॥
अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥ *(पन्ना २८५)*

७) निथावा (अस्थिर व्यक्ति, जो सदा भटकता रहे) :

निथावे कउ गुरि दीनो थानु ॥
निमाने कउ गुरि कीनो मानु ॥ *(पन्ना ३९५)*

८) निमाणा/निमाना (विनम्र स्वभाव वाला व्यक्ति) :

चरण सरण दइआल तेरी तूं निमाणे माणु ॥
जीअ प्राण अधारु तेरा नानक का प्रभु ताणु ॥
(पन्ना ४०५)

९) मूड़ पापी (मूर्ख पापी) :

गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥
गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥ *(पन्ना २६२)*

विनम्र भाव से गुरुदेव की शरण में जाना : मनुष्य को चाहिए कि वह देवी-पूजा, योग-साधना, मौन व्रत रखना, सन्यासी अथवा उदासीन बनना, शास्त्रोक्त नवधा (नौ प्रकार)- भक्ति, वेद-पाठ, अवधूतों जैसा जीवन, निराहार व्रत करना जैसी जीवन-पद्धतियों को त्यागकर धर्मप्रस्थ गृहस्थी बनकर यदि प्रातः काल उठकर गुरुदेव की शरण में जाकर चरण-स्पर्श करें तो इससे बड़ा पुण्य कार्य कोई हो ही नहीं सकता। पंचम पातशाह के ये मनोहर वचन इस पद में संकलित हैं :

धिआनी धिआनु लावहि ॥ गिआनी गिआनु कमावहि ॥
प्रभु किन ही जाता ॥१॥ भगउती रहत जुगता ॥
जोगी कहत मुकता ॥ तपसी तपहि राता ॥२॥
मोनी मोनिधारी ॥ सनिआसी ब्रहमचारी ॥
उदासी उदासि राता ॥३॥ भगति नवै परकारा ॥
पंडितु वेदु पुकारा ॥ गिरसती गिरसति धरमाता ॥४॥
इक सबदी बहु रूपि अवधूता ॥ कापड़ी कउते जागूता ॥
इकि तीरथि नाता ॥५॥ निरहार वरती आपरसा ॥
इकि लूकि न देवहि दरसा ॥ इकि मन ही गिआता ॥६॥
घाटि न किन ही कहाइआ ॥ सभ कहते है पाइआ ॥
जिसु मेले सो भगता ॥७॥ सगल उकति उपावा ॥
तिआगी सरनि पावा ॥ नानकु गुर चरणि पराता ॥८॥
(पन्ना ७१)

सद्गुरु को अभिवादन की विधि : सच्चे गुरुदेव के दर्शन करने के पश्चात् उसका अभिवादन किस प्रकार किया जाए, इस विषय में गुरु साहिब ने अनेक विधियां बताई हैं। इन सभी विधियों को नमस्कार के अंतर्गत रखा जा सकता है, जिसका उल्लेख उन्होंने 'सुखमनी साहिब' बाणी में इस प्रकार किया है :

-गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥

हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥
(पन्ना २९३)

-आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥
(पन्ना २९५)

अर्थात् भगवान की कृपा से ही मनुष्य को गुरु की प्राप्ति होती है, जो कि मनुष्य को ज्ञान रूपी दृष्टि प्रदान करता है तथा अज्ञान रूपी अंधेरे को दूर करने में सहायक होता है। ऐसा जागृति (मनि परगासु) पैदा करने वाला गुरु सभी प्रकार के भेदभाव से मुक्त होने के कारण (भक्ति द्वारा) मनुष्य को संसार से मुक्ति प्राप्त करने का साधन बताता है। ऐसे मनुष्य (जन) को हम सदैव नमस्कार करते हैं।

संस्कृत शब्द 'नमस्कार' में 'नम:'+'कार' की संधि (Conjuction) है। संधि-विच्छेद करने पर यह (नम:+कार) 'नमस्कार' के रूप में प्रकट होता है। 'नम' शब्द ही 'नमन' (झुकना) और 'नम्रता' का व्युत्पत्तिमूलक रूप है। इस प्रकार नमस्कार की परिभाषा हुई-- "झुककर (विनम्रतापूर्वक) किसी को आदर-सत्कार देने का कार्य। इस संदर्भ में हमारा ध्यान 'सुखमनी साहिब' बाणी के निम्नलिखित सलोक की ओर जाता है :

आदि गुरए नमह ॥
जुगादि गुरए नमह ॥
सतिगुरए नमह ॥
श्री गुरदेवए नमह ॥ (पन्ना २६२)

गुरु साहिब ने अभिवादन संबंधी कुछ अन्य शब्दों का प्रयोग भी किया है, जो उनकी बाणी के भाषा-सौष्ठव की अभिवृद्धि में सहायक हैं :

(क) कर जोड़ि (हाथ जोड़ना) :

कर जोड़ि नानकु करे अरदासि ॥
मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि ॥ (पन्ना ३९२)

अर्थात् हे गुरुदेव! मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं कि मुझे संतों की सेवा का सुअवसर प्रदान कीजिए जो कि मेरे लिए अत्यंत गुणकारी है।

आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ ॥
उन साधा का दरसनु पावउ ॥
मोहि गरीब कउ लेहु रलाइ ॥
नानक आइ पए सरणाइ ॥ (पन्ना ३९३)

अर्थात् मैं दिन-रात हाथ जोड़कर मन में प्रभु का यही ध्यान धरता हूं कि मुझे सच्चे साधु-संतों के दर्शन हों। मैं इसी कारण आपकी (प्रभु की) शरण में आया हूं कि मुझ गरीब व्यक्ति को अपने साथ जोड़ लो।

(ख) चरण स्पर्श करना :

चरन सति सति परसनहार ॥
पूजा सति सति सेवदार ॥
दरसनु सति सति पेखनहार ॥
नामु सति सति धिआवनहार ॥ (पन्ना २८५)

अर्थात् हे गुरुदेव! आपके चरणों को स्पर्श करने का सुअवसर मुझे सैकड़ों बार प्राप्त हो। मैं एक सेवक सदृश आपकी पूजा सैकड़ों बार करूं। मुझे सैकड़ों बार आपके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो। मैं आपका नाम-सिमरन सैंकड़ों बार कर सकूं, ऐसा मुझे आशीर्वाद प्रदान कीजिए।

(ग) गुरु-चरणों पर शीश झुकाना (पंजाबी शब्द : मत्था टेकना) :

गुर के चरण ऊपरि मेरे माथे ॥
ता ते दुख मेरे सगले लाथे ॥ (पन्ना १८७)

अर्थात् मैंने विनम्र-भाव से अपने गुरुदेव के चरणों पर शीश झुकाया है। उसी के फलस्वरूप मुझे सब प्रकार के दुखों से छुटकारा मिला है।

अंतत: हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने बहुभाषी ज्ञान द्वारा सभी लोगों की यही शिक्षा दी है कि उन्हें सदा गुरु-भक्ति में लीन रहना चाहिए और अपनी जीवनोपलब्धियों के विषय में डींगें मारकर अभिमान (हउमै) जताने की बजाय सदा विनम्र रहना चाहिए।

माता भागो जी तथा चालीस मुकते

*-सिमरजीत सिंघ**

झबाल नामक गांव के ढिल्लोयों ने सिक्ख इतिहास में कई पक्षों से अपनी अहम पहचान बनाई हुई है। मुगल राज्य के समय यह गांव लाहौर से दिल्ली जाने वाली सड़क पर हुआ करता था और यहां से ही उत्तर एवं दक्षिण दिशा की तरफ सड़कें जाती थीं। इन सड़कों के संगम वाली जगह को 'माणक चौक' कहा जाता था। सिक्ख इतिहास के अनुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपनी सुपुत्री बीबी वीरो का विवाह २६ ज्येष्ठ, १६८६ बिक्रमी (२४ मई, १६२९ ई) को इसी गांव में किया था। इसी गांव में श्री गुरु अरजन देव जी का सिदकी सिक्ख भाई लंगाह जी बसता था। यहां ही भाई लंगाह जी तथा भाई पैरोशाह जी के खानदान में माता भागो जी का जन्म हुआ।

श्री गुरु अरजन देव जी से सिक्खी की दात प्राप्त करने वाले भाई लंगाह का जन्म ढिल्लों गोत्र के जाट अब्बुल खैर के घर हुआ, जो सुलतान सखी सरवर का उपासक था, जिसके कारण उसने अपना नाम भी मुसलमानों वाला रखा हुआ था। चौधरी लंगाह पांच भाई थे-- जैतसरी, बिंनां, सुंदर, पैरोशाह तथा लंगाह। भाई लंगाह पट्टी परगने के ८४ गांवों का चौधरी था तथा पट्टी की मुगल सरकार का तीन लाख का अरजारेदार था। उन दिनों में पट्टी की मुगल सरकार थी जो नौ लाख का लगान नौशहिरे के चौधरी पन्नू तथा सरहाली के चौधरी संधू व झबाल के चौधरी लंगाह से वसूल किया करती थी। इसी कारण पट्टी को अब तक नौ लक्खी पट्टी भी कहा जाता रहा है। चौधरी लंगाह ने श्री गुरु अरजन देव जी के प्रभाव से सिक्खी धारण की तथा श्री अमृतसर में श्री अमृत सरोवर की खुदाई तथा श्री दरबार साहिब, श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण में कार सेवा करके तथा धन-राशि के रूप में भी योगदान डाला। गुरु जी ने इसकी सिक्खी भावना को मुख्य रखते हुए इसको अपने इलाके में सिक्खी के प्रचार-प्रसार हेतु मसंद स्थापित किया। जब गुरु जी शहीदी प्राप्त करने के मंतव्य से लाहौर गए तो पांच सिक्ख, जिनमें भाई लंगाह जी भी शामिल थे, साथ गए। श्री गुरु अरजन देव जी के बाद यह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के गुरगद्दी काल में भी गुरु-घर का अनन्य सेवक रहा। यह तेग चलाने में बहुत माहिर था, इसलिए गुरु जी ने अपनी तैयार की सिक्ख सेना के एक दल का मुखिया भाई लंगाह जी को नियत किया। जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने लाहौर जाकर पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी की याद में स्मारक बनवाया तो उसकी सारी जिम्मेवारी भाई लंगाह जी को सौंपी गई और बीबी वीरो जी के विवाह के रस्में भी भाई लंगाह जी के महलों में ही हुई थीं। भाई लंगाह के भाई पैरोशाह के महल भी साथ ही थे, जिनके खंडहर अब तक मौजूद हैं। भाई लंगाह का देहांत ब्यास नदी के तट पर आबाद ढिलवां गांव में हुआ। चौधरी लंगाह का नाम भाई गुरदास जी ने अपनी ११वीं वार में सुहंदे सिक्खों

**संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।*

में लिखा है।

पटी अंदरि चउधरी ढिलो लालु लंगाहु सुहंदा ॥
(वार ११:२२)

चौधरी लंगाह के बाद इसके पुत्र मुबारक के पास १०५ गांव हो गए। माता भागो जी इसी भाई लंगाह के छोटे भाई पैरोशाह की पोती थी। पैरोशाह के दो पुत्र थे-- माले शाह तथा हरू। माले शाह के घर चार पुत्रों के बाद एक पुत्री ने जन्म लिया जिसके जन्म के बाद परिवार में हर पक्ष से बहुत उन्नति हुई जिस कारण पुत्री का नाम भागभरी रख दिया गया तथा लाड-प्यार से सभी भागो ही बुलाते थे।

माता भागो का जन्म कब हुआ, इसके बारे में कोई निश्चित तिथि मालूम नहीं होती। सिक्ख इतिहास से हवाला मिलता है कि माता भागो जी शुरू से ही आध्यात्मिकता में दृढ़ थीं। जब इनकी उम्र सात-आठ वर्ष की हुई तो यह अपने माता-पिता के साथ श्री गुरु हरिराय साहिब जी के दर्शनों के लिए गई थीं। इसके बाद यह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के दर्शनों को भी जाती रहीं। पट्टी में वड़ैच गोत्र के जट्टों का निवास है। पट्टी के चौधरी देस राज वड़ैच के पुत्र भाई निधान सिंघ से माता भागो जी का विवाह हुआ।

जब नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने धर्म की रक्षा हेतु दिल्ली के चांदनी चौक में अद्वितीय शहादत दी, उस समय माता भागो जी ने जोश में आकर अपने पिता जी को कह दिया कि वो दिल्ली में जाकर उन दुष्टों का नाश करना चाहती है, जिन्होंने श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी को शहीद किया है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की शहीदी के बाद माता भागो जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में जाती रहीं तथा हो रही धर्म-युद्ध की तैयारी को बहुत ही गहनता से देखती रहीं।

जब श्री अनंदपुर साहिब में मुगलों तथा पहाड़ी राजाओं का घेरा कई महीनों तक पड़ा रहा, किले के अंदर रसद-पानी खत्म हो गया तथा सिंघों को बाहर से रसद-पानी जाना बंद हो गया, ऐसा समय सिंघों के लिए बहुत ही संकटमयी काल था। जो सिंघ धैर्यवान थे वे गुरु जी पर प्रभु जितना विश्वास कर रहे थे तथा गुरु जी के हर हुक्म पर पुष्प भेंट कर रहे थे परंतु कुछ सिंघ ऐसे भी थे जो डोल गए। सिंघ अचानक हमला करके कुछ अपने लिए तथा कुछ घोड़ों आदि के लिए खाने-पीने को ले आते। ऐसे मौके पर कई सिंघ शहीद हो जाते तथा मुगल एवं पहाड़ी फौज़ों को भी मार मुकाते। मुगल तथा पहाड़ी फौज इस नित्यप्रति की बेआरामी से तंग आ चुकी थी तथा अपनी शाही सेना की गुरु जी के मुट्ठी भर सिंघों से हार खाने में बेशर्मी महसूस कर रही थी। उन्होंने गाय एवं कुरान की कसमें खाकर गुरु जी के पास विनती की कि अगर आप श्री अनंदगढ़ का किला खाली कर दें तो हम आपके काफ़िले को पूरे अमन-शांति के साथ जाने देंगे, कोई भी शाही सैनिक आपके काफ़िले की तरफ आंख उठाकर नहीं देखेगा। किले के भीतर हालात भी ज्यादा सुखमय नहीं थे। राशन की तंगी के कारण सिंघ कठिनाई महसूस कर रहे थे। कुछ सिंघों ने गुरु जी को विनती की कि गुरु जी, हम भूखों से और नहीं लड़ा जाता, हमें किला छोड़ देना चाहिए। गुरु जी को शाही सेना की कसमों पर एतबार नहीं था, इसीलिए गुरु जी किला खाली नहीं करना चाहते थे। गुरु जी ने सिंघों की किला खाली कर देने की मांग पर कहा कि अगर तुम लोग किला छोड़कर जाना चाहते हो तो बेशक चले जाओ, लेकिन तुमको लिखकर देना होगा कि तुम मेरे सिक्ख नहीं तथा मैं तुम्हारा गुरु नहीं :

यां ते लिखि लिखि सकल बिदावा।
चले जाहु जित जिह मन भावा ॥१७॥
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ ५८४५)

गुरु जी ने सिंघों को फैसला करने के लिए कहा कि जो आपको मंजूर है, कर लो। गुरु जी के इस तरह के वचन सुनकर सारे सिंघ दुविधा में पड़ गए। सारे सिंघों ने अमृत छकते समय अपना शीश गुरु जी के हवाले किया था तथा गुरु जी का कभी भी साथ न छोड़ने का प्रण किया था जिसके कारण यह शब्द लिखने उनके लिए बहुत कठिन थे कि हम आपके सिक्ख नहीं :

तिम ही दुविधा सिंघनि बयापी।
प्रण थो गुर तजि हैं न कदापी।
हम नहिं सिक्ख गुरू तुन नांही।
इह किम लिखी जाइ प्रभु पाही ॥२१॥
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ ५८४६)

गुरु जी ने किला खाली न किया। आखिर कहलूरी, हंडूरी, कटोच, जसवालिया, गुलेरी आदि ने वज़ीर ख़ान, दिलावर ख़ान तथा जबरदस्त ख़ान से सलाह-मशविरा करके श्री अनंदपुर साहिब की घेराबंदी से पीछा छुड़ाने के लिए दूसरी बार गुरु जी को प्रण-पत्र भेजा। पहाड़ी राजाओं तथा शाही सेना का प्रण-पत्र सुनकर सिंघों में भी खुशी की लहर दौड़ गई कि अब भूख का दुख दूर होगा। लेकिन गुरु जी ने किला खाली करने से फिर इंकार कर दिया। गुरु जी को अकाल पुरख पर पूर्ण भरोसा था कि उसकी मर्ज़ी के बिना पत्ता भी नहीं झूलता। सिंघ निरंतर भूख-प्यास की तंगी के बावजूद भी दुश्मन का डटकर मुकाबला करते रहे। अब इनमें भी कई किला खाली करने के पक्ष में थे।

माझे के सिंघों के जत्थेदार भाई महां सिंघ ने अपने जत्थे के अन्य साथियों से इस कठिनाई में भूखे-प्यासे मरने की बजाय किला छोड़कर जाने का फैसला किया। इन लगभग ४० सिंघों ने गुरु जी के पास आकर जाने की इजाज़त मांगी तथा गुरु जी को अनचाहे मन से बेदावा लिखकर दे दिया। गुरु जी ने इनको घर जाने की इजाज़त दे दी। बेदावा लिखने वाले सिंघों की बेदावा लिखने के समय जो दशा थी, उसका बयान भाई संतोख सिंघ ने इस तरह किया है :

लागे लिखिनि बिदावा सारे।
चहैं बचायो प्रानन पयारे ॥
यहां कषट सभि कौ तबि होवा।
करयों जु प्रण सो सगरो खोवा ॥२५॥
गुरू तजे, नहिं तजयो सरीर।
पछ्तावति चित भए अधीर।
पिखहिं परसपर लिखते जाहिं। होइ उदास गुरू लिखवाहिं ॥२६॥
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ ५८५४)

'गुरू-पद प्रेम प्रकाश' कृत सुमेर सिंघ तथा 'गुर-शबद रत्नाकर महान कोश' कृत भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार इनके नाम १. शमीर सिंघ, २. साधू सिंघ, ३. सरजा सिंघ, ४. सुहेल सिंघ ५. सुलतान सिंघ, ६. सोभा सिंघ, ७. संत सिंघ, ८. हरसा सिंघ, ९. हरी सिंघ, १०. करन सिंघ, ११. करम सिंघ, १२ काला सिंघ, १३. कीरति सिंघ, १४ किरपाल सिंघ, १५. खुशहाल सिंघ, १६. गुलाब सिंघ, १७. गंगा सिंघ, १८. गंडा सिंघ, १९. घरबारा सिंघ, २०. चंबा सिंघ, २१. जादो सिंघ, २२. जोगा सिंघ, २३. जंग सिंघ, २४. दयाल सिंघ, २५. दरबार सिंघ, २६. दिलबाग सिंघ, २७. धरम सिंघ, २८. धंना सिंघ, २९. निहाल सिंघ, ३०. निधान सिंघ, ३१. बूड़ सिंघ, ३२. भाग सिंघ, ३३. भोला सिंघ, ३४. भंगा सिंघ ३५. महां सिंघ, ३६. मजा सिंघ, ३७. मान सिंघ, ३८. मया सिंघ, ३९. राइ सिंघ, ४०. लछमण सिंघ बताए हैं। ये सभी माझा क्षेत्र के पट्टी परगने में अपने-अपने घर पहुंच गए।

दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने

पौष के महीने के अति ठंड के दिनों में संवत् १७६१ बिक्रमी में बादशाही मुगल फौजों की कुरान की कसमों एवं हिंदू पहाड़ी राजाओं की गाय की कसमों पर एतबार करके श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली कर दिया। गुरु जी का काफ़िला कीरतपुर साहिब के पास सरसा नदी के तट पर पहुंचा था कि मुगल फौजों व पहाड़ी राजाओं ने अपनी सारी कसमें भुलाकर गुरु जी के काफ़िले पर हमला कर दिया। गुरु जी का सारा काफ़िला बिखर गया। बड़े साहिबज़ादे चमकौर साहिब में और छोटे साहिबज़ादे तथा माता गुजरी जी सरहिंद में शहीदी पा गए। गुरु जी चमकौर साहिब से निकलकर माछीवाड़ा, आलमगीर, लम्मे जट्टपुरे, रायकोट, दीना कांगड़, गुरूसर, भगता भाई का, बादरा, बरगाड़ी, बहिबल, सरावां, पत्तो जैतो, ढब्भवाली, मलूक दा कोट आदि गांवों से होते हुए कोटकपुरा पहुंच गए।

दुल के चार पुत्र रत्नपाल, लखनपाल, बिनेपाल तथा सहिसपाल थे। रत्नपाल की बंस अबलू, दान सिंघ वाला, कोटली, किल्ही, महिमा सरजा तथा कुंडल आदि गांवों में बसती है। इनके ही पूर्वज़ थे जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को कोटकपुरा आकर मिले थे, जिनमें महिमे सरजे गांव का निवासी भाई चढ़त सिंघ का भ्राता भाई दान सिंघ भी शामिल था। ये सारे सिक्ख कोटकपुरा से गुरु जी के साथ चल पड़े। गुरु जी तुर्कों के साथ युद्ध करने के लिए किसी उचित स्थान की तालाश में थे। कपूरे चौधरी ने खिदराणे की ढाब के बारे में बताया तथा अपने बंदे खाने बराड़ को गुरु जी के साथ भेजा।

रास्ते में भी गुरु जी को ये ख़बरें मिलती रहीं कि सूबा सरहिंद वज़ीर ख़ान की शाही फौज मार-धाड़ करती हुई आ रही है। गुरु जी खिदराणे की ढाब वाली जगह पर पहुंच गए जो जंगी नुक्ता-निगाह से सबसे अच्छी जगह थी। नगर जलालाबाद के ज़िला फिरोज़पुर के तीन क्षत्रिय भाई खिदराणा, धिंगाणा तथा रोपाणा थे। इन तीनों भाइयों ने इलाके में पानी की कमी के कारण तीन ढाबें बनाई हुई थीं, जिनमें बरसात का पानी इकट्ठा करके इलाके में पशुओं के चराने की जगह बना ली तथा बाद में अपने-अपने नाम पर गांव आबाद कर लिए तथा अपनी पानी की कमी इस ढाब से पूरी करने लगे। यह इलाका पुरातन समय में मालवा या जंगल होने के कारण यहां पानी की बहुत किल्लत थी। पानी का स्तर नीचा होने के कारण कुंआं खुदवाना बड़ा मुश्किल काम था। अगर कोई कड़ी मेहनत करके कुंआं खुदवा भी लेता तो धरती के नीचे से आता पानी बहुत खारा होता जो पीने योग्य न होता। इसलिए इस इलाके के लोग पीने के लिए इसी ढाब का पानी प्रयोग करते थे, जिसको पांच-दस मील तक के गांवों के लोग बड़े प्रयत्नों से प्रयोग करते थे।

माता भागो जी के ससुर साहिब चौधरी देस राज का देहांत हो गया। उनके भोग पर माता भागो जी के मायके से भाइयों के साथ इलाके के अन्य सरदार पट्टी में पहुंचे, जिनमें गुरु जी को बेदावा देकर आए सिंघ एवं भाई महां सिंघ भी थे। माता भागो जी ने इनसे पूछा कि श्री अनंदपुर साहिब का क्या हाल है? फ़तहि हो गई कि नहीं? यह सुनकर उन्होंने गरदनें झुका लीं। माता भागो जी के बार-बार पूछने पर उन्होंने सच्ची बात बता दी कि हम तो गुरु जी को बेदावा लिखकर दे आए हैं। किसी सिंघ ने हाज़िर संगत को गुरु साहिब जी के श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने, माता गुजरी जी तथा साहिबज़ादों की शहीदी की बारे में बताया। यह सुनकर माता भागो जी को बहुत रोष चढ़ा और उनको लानतें डालीं तथा उनको कहा कि दुनी चंद मसंद के पोते सरूप सिंघ तथा अनूप सिंघ ने तो अपने दादे द्वारा की गद्दारी की भूल निरमोहगढ़ के स्थान पर जाकर बख़्शा ली थी :

दुइ पौत्रे सुनि सुनि अपवादा। नहीं सहारति होति बिखादा।
नाम सरूप सिंघ इक केरा। दुतिय अनूप सिंघ तिस बेरा ॥२८॥
कट कसिकै गुर दिशि चलि परे। दोश पितामा को बड धरे।
जो मझैल शरदा धरि मिले। ले कर संग अनंदपुरि चले ॥२९॥
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ ५३०४)

माता भागो जी ने सिंघों को वंगारकर कहा कि जिस तरह दुनी चंद के पोतों को लोगों के ताने सुनने पड़ते थे उसी तरह आपके बच्चों को भी गुरु से बेमुख होने पर ताने सुनने पड़ेंगे। लानत है आपकी मर्दानगी पर। आप घर बैठकर चरखा कातो, हम मैदान में जाकर लड़ेंगी तथा गुरु जी की मदद करेंगी। माता भागो जी ने इनको दोबारा गुरु जी के पास जाने की सलाह दी तथा भूल बख़्शाने के लिए कहा।

माता भागो जी मर्दों वाले भेस में शस्त्र सजाकर घोड़े पर सवार हो गईं तथा उनकी अगुवाही करके उनको खिदराणे की ढाब पर गुरु जी से भूल बख़्शाने के लिए लेकर जा रही थीं तो इलाके के कुछ आदमी पंच-सरपंच भी साथ हो लिए। लगभग दो सौ आदमियों का जत्था गुरु जी को मिलने के लिए चल पड़ा। इस जत्थे का रामेआणा के समीप गुरु जी से मिलाप हो गया। बेदावा देकर आए सिंघों ने हुई भूल की गुरु जी से क्षमा मांगी। चौधरियों ने गुरु जी को कहा कि अगर आप जंग-युद्ध बंद करके शांतमयी ढंग से रहो तो हम आपकी हाकिमों से सुलह करवा देते हैं। इस तरह हम सारा देश आपके सिक्ख बनकर रहेंगे नहीं तो इन जंगों-युद्धों में सिक्खी निभानी बहुत कठिन है। जो पीछे हो चुका है उसको भूल जाओ, जंग करनी छोड़ दो तथा हम दिल्ली के हाकिमों से आप जी की सुलह करवा देते हैं। इस तरह आप जी की सिक्खी सेवकी तथा गुरिआई चलती रहेगी, नहीं तो हमारे लिए सिक्खी निभानी बहुत कठिन है।

गुरु जी ने चौधरियों की बात सुनकर कहा कि सिक्ख मेरे और मैं सिक्खों का। भूल इन्सानी खासियत है तथा साईं बख़शिंद है परंतु रणभूमि में पीठ दिखाना खालसे का काम नहीं। खालसा अभय है। ज़ालिम जुल्म करता है तथा प्रजा की पीड़ा की पुकार दरगाह में पहुंचती है। मुझे उस पीड़ा को हरन करने के लिए भेजा गया है। आप जिस सुलह की आज बात करते हो, उस समय आप कहां थे जब श्री गुरु अरजन देव जी को गर्म तवी पर बैठाकर शहीद किया जा रहा था? शांति की प्रतिमा श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी को दिल्ली के चांदनी चौक में शहीद किया जा रहा था? उस समय तो आप कुछ नहीं कर सके। मेरा गुरु तो अकाल पुरख है। आप सिक्ख हो तो शिक्षा मानो। अगर आप गुरु के सिक्ख होते श्री अनंदपुर साहिब में छिड़ी जंग में बेदावा लिखकर न भागते।

गुरु जी के स्पष्ट शब्द सुनकर सभी ने नज़रें झुका लीं। इतने समय को एक गुप्तचर गुरु जी के पास ख़बर लेकर आया कि वज़ीर ख़ान की फौज समीप आ गई है :

तब लौ आइ खबर सिख दीनी दल तुरकी चढ धायो।
नाजम आप वजीद खान है दस हजार भट लिआयो। (पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३०७)

गुरु जी फौरन अपने सिक्खों के साथ वहां से चल पड़े। माझे से आए धैर्यवान सिक्खों के मनों को भारी चोट लगी। उनके अनुसार चौधरियों ने यह बहुत बुरा काम किया जिससे लोक-परलोक दोनों ही खराब कर लिए हैं। इन

सिंघों ने माता भागो जी से सलाह करके माझे के चौधरियों का साथ छोड़ दिया तथा भाई महां सिंघ की अगुवाही में सिंघों ने फैसला किया कि इस समय गुरु जी का साथ छोड़ना अच्छी बात नहीं है। माता भागो जी ने सिंघों को ललकार कर कहा कि पहले दीवार फांदकर दुनी चंद चार-पांच मझैल सिक्खों को साथ लेकर श्री अनंदगढ़ के किले से भाग निकला था। वो कलंक अभी तक सिक्खों पर लगा हुआ है। अभी वो भूला नहीं है, आपने आगे और बेदावा लिख दिया। अब कैसा मुंह लेकर वापस जाओगे? अच्छी बात यह है कि हम सब आ रही फौज का मुकाबला करें ताकि मुगल फौज गुरु जी तक न पहुंच पाए। भाई महां सिंघ की अगुवाही वाला ४० सिंघों का जत्था, गुरु जी जिस रास्ते पर गए थे, उसकी पैड़ों की पहचान करता हुआ पीछे-पीछे चल पड़ा।

गुरु जी खिदराणा पहुंच पश्चिम की तरफ उतारा कर वज़ीर ख़ान की फौज का इंतज़ार करने लगे। मझैल सिंघों ने खिदराणे की ढाब के पूर्व दिशा की ओर निचली जगह पर मोर्चे संभाल लिए। सिंघों ने अपने गिनती ज्यादा दिखाने की मंशा से झाड़ियों, वृक्षों आदि पर वस्त्र डाल दिए, जो दूर से देखने से ऐसा प्रतीत होता था जैसे खेमे लगे हुए हैं :

तुरकन खड़को कंन पयो, पए चील जिम आइ।
तंबूअन जिम कपड़े टंगे झाड़न ऊपर पाइ ॥२०॥
(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ १११)

समीप पहुंचने पर इस जत्थे का मुकाबला गुरु जी का पीछा करती आ रही वज़ीर ख़ान की फौज से हो गया। आपकी मुगलों से खूब लड़ाई हुई। जब गुरु जी ने गोलियों की आवाजें सुनी तो उन्होंने भाई दान सिंघ को सिंघों की मदद हेतु भेजा। मलवई सिंघों के पहुंचने पर मझैल सिंघों ने हौसले बढ़ गए। वे इतनी दिलेरी के साथ लड़े कि दुश्मन फौजें टिक न सकीं। दूसरा, पानी की ढाब पर गुरु जी का कब्ज़ा था जिस कारण शाही सेना को पीने के लिए पानी तक नसीब नहीं हो रहा था तथा वो प्यास से तड़प रही थी। गुरु जी ने टिब्बी पर बैठकर तीरों का ऐसा हमला किया कि दुश्मन फौज को भागने को रास्ता न मिला। इस लड़ाई में माता भागो जी के साथ आए हुए सारे सिंघ शहीद हो गए और भाई महां सिंघ व माता भागो जी ज़ख़्मी हालत में थे। फौज की बुरी दशा देख वज़ीर ख़ान ने कपूरे चौधरी से पूछा कि पानी कहां मिल सकता है तो कपूरे चौधरी ने बताया कि यहां जंगल में तीस-तीस कोस तक पानी नहीं मिलेगा परंतु पीछे को मुड़ें तो दस कोस पर ही पानी मिल जाएगा इस लिए पीछे जाना ही उचित है :

खान वजीद कपूरे तांई। बूझयो पानी दस्स किथाई।
हम तो मरे पिआसे अब ही। कहयो कपूरे हम तुम सब ही।
होयो जबै दुपहिरा दिन है। तड़फ गिरैंगे पानी बिन है।
सिंघ सु खले सब नूं मारैं। बचैं न खबर पुचावन हारै।
पीछे दसक कोस है पानी। आगे थल जंगल वैरानी।
तांते जे चहु जान बचावन। तौ भल है पीछे हट जावन। *(पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३०९-३१०)*

वज़ीर ख़ान के फौजदार शमस ख़ान तथा काजी अकबर अली ख़ान ने कपूरे की हां में हां मिलाई तो वज़ीर ख़ान ने वापिस जाने का हुक्म कर दिया।

गुरु जी टिब्बी से नीचे आए तथा उन्होंने एक-एक शहीद सिंघ को उठाकर सीने से लगाया तथा उनकी बहादुरी की कद्र करते हुए उनको

पांच हज़ारी, दस हज़ारी तथा बीस हज़ारी जरनैल आदि के खिताब दिए।*

माता भागो जी एक तरफ ज़ख्मी हुए पड़े थे। उनको गुरु जी ने संभाला और भाई महां सिंघ, जिनकी अंतिम सांसें चल रही थीं, दशमेश पिता जी ने अपने रुमाल से भाई महां सिंघ जी का मुखड़ा साफ किया तथा जल छकाया। जब भाई महां सिंघ जी की बेहोशी खुली तो कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने फरमान किया कि कोई अंतिम इच्छा है तो बताओ :

सतिगुर कही सिक्खो मंग ले हौ, मैं तुट्ठो मंग तिहो सु देहो।
तौ उन अग्गयो गल्ल सुनाई, होहु तुट्ठे लिहु टुटी गठवाई ॥३९॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ११३)

भाई महां सिंघ ने अरज की कि अगर तुट्ठे हो तो संगत का बेदावा फाड़कर टुट्टी गांठो, अन्य कोई इच्छा नहीं। सतिगुरु सदा बख़्शिंद है। गुरबाणी का फरमान है :

सुतु अपराध करत है जेते ॥
जननी चीति न राखसि तेते ॥ (पन्ना ४७८)

भाई महां सिंघ ने कहा, महाराज, सिक्ख आप जी के पुत्र हैं तथा आप जी अपराधियों को बख़्शने योग्य हो :

टूटी गाढनहार गुोपाल ॥
सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ (पन्ना २८२)

गुरु साहिब ने धन्य सिक्खी! धन्य सिक्खी!! कहते हुए बेदावा भाई महां सिंघ जी को दिखाकर चाक कर दिया। भाई महां सिंघ अपनी एवं भूल करने वाले अपने जत्थे के सिंघों की भूल बख़्शाकर, पूरी तरह बोझमुक्त महसूस करते हुए, मन से गुरु साहिब का दर्शन करते हुए गुरपुरी सिधार गए। गुरु साहिब ने भाई दान सिंघ को गांव खिदराणा से घी, आटा तथा शक्कर लाने के लिए भेजा ताकि कड़ाह प्रसादि की देग तैयार करवाई जा सके। कलगीधर पिता ने अपने हाथों से सभी मुकते सिंघों का अंतिम संस्कार किया। जिस समय अंगीठा जल रहा था तो गुरु जी ने हुक्म किया, ये मुक्त हुए हैं। यह ताल अब खिदराणा नहीं 'मुकतसर' है। इन मुकतों की यादगार रहेगी, शहीदगंज रहेगा। गुरु जी ने फरमाया :

अबि ते नाम मुकतिसर होइ। खिदराणा इस कहै न कोइ।
इस थल मुकति भए सिख चाली। जो निशपाप घाल बहु घाली ॥४६॥
यां ते नाम मुकतिसर होवा। जो मज्जहिं तिन ही अघ खोवा।
अस महिमा श्री मुख ते कही। सो अबि प्रगट जगत मैं सही ॥४७॥

(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पृष्ठ ६०४४)

खिदराणे की ढाब को आजकल 'श्री मुकतसर साहिब' कहा जाता है। इन शहीद सिंघों की याद में गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब** तथा गुरुद्वारा श्री शहीदगंज साहिब सुशोभित है।

*उस समय मुगल राज्य में यह खिताब प्रचलित थे। बहुत-से बड़े अफसरों के यह 'पांच हज़ारी', 'दस हज़ारी' आदि के खिताब होते थे। समय तथा सरदारों के बदलने से यह प्रशंसनीय शब्द, खिताब भी बदलते रहते हैं। अंग्रेज सरकार के समय सबसे बड़ा फौजी खिताब 'विक्टोरिया क्रॉस' था तथा आजकल 'परमवीर चक्र' है।

**इस पावन स्थान का निर्माण पहले-पहल भाई देसू सिंघ तथा भाई लाल सिंघ कैथल वालों ने करवाया था। सरदार हरी सिंघ नलवे ने काफी धन खर्च कर यह निर्माण-कार्य किया था। उस समय कई गांवों की जागीर इस स्थान की सेवा-संभाल के लिए इसके नाम पर लगी हुई थी। सन् १९२१ ई में कार सेवा वाले बाबा गुरमुख सिंघ तथा बाबा साधू सिंघ ने संगतों के सहयोग से गुंबद पर संगमरमर लगवाया।

गुरु जी ने इन ४० सिंघों को मुकतों की पदवी दी। यह सब कुछ माता भागो जी के कारण ही संभव हो सका। श्री मुकतसर साहिब में माता भागो जी की बहादुरी भरे कारनामे की याद में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। गुरु जी ने माता भागो जी की बहादुरी की भरपूर प्रशंसा की तथा बाद में इनको अमृत छकाकर इनका नाम भाग कौर रखा।

जिस स्थान पर ४० सिंघों ने तुर्कों से जंग करने के पहले उनकी फौज आती देखकर झाड़ियों एवं करीरों पर कपड़े तानकर दुश्मन को खेमे लगे होने के भ्रम में डाला था, उस स्थान पर महाराजा महिंदर सिंघ पटियाला ने सबसे पहले गुरुद्वारा साहिब का निर्माण करवाया।

जिस टिब्बे से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी मुगल सेना पर तीरों की वर्षा करते रहे, उस स्थान पर गुरु जी की याद में गुरुद्वारा टिब्बी साहिब सुशोभित है।*

माता भागो जी इस जंग के बाद हमेशा गुरु जी के जत्थे के साथ ही रहे तथा हमेशा ही मर्दों की तरह भेस धारण करके रहते थे। जब गुरु जी नांदेड़ में गए तो माता भागो जी उनके साथ ही थे। तख़्त सचखंड श्री हजूर अबिचल नगर साहिब, नांदेड़ के कांप्लेक्स की पूर्वी दिशा की तरफ गुरुद्वारा माता भागो जी सुशोभित है, जिसमें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पांच प्यारों के मुखी भाई दया सिंघ जी तथा भाई धरम सिंघ जी के अंगीठे बने हुए हैं। ये दोनों प्यारे भी गुरु साहिब जी के साथ ही नांदेड़ आ गए थे। यहां माता भागो जी भजन-बंदगी किया करते थे। इसलिए माता जी की याद में यहां तप-स्थान बना हुआ है। इस तप-स्थान के अंदर माता भागो जी के हथियार, बंदूक आदि संभालकर रखी हुई है। यह बंदूक साधारण बंदूक से काफी बड़ी तथा भारी है।

गुरु जी के ज्योति-जोत समा जाने के बाद माता भागो जी नांदेड़ को छोड़कर बिदर की तरफ चले गए। यहां ये सिक्ख धर्म का प्रचार बड़ी सरगर्मी से करते रहे। यहां ही उन्होंने हजूर साहिब के पास स्थित गांव जिंदवाड़ा में शरीर त्याग दिया। इस स्थान पर माता भागो जी की याद में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है।

सहायक पुस्तकें :

१) भाई कान्ह सिंघ नाभा, 'महान कोश'
२) भाषा विभाग, 'पंजाब कोश'
३) भाई संतोख सिंघ, 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ'
४) भाई रतन सिंघ (भंगू), 'श्री गुर पंथ प्रकाश'
५) ज्ञानी गिआन सिंघ, 'पंथ प्रकाश'
६) ज्ञानी सोहन सिंघ सीतल, 'मनुक्खता दे गुरू : गुरू गोबिंद सिंघ जी'
७) स. हुशियार सिंघ दुलेह, 'जट्टां दे गोतां दा इतिहास'

**इस गुरुद्वारा साहिब की सेवा सबसे पहले चार सौ रुपए खर्च कर श्री मुकतसर साहिब के पाठी सिंघों ने करवाई। सन् १९४३ ई में श्री अनंदपुर साहिब वाले सोढी साहिब ने लगभग दस हज़ार रुपए खर्च कर सेवा की। यह बहुत प्राचीन स्थान है। सन् १९५३ ई में स. बघेल सिंघ जी ने सिक्ख संगत से लगभग दो लाख रुपए उगराहकर अति सुंदर नयी इमारत का निर्माण करवाया, जिसमें सौ फुट का निशान साहिब स्थापित किया। यह स्थान मुकतसर साहिब से डेढ़ मील पश्चिम की ओर है।*

परोपकारी एवं विजयी योद्धा : बाबा बंदा सिंह बहादर

*-स. सुरजीत सिंघ**

महाबली, पराक्रमी, परोपकारी, विजयी, वीर, योद्धा, जरनैल बाबा बंदा सिंह बहादर का श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अटूट विश्वास, असीम प्रेम एवं श्रद्धा थी। आप सेवाभावी, संयमी, दयालु एवं शांत प्रवृत्ति वाले कर्मयोगी थे। आपका विश्वास था कि सेवा से बढ़कर कोई कर्म नहीं है :

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ *(पन्ना २६)*

बाबा बंदा सिंह बहादर के विजय-अभियानों से मुगल साम्राज्य पूरी तरह से भयभीत होने लग गया। प्रसिद्ध सूफी कवि बुल्ले शाह ने लिखा है-- "भूरिआं वाले राजे कीते, मुगलां जहिर पिआले पीते।" यहां पर 'भूरिआं वाले' से तात्पर्य 'सिक्ख संप्रदाय' से है।

स्वामी बी. सरस्वती ने अपनी पुस्तक 'बंदा सिंघ बहादर' (१९४४), पृष्ठ १६ पर लिखा है कि "बाबा बंदा सिंह बहादर एक देश-भक्त था, एक अच्छा सिक्ख सैनिक था व भारत की मुक्ति का जोशीला इच्छुक था।" इसी क्रम में प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार मैकलेगर के अनुसार, "बाबा बंदा सिंह बहादर जरनैलों व योद्धाओं में सर्वश्रेष्ठ स्थान रखता था।"

बाबा बंदा सिंह बहादर का जन्म १६ अक्तूबर, १६७० ई को कश्मीर रियासत के ज़िला पुंछ में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रामदेव भारद्वाज था जो राजपूत किसान परिवार से सम्बंधित थे। बाबा जी के बाल्य-काल का नाम लछमण दास था। लछमण दास की आयु अभी १५ वर्ष की थी कि एक दिन शिकार के दौरान गर्भवती हिरणी का शिकार हो जाने पर उस हिरणी ने पेट में पल रहे अजन्मे बच्चों सहित तड़प-तड़पकर प्राण त्याग दिए। इससे आपके हृदय को गहरा आघात पहुंचा। विचलित और दुखी लछमण दास का मानो जीवन ही परिवर्तित हो गया और उसने घर-परिवार छोड़कर एकांतवास में रहते हुए वैराग्य धारण कर लिया। लछमण दास वैरागी साधु जानकी प्रसाद को अपना गुरु धारण कर वैरागियों के टोले में जा मिला और नाम लछमण दास से बदलकर माधोदास रख लिया। प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार मैकालिफ़ अपनी विश्व-प्रसिद्ध पुस्तक 'दी सिक्ख रिलीजन' (१९०९, जिल्द ५, पृष्ठ २३८) में लिखता है कि "वैरागियों के समूह के साथ विभिन्न स्थानों का भ्रमण करते-करते माधोदास ने महाराष्ट्र के नांदेड़ नामक स्थान पर गोदावरी नदी के किनारे शांत व एकांत सुंदर स्थान पर अपना आश्रम स्थापित कर लिया।"

सिक्ख धर्म का देश-भक्ति से पूर्ण एवं ओजस्वी इतिहास रहा है जिसमें शौर्य, त्याग, बलिदान, सेवा, विनम्रता, भक्ति की अनूठी एवं अखंड परंपरा रही है। इतिहास का यही स्वर्णिम अध्याय सदियों से राष्ट्र की स्वतंत्रता, समानता, एकता के लिए अति प्रेरणास्पद एवं प्रासंगिक रहा है। खालसा पंथ के सभी गुरु साहिबान ने

**५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)-३२४००७; फोन : ९४१३६-५१९१७*

समय-समय पर आवश्यकतानुसार सत्य-धर्म, मानव-धर्म, जीवन-धर्म एवं राष्ट्रीय-धर्म की रक्षार्थ अमूल्य योगदान दिया है जो कि सर्वत्र नई जागृति एवं आदर्श प्रेरणा का सूत्रधार रहा है।

दक्षिण यात्रा के अंत में ३ सितंबर, १७०८ ई. को नांदेड़ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की माधोदास के साथ उसके आश्रम में मुलाकात एवं वार्तालाप हुई। माधोदास गुरु जी की दिव्यता, तेजस्व, शक्ति, आध्यात्मिकता से इतना अधिक अभिभूत हुआ कि अपनी सब शक्तियों को भूल कर गुरु जी की शरण में नत्मस्तक हो गया और निवेदन करने लगा, "हे मालिक! मैं आपका बंदा हूं। आपकी सेवा में समर्पित हो चुका हूं, इसलिए मुझे अपना बना लीजिए।" *"जो सरण आए तिस कंठ लाए"* के अनुरूप गुरु जी ने ३८ वर्षीय वैरागी साधु माधोदास को अमृत-पान कराकर सिंघ सजाया। उसका नाम 'बंदा सिंघ' रख दिया और 'बहादर' की उपाधि से सम्मानित किया। इतिहासकार स. करम सिंघ ने अपनी पुस्तक 'बंदा सिंघ बहादर' (श्री अमृतसर, १९०७, पृष्ठ १९३) में लिखा है, " बाबा बंदा सिंघ बहादर इतना ज़ोरावर और फुर्तीला था कि तीर और खंजर के बिना अन्य कोई हथियार उसके मन को अच्छा नहीं लगता था। वह शक्तिशाली घुड़सवार था, शरीर का हृष्ट-पुष्ट था और लगातार कई दिनों की मंज़िलें भी उस पर असर नहीं डालती थीं।" इसी क्रम में मुसलिम इतिहासकार मोहम्मद शफी अपनी पुस्तक 'मिरात-उल-वारदात' में लिखता है कि "शख़्सियत के धनी बाबा बंदा सिंघ बहादर की चमकती हुई आंखें एवं तीव्र दृष्टि उसके दुश्मनों पर विशेष असर छोड़े बिना नहीं रहती थी।"

गुरु जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादर को एक खालसाई ध्वज, एक नगाड़ा, पांच तीर बख़्शीश-स्वरूप प्रदान कर; सहायतार्थ पांच सिंघ-- भाई बिनोद सिंघ, भाई काहन सिंघ, भाई बाज़ सिंघ, भाई दया सिंघ एवं भाई रण सिंघ के अतिरिक्त कुछ अन्य सिक्ख शूरवीरों को साथ कर दिया। अपने प्रमुख सिक्खों को बाबा बंदा सिंघ बहादर की सहायता करने के आदेश-स्वरूप लिखे 'हुकमनामे' प्रदान कर गुरु जी ने आशीर्वाद देते हुए पंजाब की ओर रवाना कर दिया। बाबा बंदा सिंघ बहादर अभी रास्ते में ही था कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ज्योति-जोत समा गए। बाबा जी ने गुरु जी द्वारा सहायतार्थ लिखे 'हुकमनामे' प्रमुख सिक्खों को भेज दिए। मुगल साम्राज्य द्वारा जनसाधारण पर किए जा रहे अत्याचारों का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए 'हुकमनामे' प्राप्त होते ही बाबा बंदा सिंघ बहादर के नेतृत्व में खालसाई ध्वज तले हर तरफ से अनेकों सिक्ख जत्थे पहुंचने लगे जिनकी संख्या कुछ समय में ही ४००० घुड़सवार और ८००० पैदल तक पहुंच गई।

बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सोनीपत और कैथल को जीत लिया। बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ खालसा फौज की संख्या लगातार बढ़ती हुई ४०००० तक जा पहुंची जिसकी प्रमाणिकता प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. गोकुल चंद नारंग की पुस्तक 'ट्रांसफारमेशन ऑफ सिक्खिज़्म' से सिद्ध हो जाती है-- "पैदल सैनिकों की संख्या बढ़कर चालीस हज़ार तक जा पहुंची जिसमें सिक्खों के अतिरिक्त हिंदू, मुसलमान एवं तथाकथित दलित वर्गों के लोग भी सम्मिलित थे।" ११ नवंबर, १७०९ ई. को खालसा फौज ने समाणा पर आक्रमण बोल दिया। भयानक युद्ध में बाबा बंदा सिंघ बहादर ने समाणा का इलाका मुगलों से जीत लिया। इस प्रकार घुड़ाम, ठसका, मुस्तफाबाद,

कपूरी इत्यादि पर विजय प्राप्त करते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादर सढौरा की ओर बढ़ गए। सढौरा पर जीत दर्ज कर खालसा फौज छत बनूड़ की ओर अग्रसर हुई। अब तक मालवा और माझा क्षेत्र से अनेक सिक्ख जत्थे बाबा जी के साथ आ मिले। छत बनूड़ पर जीत प्राप्त करने के उपरांत बाबा बंदा सिंघ बहादर अपने मुख्य उद्देश्य 'सरहिंद फ़तहि' के बहुत निकट पहुंच गए थे।

सरहिंद वो स्थान है जहां पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबज़ादे -- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी और बाबा फ़तहि सिंघ जी को मुगल सूबेदार वजीर ख़ान ने दीवार में ज़िंदा चिनवाकर शहीद कर दिया था। यही वो स्थान है जहां माता गुजरी जी ने बलिदान दिया था।

खालसा फौज ने सरहिंद से १० मील दूर 'चप्पड़चिड़ी' नामक स्थान पर मोर्चा संभाल लिया। बाबा बंदा सिंघ बहादर की अगुआई में खालसा फौज और मुगल सेना के बीच घमासान युद्ध छिड़ गया। भीषण युद्ध में वजीर ख़ान मारा गया और मुगल सेना अपना बहुत बड़ा नुकसान कराकर भाग खड़ी हुई। खालसा फौज ने सरहिंद में प्रवेश करके उसकी ईंट से ईंट बजाते हुए उसे पूरी तरह से अपने अधीन कर लिया। वजीर ख़ान का मंत्री सुच्चा नंद, जिसकी साहिबज़ादों को शहीद करवाने में विशेष भूमिका रही थी, की पूरी हवेली को मलबे के ढेर में परिवर्तित कर दिया गया।

जनसाधारण की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादर जीते हुए इलाकों में राज्य-प्रबंध की व्यवस्था भी करते चले जा रहे थे। सरहिंद विजय के उपरांत खालसा उस शाही पथ पर अग्रसर होने लग गया जिसका उद्देश्य स्वतंत्र सिक्ख राज्य की स्थापना था। सिक्ख राज्य की स्थापना हेतु बाबा जी ने सढौरा और नाहन के बीच स्थित मुखलिसगढ़ को 'लोहगढ़' का नाम देकर राजधानी बनाया जहां से श्री गुरु नानक साहिब-श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर सिक्ख राज्य की मोहर एवं सिक्के जारी किए गए।

विजय का क्रम निरंतर जारी रखते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सहारनपुर आदि शहरों पर भी कब्जा जमा लिया। मलेरकोटला पर आक्रमण के समय शहर को किसी प्रकार की कोई क्षति नहीं पहुंचे, इसका विशेष ध्यान रखा गया था, क्योंकि मलेरकोटला के नवाब शेर मोहम्मद ख़ान ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबज़ादों की शहादत का प्रतीकात्मक विरोध किया था। बाबा बंदा सिंघ बहादर पश्चिम की ओर बढ़ते हुए जलालाबाद, जलंधर, रिआड़की आदि शहरों को जीतते हुए लाहौर के समीप आ पहुंचे। लगभग सम्पूर्ण पूर्वी पंजाब में सिक्ख राज्य की स्थापना हो चुकी थी। लोहगढ़ के किले को पूरी तरह से फौजी कार्यवाही हेतु तैयार कर दिया गया जहां बाबा बंदा सिंघ बहादर दरबार लगाकर गुरु-आज्ञानुसार जनता के दुख-दर्द सुन उनका शीघ्र निराकरण करने का प्रबंध किया करते थे। जागीरदारी-प्रथा का उन्मूलन करते हुए भूमि जोतने वाले किसानों को ही भूमि का मालिकाना अधिकार दिलाना बाबा जी की पंजाब को प्रमुख देन थी जिस कारण पंजाब की अर्थव्यवस्था में अपेक्षाकृत अधिक सुधार आया। यह कहना सर्वथा उचित होगा कि पंजाब की आज की आर्थिक समृद्धि के बीज बाबा बंदा सिंघ बहादर ने ही बोये थे।

सिक्ख राज्य के बढ़ते प्रभाव से घबराकर मुगल बादशाह बहादुर शाह ने सोची-समझी साज़िश के अनुसार एक लाख सेना लेकर पंजाब

में प्रवेश किया और लोहगढ़ के किले की चारों तरफ से घेराबंदी कर दी। प्रतिकूल स्थिति को भांप बाबा बंदा सिंघ बहादर किले को छोड़ पास के पहाड़ी क्षेत्रों की ओर कूच कर गए। घेराबंदी में असफल रहने पर बहादुर शाह वापिस लौट गया जहां उसकी कुछ समय उपरांत आकस्मिक मृत्यु हो गई। मार्च, १७१४ ई में बाबा बंदा सिंघ बहादर ने कलानौर और बटाला पर जीत दर्ज कर कब्जा जमा लिया।

निरंतर मुहिम पर मुहिम चलाने वाली मुगल फौज के बढ़ते दबाव से बाबा जी एवं उनके अन्य सिक्ख शूरवीर सैनिक गुरदास नंगल की कच्ची गढ़ी में उसके घेरे में आ गए। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सिक्ख सैनिक मुगल सेना का डटकर मुकाबला करते रहे। मुसलिम इतिहासकार मोहम्मद कासिम, जिसने इस युद्ध का दृश्य अपनी आंखों से देखा था, सिक्खों की बहादुरी का वर्णन करते हुए अपनी पुस्तक 'इबरतनामा' में लिखता है-- "सिक्खों के बहादुरी और दिलेरी भरे कारनामे आश्चर्यचकित करने वाले थे। जब शाही फौजें उनकी ओर आगे बढ़तीं तो वे अपनी कृपाणों और पिंजरों से मुगलों को रोक देते थे।"

मुगल सेना द्वारा की लंबी घेराबंदी से बाबा बंदा सिंघ बहादर के पास राशन एवं गोला-बारूद धीरे-धीरे समाप्त होता चला गया जिस कारण उनके द्वारा कई दिनों तक भूखे-प्यासे ही मुकाबला किया गया। इस कारण मुगल सेना ने गुरदास नंगल की गढ़ी पर कब्जा जमा लिया। बाबा बंदा सिंघ बहादर सहित ७०० से अधिक सिक्ख शूरवीरों को बंदी बनाकर दिल दहला देने वाली स्थिति में जलूस के रूप में मुगल सेना के घेरे में दिल्ली लाया गया। साथ में छकड़ों में सिक्ख शूरवीरों के कटे हुए सिर भरे थे। बाबा बंदा सिंघ बहादर को लोहे की जंज़ीरों से जकड़कर, लोहे के पिंजरे में बंद कर हाथी पर सवार कर रखा हुआ था।

बाबा बंदा सिंघ बहादर, उनके चार वर्षीय पुत्र बाबा अजै सिंघ तथा अन्य साथियों को दिल्ली के लाल किले से बाहर जलूस रूप में कुतुबमीनार के निकट लाया गया। बाबा जी को हाथी से उतारकर ज़मीन पर बैठा दिया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर पर मुगल हकूमत द्वारा दबाव बनाया गया कि वे या तो इसलाम धर्म कबूल कर लें अन्यथा लोमहर्षक मृत्यु के लिए तैयार हो जाएं। बाबा जी के सिक्खी के प्रति अडिग विश्वास एवं दृढ़ निश्चय को किसी भी प्रकार का लोभ-लालच डिगा न सका। उन्होंने शहीदी का मार्ग स्वीकार किया। क्रूर यातनाओं की शृंखला में पहले बाबा अजै सिंघ को बाबा बंदा सिंघ बहादर की आंखों के सामने शहीद कर उसका धड़कता हुआ कलेजा जबरन बाबा बंदा सिंघ बहादर के मुंह में ठूंसा गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर की लासानी शहादत का असहनीय दृश्य प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ गंडा सिंघ ने अपनी पुस्तक 'बंदा सिंघ बहादर' (पृष्ठ २३३-३४) में लिखा है-- "पहले जल्लादों ने छुरे की नोक से उनकी दायीं आंख निकाली, फिर बायीं आंख निकाली। इसके पश्चात उनका बायां पांव काट दोनों हाथ शरीर से अलग कर दिए गए। सुलगती लाल सुर्ख सलाखों से बाबा जी का अंग-अंग नोचकर बोटी-बोटी किया गया। अंत में शीश काटकर शहीद कर दिया गया।"

"जहां शहीदों का रक्त गिरता है, वहीं से उगता है हर सवेरा। जहां जलाता है देह दीपक, वहां न आता है फिर अंधेरा।"

छोटा घल्लूघारा

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

छोटा घल्लूघारा, गुरदासपुर ज़िले के काहनूवान के छंभ में मुगल हकूमत और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के खालसे के बीच हुई भयानक जंग थी। २ ज्येष्ठ, संवत् १८०३ (सन् १७४६) को हुई इस खूनी मुठभेड़ में सिक्ख फौजों का बहुत नुकसान हुआ, जिसमें लगभग १०,००० सिंघ शहीद हुए। यह खालसा कौम की बहुत भारी हानि थी। इतिहास गवाह है कि छोटे घल्लूघारे के लगभग डेढ़ वर्ष बाद ही सिक्खों की ताकत फिर दिन-ब-दिन बढ़ने लग गई थी।

लाहौर के सूबेदार जकरिया ख़ान ने सिक्खों को खत्म करने के लिए पूरा ज़ोर लगा दिया। उसका सख़्त हुक्म था कि इस दुनिया से सिक्खों का पूरी तरह से खुरा-खोज मिटा दिया जाए। जहां-जहां भी कोई सिक्ख दिखाई देता, उसकी गुप्त सूचना तुरंत जकरिया ख़ान के पास पहुंच जाती थी और सख़्त सज़ा देने के बाद वो सिक्खों को शहीद कर देता था। शाबाश गुरु के सिक्खों के, जिन्होंने ऐसी कठोर यातनाएं सहते हुए शहीद होना तो प्रवान कर लिया मगर अपना धर्म-परिवर्तन नहीं किया, अपनी सिक्खी और सिक्खी पहरावे को दाग नहीं लगने दिया। वे गुरु की बाणी और नाम-सिमरन की ओट लेकर सदा चढ़दी कला में रहे; सिक्खी सिदक केशों-श्वासों के साथ निभाया।

दुष्ट जकरिया ख़ान का अंत भी बहुत बुरी तरह से हुआ। अपने किए पापों का उस पर ऐसा मानसिक प्रभाव पड़ा कि उसका पेशाब बंद हो गया। सारे हकीम और वैद्य अपना ज़ोर लगा हटे परंतु सभी औषधियां बेअसर रहीं। अंत में भाई तारू सिंघ जी के पांव का जूता उसके सिर पर बजना शुरू हुआ, जिससे उसे पेशाब आता रहा। जितने ज़ोर से उसके सिर पर भाई साहिब का जूता बजता उतनी ही वो राहत महसूस करता। इस प्रकार २२ दिन तक भाई तारू सिंघ जी के पांव के जूतों की मार खा-खाकर उसका अंत हुआ।

उसकी मृत्यु के पश्चात उसका लड़का याहिआ ख़ान लाहौर का गवर्नर बना। उसने भी सिक्खों पर घोर अत्याचार जारी रखे। उसका दीवान लखपत राय सिक्खों पर बड़े-बड़े अत्याचार करता था तथा सिक्खों को घोर नफ़रत करता था।

एक बार वैसाखी का त्यौहार मनाने हेतु सिक्ख बड़ी संख्या में ऐमनाबाद में इकट्ठा हुए थे। दीवान लखपत राय के भाई जसपत राय ने जब रोकने का प्रयत्न किया तो सिंघों ने अपना पावन पर्व मनाने की परंपरा को यथासंभव जारी रखते हुए जसपत राय को मौत के घाट उतार दिया। लखपत राय ने इस बात का बहुत दुख मनाया। उसने लाहौर के गवर्नर याहिआ ख़ान को सारी बात रो-रोकर तथा बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताई। उसने कहा कि उसको सिक्खों पर आक्रमण करने के लिए शाही फौज तथा अन्य सहायता दी जाए ताकि वो सिक्खों का इस दुनिया

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

गांव : कैले कलां, डाक : घुम्मण कलां, ज़िला : गुरदासपुर-१४३५१८; फोन : ९८५५८५१०१४

श्री पाउंटा साहिब एवं भंगाणी का युद्ध

*-स. महेंद्र सिंघ**

आज से ३२६ वर्ष पूर्व की घटना श्री पाउंटा साहिब की स्थापना का कारण बनी। नाहन (हिमाचल प्रदेश) के राजा मेदनी प्रकाश की गुरु-घर के प्रति अटूट श्रद्धा एवं प्रेम के कारण बाईधार के राजा वैर रखते थे तथा समय-समय पर उसे डराते रहते थे। बाईधार के राजाओं को मुगल बादशाह औरंगजेब की भी शह प्राप्त थी। ऐसी गंभीर परिस्थिति में नाहन के राजा ने दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से मदद की गुहार की जो कि उस समय श्री अनंदपुर साहिब में विराजमान थे। कलगीधर पातशाह जी ने ऐसे विकट समय में उसकी मदद करने का वादा किया। वे ५०० शूरवीरों को साथ लेकर नाहन पहुंचे। नाहन के राजा एवं वहां की प्रजा ने गुरु जी का भव्य स्वागत किया। वहां के हालात की पूर्ण जानकारी राजा से प्राप्त कर (वर्तमान गुरु-स्थान श्री पाउंटा साहिब से १९ कि. मी. दूर एवं ऊंचे) एक टिब्बे को गुरु साहिब ने अपने ठहराव के लिए उचित समझा। आस-पास की समतल भूमि को युद्ध के मैदान के लिए चुना गया। गुरु जी ने सेना को संबोधित करते हुए कहा कि बाईधार के राजाओं की सेना यमुना नदी को पार कर इसी समतल युद्ध-भूमि में पहुंचेगी। उन्होंने कहा कि आधी सेना मेरे पास रहेगी और आधी सेना भाई संगोशाह (परम गुरु-सेवक) के नेतृत्व में दुश्मन से लड़ेगी। गुरु जी के पास ५०० योद्धाओं के अतिरिक्त स्थानीय संगत भी थी, जो दिलो-जान से लड़ने को आतुर थी। पीर बुद्धू शाह भी अपने सात सौ मुरीदों के साथ युद्ध-स्थल पर पहुंच गए थे। साथ में उनके दो भाई भी थे। उस समय गुरु जी के पास लड़ने वालों की संख्या सात से आठ हज़ार के लगभग हो गई थी, जबकि बाईधार के राजाओं की सेना २०-२५ हज़ार थी। गुरु साहिब ने यमुना नदी की ओर एक रणथम गाड़ कर कहा कि कोई योद्धा इस रणथम से पीछे नहीं हटेगा। बाईधार के राजाओं की सेना को यमुना पार करते देख गुरु जी ने सिक्ख सेना को मोर्चे संभालने का आदेश दिया। दोनों ओर से सेनाएं भिड़ीं और घमासान युद्ध शुरू हुआ। सैकड़ों योद्धा दोनों ओर से वीरगति को प्राप्त हुए। यह भयंकर युद्ध १२ दिन निरंतर होता रहा और अंत में १६ वैसाख, संवत् १७४६ को राजा हरी चंद के मारे जाने पर बाईधार के राजाओं की सेना युद्ध-स्थल से भाग खड़ी हुई। इस महान धर्म-युद्ध में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेना की जीत हुई।

यह गुरु साहिब के जीवन का पहला युद्ध था, जो भंगाणी साहिब के मैदान में लड़ा गया। इस युद्ध में गुरु जी का सामना राजा हरी चंद से हुआ। उसे अपनी युद्ध-कला पर बड़ा अभिमान था। उसने गुरु जी पर तीन तीर छोड़े। पहला तीर घोड़े की काठी पर लगा, दूसरा तीर गुरु जी की दसतार को छूते हुए निकल गया और तीसरा तीर गुरु जी की पेटी में लगा। इस तीर की चुभन ने गुरु जी को

**५६, सूर्यमल कालोनी, देवपुरा रोड, बूंदी (राजस्थान)-३२३००१, फोन : ९८२९०९८१७७*

और उत्साहित कर दिया। गुरु जी ने राजा हरी चंद को ललकारा और कहा कि अब मेरा तीर भी संभाल। देखते ही देखते गुरु जी का छोड़ा तीर राजा को भेदता हुआ पास में खड़े साकरोड़ के राजा को भी खत्म कर गया। इस वृत्तांत का उल्लेख गुरु साहिब ने अपनी बाणी 'बचित्र नाटक' में भी सविस्तार किया है। इस धर्म-युद्ध की जीत के पश्चात दशमेश पिता जी ने अकाल पुरख का शुक्राना इस प्रकार अदा किया :

हरीचंद मारे ॥ सौ योधा लतारे ॥
सु कारोड़ रायं ॥ वहै काल घायं ॥३३॥
रणं तिआगि भागे ॥ सबै त्रास पागे ॥
भई जीत मेरी ॥ क्रिपा काल केरी ॥३४॥८॥

इसके पश्चात गुरु जी ने कुछ समय विश्राम करने के लिए उचित स्थान की खोज की। यमुना नदी के किनारे जिस स्थान पर गुरु जी ने विश्राम किया वो स्थान बाद में 'पाउंटा साहिब' के नाम से जगत-विख्यात हुआ। गुरु जी यहां ४ माह से अधिक समय तक ठहरे। भजन-कीर्तन एवं कवि दरबार का आयोजन होने लगा। गुरु जी के आगमन से पूर्व यहां कोई कसबा अथवा गांव नहीं था। अब इस नगर में मुख्य गुरुद्वारा साहिब के अतिरिक्त तीन अन्य प्रसिद्ध धार्मिक स्थान भी हैं। ५ कि. मी. की दूरी पर शेरगाह, १७ कि. मी. की दूरी पर तीर गढ़ी एवं १९ कि. मी. की दूरी पर भंगाणी नामक स्थान है। श्री पाउंटा साहिब हिमाचल प्रदेश के ज़िला सिरमौर में स्थित है।

छोटा घल्लूघारा

(पृष्ठ ४६ का शेष)

से नामो-निशान मिटा सके। दीवान लखपत राय की बेअंत फौजों के साथ सिक्खों की खालसा फौज की लड़ाई हुई। बहुत-सी शाही फौज ने काहनूंवान के जंगली इलाके में सिंघों को घेरा डाल लिया। सिंघों ने तकड़े होकर मुकाबला किया। बहुत-सी शाही फौज को सिंघों ने मौत के घाट उतार दिया। शाही फौज गिनती में बहुत ज्यादा थी। शाही फौज ने जंगल को आग लगा दी। जंगल में सिंघ छिपे हुए थे। जिधर भी सिंघ भागे उसी ओर शाही फौज ने भयंकर आक्रमण कर उनको शहीद कर दिया। बहुत-से सिंघ ब्यास दरिया की ओर भागे। दरिया में पानी का बहाव ज्यादा था, जिससे वे दरिया में बह गए। कुछ पार हुए और भाग कर बच गए। जो सिंघ जम्मू की ओर गए, उधर से भी पहाड़ी लोगों ने उन पर हमला कर दिया और बहुत-से सिंघों को पकड़कर लखपत राय के हवाले कर दिया। उनको कई तरह के कष्ट दिए गए। बाद में उनको कई प्रकार से अपमानित करके शहीद कर दिया गया।

छोटा घल्लूघारा में सिक्खों का बहुत भारी नुकसान हुआ। ज़ालिमों ने बच्चों, बूढ़ों, औरतों सभी पर घोर जुल्म किए। लखपत राय ने घमंड के भाव में ऊंची आवाज़ में अपने दरबार में कहा, "अब सभी सिक्खों का खातिमा हो गया है। मैंने इनका बीज ही खत्म कर दिया है।" भले ही उस समय हालात ऐसे लग रहे थे परंतु खालसा तो दशमेश पिता का है, अकाल पुरख की फौज है, जो कभी भी खत्म नहीं हो सकती। यह स्मरण हो कि इस आक्रमण के लगभग डेढ़ वर्ष बाद सिक्खों ने फिर अपने अस्तित्व को दर्शाया। आज सिक्ख पूरे विश्व में अपनी विलक्षण पहचान बनाए हुए हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं।

स्रिसटि उपाइ आपे सभु वेखै ॥

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

परमात्मा का रूप, आकार, रंग नहीं है फिर भी वो है और सर्वव्यापक है, अतः मानवीय समझ की परिधि में लाने के लिए उसे शब्दों में मुखर करना आवश्यक हो जाता है। दिव्य दृष्टि के स्वामी श्री गुरु नानक साहिब ने परमात्मा को बोधगम्य बनाते हुए एक ऐसा विशेषण संसार के समक्ष रखा ताकि परमात्मा निराकार रहकर भी साकार हो सके। यह विशेषण था 'सतिनामु', जिसने परमात्मा को साकार के साथ सर्वव्यापक सिद्ध करने का कार्य भी किया। कलियुग के घातक प्रभाव से मनुष्य को बचाने के लिए यही यथोचित समाधान था कि उसकी पल-पल परमात्मा के साथ प्रीति बनी रहे और वह सुमार्ग पर चल सके। सतिगुरु की बात मानकर परमात्मा को अंगीकार करना भक्ति है और अंगीकृत परमात्मा के व्यक्त दर्शन करना भक्ति की शक्ति है जो परमात्मा पर आस्था को अविचल बनाती है। गुरु नानक साहिब ने परमात्मा को सतिनामु का संबोधन देकर एक अद्‌भुत घटना को अंजाम दिया, जिसे भाई गुरदास जी ने *"जीते नव खंड मेदनी सति नामु दा चक्र फिराइआ"* का नाम दिया अर्थात् इसे युगांतरकारी घटना बताया। श्री गुरु नानक साहिब अपनी विश्व-यात्रा के दौरान जब सिद्धों से मिले तो सिद्धों ने उनसे कोई करामात दिखाने को कहा ताकि उनके दैवीय गुणों का प्रमाण मिल सके। गुरु साहिब ने कहा कि सतिनामु के बिना उनके पास कोई चमत्कार नहीं है :

बाबा बोले नाथ जी! सबदु सुनहु सचु मुखहु अलाई।
बाझो सचे नाम दे होरु करामाति असां ते नाही।
बसतरि पहिरौ अगनि कै बरफ हिमाले मंदरु छाई।
करौ रसोई सारि दी सगली धरती नथि चलाई।
एवडु करी विथारि कउ सगली धरती हकी जाई।
तोली धरति अकासि दुइ पिछे छाबे टंकु चड़ाई।
इहि बलु रखा आपि विचि जिसु आखा तिसु पासि कराई।
सति नामु बिनु बादरि छाई ॥ (वार १:४३)

भाई गुरदास जी के अनुसार परमात्मा की, सतिनामु की अवधारणा के पूर्व तो संसार अज्ञान के अंधकार में डूबा हुआ था। परमात्मा की भांति-भांति की मनोनुकूल कल्पनाएं की जा रही थीं और सारा कुछ अस्पष्ट था। सिद्धों से चर्चा में श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि मनुष्य कितनी भी शक्ति एकत्र कर ले, पूरे संसार को, यहां तक कि धरती और आकाश को भी सहज ही अपने वश में कर ले, यह सारी सामर्थ्य बादलों जैसी भाप बनकर उड़ जाने वाली है यदि सतिनामु का आसरा नहीं है। सारी शक्तियां क्षणभंगुर हैं, नाशवान हैं। यदि अविचल और अक्षय है तो बस परमात्मा का नाम, क्योंकि यही सच है। वह तो सदैव से सच का एकमात्र प्रमाण है :

आदि सचु जुगादि सचु ॥

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३*

है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ (पन्ना १)

सृष्टि के अस्तित्व में आने से पूर्व भी परमात्मा ही सच था। जब से सृष्टि बनी है तब से वही सच है। वह आज भी सच है और भविष्य में भी सच होगा। सच का पहला प्रमाण है कि परमात्मा अक्षय है। वह जन्म-मृत्यु से परे अविनाशी शक्ति है। परमात्मा ही सच है और सच ही परमात्मा है :

सचा अमरु सचा पातिसाहु ॥
मनि साचै राते हरि वेपरवाहु ॥
सचै महलि सचि नामि समाहु ॥ (पन्ना १६१)

सच्ची शक्ति परमात्मा ही है जिसका सृष्टि पर शासन है और सभी जिसके अधीन हैं। उस सच्ची शक्ति की अधीनता स्वीकार कर लेने से सारी चिंताएं मिट जाती हैं और उसकी शरण व कृपा प्राप्त हो जाती है। उसकी इच्छा ही सर्वोपरि और अंतिम है जिसे नकारना असंभव है :

स्रिसटि उपाइ आपे सभु वेखै ॥
कोइ न मेटै तेरै लेखै ॥
सिध साधिक जे को कहै कहाए ॥
भरमे भूला आवै जाए ॥
सतिगुरु सेवै सो जनु बूझै ॥
हउमै मारे ता दरु सूझै ॥२॥
एकसु ते सभु दूजा हूआ ॥
एको वरतै अवरु न बीआ ॥
दूजे ते जे एको जाणै ॥
गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥
सतिगुरु भेटे ता एको पाए ॥
विचहु दूजा ठाकि रहाए ॥३॥ (पन्ना ८४२)

वह एक परमात्मा ही है जिसके कारण अन्य सभी का अस्तित्व संभव हुआ है। उसके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है जो सृष्टि को चला रहा है। पूरे संसार में जो परमात्मा की सृजनशीलता को देख रहा है उसी में परमात्मा तक पहुंचने और उसे जानने की योग्यता प्राप्त होती है। सृष्टि को जो अपनी बुद्धि और युक्ति से देख रहे हैं वे भ्रम में ही पड़े रहते हैं और सच नहीं जान पाते। सच तक जाने का मार्ग सतिगुरु का ही मार्ग है जो अपने विकारों को मारकर सतिगुरु की शरण में जाने से ही दिखता है। सतिगुरु का सिक्ख उस सच से जुड़ने में ही अपना हित देखता है :

साची कीरति साची बाणी ॥
होर न दीसै बेद पुराणी ॥
पूंजी साचु सचे गुण गावा मै धर होर न काई हे ॥१५॥
जुगु जुगु साचा है भी होसी ॥
कउणु न मूआ कउणु न मरसी ॥
नानकु नीचु कहै बेनंती दरि देखहु लिव लाई हे ॥ (पन्ना १०२२)

एक परमात्मा ही है जो महिमा के योग्य है। वही गुणवान है जिसकी उपमा की जा सकती है। सर्वत्र उसकी ही महिमा दिखती है, अन्य कोई इस योग्य नहीं है। सच्ची सामर्थ्य और ऋद्धियों-सिद्धियों का स्वामी वही है, जिसकी वंदना की जा सकती है और जिसे अपने जीवन का आधार बनाया जा सकता है। वह अविनाशी है। उसके अतिरिक्त और कौन है जो काल के वश में नहीं है, नाशवान नहीं है? उसकी सच्चाई को उसमें रमकर ही जाना जा सकता है। वह शक्तिशाली और सामर्थ्यवान है इसलिए उससे धन-सम्पदा मांगी जा रही है, प्रतिष्ठा-पद, सत्ता और सुविधा मांगी जा रही है। जो कुछ मांगा जा रहा है वह नाशवान है और मांगा उससे जा रहा है जो सदा अविनाशी है। सच के दरबार में सच का न मांगना निपट मूढ़ता और अज्ञानता का द्योतक है। इसके लिए परमात्मा में रमने की बात

करना एक बड़े धोखे की तरह है जो अपने आप से किया जा रहा है। फलस्वरूप मोह-माया के बंधनों और आवागमन के फेर से मुक्ति नहीं हो रही है। गुरबाणी में बार-बार मनुष्य को सचेत किया गया है ताकि वह सच को पहचान सके। कोई-कोई ही सच को जान पाता है। युग बदलते रहे हैं और अवस्थाएं भी। कलियुग तो अति दुश्वारियों का युग है। श्री गुरु अमरदास साहिब जी के एक शबद में सभी युगों की चर्चा की गयी है। जिसके अनुसार सतयुग में सच का ही बोलबाला था और सभी लोग सच को मानने वाले थे। घर-घर में परमात्मा की भक्ति होती थी। धर्म का संपूर्ण प्रभाव था। परमात्मा में रमकर लोग मुक्ति पा लेते थे आवागमन के चक्र से। इसके बाद त्रेता युग आया जिसमें स्थितियां थोड़ी बदलीं और धर्म के नाम पर पाखंड भी होने लगे। लोग परमात्मा से दूर होने लगे। जिनके मन में परमात्मा का वास था उन्हें ही सुख फल प्राप्त हुआ। अगला युग था द्वापर का जिसने दुविधा और भ्रम को जन्म दिया। धर्म अस्पष्ट होने लगा। उन्हीं लोगों के जीवन का उद्धार हुआ जो सच के मार्ग पर दृढ़ रहे। आज का युग कलियुग है जिसमें धर्म असहाय अवस्था में है। पाखंड, दुविधा-भ्रम पहले से ही थे, माया-मोह की आंधी ने भी धर्म-परिदृश्य को पूरी तरह से अपने प्रभाव में ले लिया है :

कलजुगि धरम कला इक रहाए ॥
इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाए ॥
माइआ मोहु अति गुबारु ॥
सतगुरु भेटै नामि उधारु ॥४॥
सभ जुग महि साचा एको सोई ॥
सभ महि सचु दूजा नही कोई ॥
साची कीरति सचु सुखु होई ॥
गुरमुखि नामु वखाणै कोई ॥ (पन्ना ८८०)

गुरु-वचन के अनुसार माया-मोह का गुबार फैला हुआ है। इस गुबार से सतिगुरु द्वारा बताया सतिनामु आधार ही उबार सकता है। चारों युगों में स्थितियां अलग-अलग रहीं किंतु सच एक ही था। परमात्मा के अतिरिक्त कोई और सच किसी भी युग में व्याप्त नहीं था। हर युग में परमात्मा का गुणगान करने से, उसकी महानता को मन में बसाने से ही सुख प्राप्त हुआ है। स्थितियां बदल जायें, काल बदल जायें, लोग बदल जायें, परमात्मा की महिमा सदा एक-सी है और वही एक अकेली राह है जीवन के उद्धार की।

समस्या तो यह है कि हम असत्य को सत्य करके मान रहे हैं :

मिथिआ वसतु सति करि मानी ॥
हितु लाइओ सठ मूड़ अगिआनी ॥
काम क्रोध लोभ मद माता ॥
कउडी बदलै जनमु गवाता ॥
अपना छोडि पराइऐ राता ॥
माइआ मद मन तन संगि जाता ॥
त्रिसन न बूझै करत कलोला ॥
ऊणी आस मिथिआ सभि बोला ॥ (पन्ना १००४)

मिथ्या को मनुष्य सच मान लेता है। मनुष्य को लगता है कि हीरे-जवाहरात, धन-संपत्ति में सुख है; माता-पिता, भाई, पत्नी, संतान में स्थिरता है; अधिकारों, पद, शक्ति में प्रतिष्ठा है; अपने से बड़े का संग करने में सुरक्षा-आश्रय है। ये सब निर्मल विचार हैं जो मूर्खता और अज्ञान के लक्षण हैं। विकारों के वश में जो इन सब पर अपने जीवन-व्यवहार को टिकाकर सुख की कामना रखता है वह अमूल्य जीवन को कौड़ियों में गंवा देता है। यह अपनी वस्तु को त्यागकर पराई वस्तु के पीछे भागने जैसा है। जीवन मोह-माया में फंसकर मिथ्या वस्तुओं के

पीछे भागने के लिए नहीं है। जीवन सच-परमात्मा को जानने और पाने के लिए है और सुख इसी में निहित है। झूठ की दौड़ कभी न खत्म होने वाली है, कुछ भी करते रहें। अंत में आस खाली ही रह जाने वाली है और सारी भाग-दौड़ व्यर्थ चली जाने वाली है। कितने ही लोगों ने माया के कलोल किए और चले गए। विशाल परिवार और अपार साम्राज्य के स्वामी रावण के घर में कोई दीया बाती करने वाला भी नहीं रहा। कारण था सच को न जान पाना। गुरसिक्ख इस फेर में नहीं पड़ता :

जिह पैडै लूटी पनिहारी ॥
सो मारगु संतन दूरारी ॥१॥
सतिगुर पूरै साचु कहिआ ॥
नाम तेरे की मुकते बीथी जम का मारगु दूरि रहिआ ॥ (पन्ना ३९३)

परमात्मा को पाने की कामना रखने वाला गुरमुख उस राह से दूर ही रहता है जो माया-मोह की राह है, जहां जीवन-लक्ष्य से भटकने का संकट है। वह सतिगुरु द्वारा दी गई शिक्षाओं पर चलकर सफल जीवन की दिशा की ओर ही जाता है जहां सच्चा सुख हासिल है :

नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचारि ॥
इकि आवहि इकि जावही पूरि भरे अहंकारि ॥
मनहठि मती बूडीऐ गुरमुखि सचु सु तारि ॥
(पन्ना २०)

सच की नाव पर चढ़कर अर्थात् परमात्मा की शरण और उसकी कृपा से ही जीवन को सफल किया जा सकता है। इसकी प्रेरणा सतिगुरु से ही प्राप्त होती है। अपनी बुद्धि और ज्ञान से इस राह पर नहीं चला जा सकता। आवागमन के फेर से मुक्ति संभव नहीं होगी। सतिगुरु ही इसमें सहायक हैं :

इसु जुग का धरमु पड़हु तुम भाई ॥
पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥
ऐथै अगै हरि नामु सखाई ॥ (पन्ना २३०)

इस कलियुग में जब स्थितियां एकदम विषम, विकट और माया-मोह के गुबार से परिपूर्ण हैं, सतिगुरु ही सच से जोड़ने में समर्थ है। सतिगुरु ही परमात्मा के निकट ले जा सकता है जो इह लोक और परलोक में भी सहायता करने वाला है। आज हमारे जीवन में कितने अवसर ऐसे आये हैं जब हमने अपनी शंकाओं, समस्याओं के हल श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से खोजने की कोशिश की है। नित्तनेम कर लेना, श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करना ठीक है किंतु जब निर्णय यह है कि समझ सतिगुरु से मिलनी है तो नित्य प्रति जीवन में समय-समय पर निर्णय लेने के लिए क्यों नहीं श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में जाते? क्यों नहीं गुरबाणी के उपदेशों को मानते, ताकि सच दिख सके? यह संसार, जो दिख रहा है, यहां तक कि अपना तन भी सच नहीं है, मिथ्या है, भ्रम है :

साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥
या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥१॥ रहाउ ॥
इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥
संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥
(पन्ना ११८६)

गुरबाणी में नगर और नगर में बने किलों की तरह मानव शरीर को भी एक किले की तरह ही माना गया है जिसमें बाज़ार बसा हुआ है। इसके नौ द्वार परमात्मा ने बनाए हुए हैं और दसवें द्वार में वह स्वयं विराजमान है। मनुष्य का यह तन मिथ्या है, नष्ट हो जाने वाला है। इसी तन के भीतर हरि है। इस सच को जानना है और परमात्मा को पहचानना है।

(शेष पृष्ठ ५९ पर)

श्रम-कार्य की महानता

-प्रो पिआरा सिंघ पदम*

भारत के पुराने धर्म-शास्त्री एवं समाज-शास्त्री, दो ऐसी बड़ी भूलों का शिकार हुए जिन्होंने देश के भविष्य को अपंग बनाकर रख दिया। पहली भूल यह कि बसते-रसते जगत को 'मिथ्या' या 'झूठा' बताकर मनुष्य को सांसारिक कार्य-कलाप से बिल्कुल बेमुख कर दिया तथा धर्म एवं कर्म को अलग-अलग करके बिछोड़ दिया। जिसका मुख्य भाव यह था कि जिसने धर्म की ओर प्रवृत्त होना है, उसको सांसारिक जीवन छोड़ना ही पड़ेगा। परिणाम यह निकला कि लोग काम-काज छोड़कर निठल्ले होकर त्यागी, वैरागी बनते गए और जब अंदर से पेट भूख से पुकारने लगा तो ये भिक्षा मांगने के लिए गृहस्थियों के दरवाजों पर आकर कूक-पुकार करने लगे। दूसरी तरफ यहां के दर्शन शास्त्री भी 'कर्म' को बंधन कहकर उसका तिरस्कार करने लगे। धीरे-धीरे समाज पराधीन होता गया तथा गुलामी की बीमारी गले पड़ गई।

दूसरी भूल यह हुई कि छोटा-मोटा कार्य करने वाले गरीब श्रमकार लोग 'शूद्र' कहकर दुतकारे गए तथा उनको हर प्रकार के धर्म-कर्म तथा राज्य-अधिकार से वंचित रखने के कानून स्मृत्तियों, शास्त्रों द्वारा प्रचारित किये गये। इस बात का तथाकथित उच्च कुल के ब्राह्मणों ने विधि-विधान बनाया, समय के हाकिमों ने उसी को शाही फरमान कहकर लागू करवाया। इस प्रकार इन दो गलत धारणाओं ने भारतीय समाज को अधोगति के रसातल तक पहुंचा दिया और एक तरह से मानवता का गौरव भी घटता-घटता घट गया। जिस समाज में काम-काज की कद्र न हो तथा काम-धंधे को प्रशंसा की दृष्टि से न देखा जाए और फिर काम करने वाले को भी आदर-सम्मान न दिया जाए, वह समाज आगे कैसे बढ़ सकता है? ज्यादा प्रगति करके खुशहाल कैसे हो सकता है?

भक्ति लहर के उदय होने से पूर्व हिंदोस्तान में बड़ी गलती यही घर कर गई थी कि काम करने वाली प्रत्येक श्रेणी 'शूद्र' या 'नीच' कहकर अपमानित की जाती थी। फिर वह हरेक किस्म के अधिकार से हाथ धो बैठती थी। जब समाज में इस प्रकार की असमानता का प्रयोग हो तो इसकी प्रतिक्रिया का होना भी आवश्यक था। मुस्लिम हमलों के समय लाखों श्रमकार लोग अपनी ज़िंदगी को खुशहाल बनाने के लिए, आज़ादी तथा समानता का आनंद लेने के लिए मज़बूरन इसलाम के ध्वज तले चले गए। यह दुर्घटना भारतीय संस्कृति के लिए अत्यंत घातक एवं असहनीय चोट थी। इससे हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि काम-काज या काम-कार करने वालों का अपमान करके कोई भी समाज कभी सुखी नहीं रह सकता।

एक और बात भी विचारने योग्य है कि किसी धर्म-ग्रंथ में किरत-कमाई की महिमा नहीं तथा न ही किसी धर्म-आचार्य ने इसको ज़िंदगी के लिए आवश्यक कहकर प्रचारा, हालांकि हम जानते हैं कि इस सारी सृष्टि का विकास काम-काज पर ही निर्भर रहा है। उद्यमी लोगों ने खेतीबाड़ी की, पशु पालकर दूध पैदा किया, वाणिज्य-व्यापार के

लिए प्रदेशों में सफर किए, गांव-नगर बसाए, कारखाने लगाए तथा अन्य अनेकों सामाजिक विकास के प्रबंध चलाए। ये सब कुछ मानवीय श्रम का ही करिश्मा था। हाथ पे हाथ धरकर कोई भी कार्य संपूर्ण नहीं किया जा सकता। श्रम-कार्य की अनदेखी होने के कारण यहां के लोग धर्म के नाम पर काम-काज छोड़कर, निठल्ले बनकर, जंगलों की ओर प्रस्थान करते जा रहे थे। जहां भी देखो लोगों की टोलियां, बैरागी, सन्यासियों की मंडलियां, नग्न साधुओं के जत्थे तथा जैनी-बौद्धी भिक्षुओं के जमघटे जगह-जगह दिखाई देते थे। ये सारे लोग इधर-उधर तीर्थों पर भटकते या कहीं मंदिरों के पास विचरय करते हुए देखे जाते थे। ये लोग और जाते भी कहां? घर-बार तो छोड़ दिया था तथा काम-काज इनके एजंडे में से वैसे ही खारिज़ था। भूख लगती तो बेहया होकर दर-दर मांगना इनका धर्म-कर्म बन गया था। गृहस्थी लोग भी पुण्य-दान की शिक्षा से प्रभावित होकर ऐसे लोगों को प्रसादा-पानी देना बड़े महात्म की बात समझते थे। इस तरह यह एक ढीठता का कार्य-व्यवहार चिरकाल तक चुपचाप चलता रहा। कौन रोकता और कौन टोकता? अपनी तरफ से तो दोनों वर्ग के लोग धर्म-कर्म निभा रहे थे, किंतु थे दोनों ही धर्म से कोसों दूर।

श्री गुरु नानक साहिब ने सारी दुर्दशा को देश भर में चल-फिरकर अच्छी तरह देखा। जगह-जगह यह बीमारी फैली हुई थी, निठल्ले रहकर खाने की तथा इस तरह का कूड़-धर्म कमाने की। आपने अपने नये धर्म के बुनियादी सूत्र में ये तीन बातें रखीं-- नाम जपना, किरत करना, वंड छकणा। इस तरह उन्होंने बड़ी सूझ से विलक्षण रीति अपनाकर नाम जपने वाले धर्मी पुरुषों के लिए किरत-कमाई करना ज़रूरी करार दिया तथा दूसरी तरफ किरत करने वाले गृहस्थियों को नाम-सिमरन का संदेश देकर परमार्थ-मंडल से जोड़ दिया। भक्ति लहर में चाहे और भी अनेक संत, भक्त हुए परंतु वे इस प्रकार के सुधार के लिए सावधान नहीं थे। दूसरी तरफ श्री गुरु नानक साहिब ने चेतन तौर पर किरत एवं कीरत को जोड़कर एक नयी क्रांति का आरंभ किया।

ऐसा होने से धर्म एवं कर्म करने वाले दोनों का आदर-सम्मान होने लगा। समाज का रथ इस तरह ही चल सकता था। जो लोग निठल्ले रहकर खुद को बड़े धर्मात्मा, मंडलेश्वर सिद्ध करते थे, उनकी एक तरह से शामत आ गई। सतिगुरु ने बड़ी दिलेरी से इन भिखारी साधों को फटकार लगाते हुए फरमाया कि अब मांग कर खाने का कार्य नहीं चलेगा। यह गलत है कि निठल्ले बनकर उम्र व्यतीत की जाए तथा पूजा कराई जाए। असल रास्ता श्रम-कमाई करने का है। अगर यह रास्ता अपनाओगे तो ही आपका तथा सारे समाज का कल्याण संभव है। आप जी फरमान करते हैं :

गिआन विहूणा गावै गीत ॥
भुखे मुलां घरे मसीति ॥
मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥
फकरु करे होरु जाति गवाए ॥
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

दुनिया को ज्ञान देते फिरना तथा मांगते फिरना, इन दोनों बातों का आपस में मेल नहीं, यह तो सचमुच अपमान वाली बात है :

घरि घरि मागै जगु परबोधै मनि अंधै पति हारी ॥
भरमि भुलाणा सबदु न चीनै जूऐ बाजी हारी ॥
(पन्ना १०१२)

श्री गुरु नानक देव जी ने जो दिशा दी, उनके बाद के गुरु साहिबान ने इसे और दृढ़ करवाया। श्री गुरु अमरदास जी ने भेखी साधुओं को आड़े हाथों लिया तथा कहा कि मात्र भगवा भेस धारण करने से धर्मात्मा नहीं बना जा सकता। हठ कर-कर मांगना कहां का शिष्टाचार और कहां की समझदारी है? क्या धर्म यही सिखाता है?

सतिगुरि मिलिऐ भुख गई भेखी भुख न जाइ ॥
दुखि लगै घरि घरि फिरै अगै दूणी मिलै सजाइ ॥
अंदरि सहजु न आइओ सहजे ही लै खाइ ॥
मनहठि जिस ते मंगणा लैणा दुखु मनाइ ॥
इसु भेखै थावहु गिरहो भला जिथहु को वरसाइ ॥
(पन्ना ५८६)

कई अपने आप को 'अभ्यागत' कहकर अपना मान-तान कराते थे ताकि गृहस्थी लोग अच्छी सेवा-टहल करें, किंतु गुरु साहिब इस प्रपंच के भी विरुद्ध थे। उनका एतराज़ था कि क्या केवल किसी बेगाने घर में रोटी खाने-मात्र से ही माननीय मेहमान (अभ्यागत) बना जा सकता है?

अभिआगत एहि न आखीअनि जि पर घरि भोजनु करेनि ॥
उदरै कारणि आपणे बहले भेखि करेनि ॥
अभिआगत सेई नानका जि आतम गउणु करेनि ॥
भालि लहनि सहु आपणा निज घरि रहणु करेनि ॥
(पन्ना ९४९)

ऐसी सुधारक शिक्षाएं देकर गुरु साहिबान ने पाखंडी साधुओं को मांगकर खाने की जिल्लत भरी आदत से रिहाई दिलाकर किरत-कमाई की तरफ लगाया ताकि ये समाज के लिए बोझ न होकर 'आदर्शक साधु' बनकर प्रेरणादायक हो सकें।

किरत (श्रम) की अपने आप में एक महत्ता है कि कठिन श्रम करने वाले प्राणी की काया (शरीर) स्वस्थ रहती है। प्राकृतिक व्यायाम हो जाने से अंग-अंग हरकत में आता है जो शरीर को स्वस्थ रखता है। जो लोग काम से भागते हैं वही लोग प्राय: तरह-तरह के रोगों का शिकार होते देखे जाते हैं। प्रो. पूरन सिंघ ने एक जगह पर बहुत अच्छा लिखा है- "एक आदमी जो स्वभाव से अपने काम में हर वक्त ध्यानपूर्वक लगा रहता है। उसको बुरा सोचने तथा दुष्कर्म करने की फ़ुर्सत ही नहीं मिलती। ज्ञानवानों ने कहा है कि निकम्मा मन शैतान की टकसाल हो जाता है। इसमें बहुत सत्य भरा हुआ है।"

और देखें, अमीर आदमी अपने निठल्ले मन को बहलाने के लिए शराबनोशी, सिगरेटनोशी, जुएबाज़ी, ताश की बाज़ी, होटलों की चक्रबाज़ी, फिल्में देखना या अन्य रंग-तमाशे देखने के लिए इधर-उधर भटकता रहता है जबकि काम-काज में मगन गरीब श्रमिक ऐसा करने की ज़रूरत ही नहीं समझता। वह अपनी किरत को ही मौज़-मेले का साधन तथा इसी को ही आत्मा को शांति देने वाली रब्बी (ईश्वरीय) पूजा मानता है। इसीलिए हेनरी फोर्ड ने कहा था, किरत-कमाई ही सच्ची रूहानियत है। कारलाइल का वचन भी शत-प्रतिशत सत्य है, कि जिसको कोई करने योग्य काम मिल गया, समझो उसको रूह मिल गई।

किरत-कार कोई व्यर्थ की वस्तु नहीं, बल्कि मनुष्य का जिगरी दोस्त तथा ज़िंदगी का सदा का सहारा है। इसी लिए गुरु साहिब ने किरती (श्रमिक) को आशीर्वाद देते हुए फरमाया है :

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥
(पन्ना ५२२)

श्री गुरु नानक साहिब ने जहां श्रम और श्रमकार को उचित स्थान देकर सम्मानित किया, वहां श्रमिक के साजो-सामान के प्रतीकों द्वारा आध्यात्मिक तथा धार्मिक शिक्षा देकर इसके गौरव में इज़ाफा किया। बाणी में किसान का, स्वर्णकार तथा सौदागर का, गोले तथा सेवक का रूपक अनेक जगह प्रयोग में लाया गया है, जैसा कि :

-मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥
(पन्ना ५९५)

-अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥
होइ किरसाणु ईमानु जंमाइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥ *(पन्ना २४)*

-भउ भुइ पवितु पाणी सतु संतोखु बलेद ॥
हलु हलेमी हाली चितु चेता वत्र वखत संजोगु ॥
नाउ बीजु बखसीस बोहल दुनीआ सगल दरोग ॥
नानक नदरी करमु होइ जावहि सगल विजोग ॥
(पन्ना ९५५)

-जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥
भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥ *(पन्ना ८)*

-मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा ॥
गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइआ तितु लागा ॥१॥ . . .
पीअहि त पाणी आणी मीरा खाहि त पीसण जाउ ॥
पखा फेरी पैर मलोवा जपत रहा तेरा नाउ ॥
(पन्ना ९९१)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आई भक्त-बाणी में भी यह तरीका बरता गया है ताकि किरत का रुतबा मान-सम्मान वाला हो। कुछ उदाहरण ध्यान देने योग्य हैं :

मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥
मपि मपि काटउ जम की फासी ॥१॥
कहा करउ जाती कह करउ पाती ॥
राम को नामु जपउ दिन राती ॥१॥ रहाउ ॥
रांगनि रांगउ सीवनि सीवउ ॥
राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥२॥ . . .
सुइने की सूई रुपे का धागा ॥
नामे का चितु हरि सउ लागा ॥४॥
(पन्ना ४८५)

भक्त कबीर जी ने अपने छोटे-से व्यवसाय को इतना बड़ा बनाकर पेश किया कि लोग हैरान रह गए :

कोरी को काहू मरमु न जानां ॥
सभु जगु आनि तनाइओ तानां ॥१॥ रहाउ ॥ . . .
धरनि अकास की करगह बनाई ॥
चंदु सूरजु दुइ साथ चलाई ॥२॥
पाई जोरि बात इक कीनी तह तांती मनु मानां ॥
जोलाहे घरु अपना चीन्हां घट ही रामु पछानां ॥३॥
कहतु कबीरु कारगह तोरी ॥
सूतै सूत मिलाए कोरी ॥ *(पन्ना ४८४)*

जैसे कपड़ा जिस-जिस किस्म के कारीगरों के हाथों से निकलकर पोशाक का रूप धारण करता है, वो भी गुरु साहिब ने विवरण सहित चित्रित किया है ताकि ज़िंदगी को भी इसी तरह संवारा जाए :

वेलि पिंञाइआ कति वुणाइआ ॥
कटि कुटि करि खुंबि चड़ाइआ ॥
लोहा वढे दरजी पाड़े सूई धागा सीवै ॥
इउ पति पाटी सिफती सीपै नानक जीवत जीवै ॥
(पन्ना ९५५)

भक्त रविदास जी ने व्यवसाय के औज़ारों का अभाव बताकर अपनी नम्रता प्रकटायी है

कि मैं तो मामूली-सा चमरेटा हूं :

चमरटा गांठि न जनई ॥
लोगु गठावै पनही ॥१॥ रहाउ ॥
आर नही जिह तोपउ ॥
नही रांबी ठाउ रोपउ ॥१॥
लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥
हउ बिनु गंठे जाइ पहूचा ॥२॥
रविदासु जपै राम नामा ॥
मोहि जम सिउ नाही कामा ॥ *(पन्ना ६५९)*

व्यवसायी लोगों के कामों या औज़ारों का ज़िक्र अन्य धर्म-शास्त्रों में नहीं आता था। गुरु साहिबान ने गूढ़ आध्यात्मिक विषयों को इन जाने-पहचाने औजारों द्वारा वर्णन करके जहां जनसाधारण को आसानी से समझा दिया, वहीं श्रमिक वर्ग का रुतबा भी बढ़ा दिया। यह कोई गरीब निवाज़ ही कर सकता था :

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥
(पन्ना ११०६)

यह ठीक है कि यह जगत कुदरत (प्रकृति) की कलाकारी का करिश्मा है किंतु किरती (श्रमिक) की कारीगरी ने जो इसमें बढ़ावा किया, वह भी बयान करने से बाहर है। इसको श्रमकार का कमाल कहना ही बनता है।

सतिगुरु साहिबान की कृपा का बल है कि उन्होंने श्रम को धार्मिक कार्य का अंग बनाकर निठल्ले समाज के बढ़ावे को मात दी। फिर यह भी कहा कि नाम-सिमरन करने के लिए, श्रम-कार्य को छोड़ना ज़रूरी नहीं, बल्कि यह दृढ़ करवाया कि अच्छा मनुष्य वही है जो *"हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि"* की रीति अपनाए। इससे भी आगे श्रम करके बांटकर छकना बहुत ज़रूरी धर्म-कर्म है जो परोपकारी बनकर समाज-सेवा की पूर्ति करता है, दानियों का सदावर्त लाने, खैरात देने या पुण्य-दान की रीति एक को भिखारी दूसरे को दानी बनाकर हीन-भाव तथा अहं-भाव पैदा कर असमानता लाती है। गुरु जी ने *"घालि खाइ किछु हथहु देइ"* की शिक्षा देकर लोगों को इस रोग से बचा लिया। सिक्ख दीवान में इसकी मिसाल प्रत्यक्ष रूप में दिखाई जाती है कि जो गुरु महाराज को प्रसाद भेंट हो, वह अरदास करके सबको बराबर का एक जैसा बांट दिया जाता है। इस बात का भेद श्री गुरु नानक साहिब ने 'सच्चा सौदा' कर समझा दिया था कि प्रत्येक भूखे एवं ज़रूरतमंद के साथ बांटकर छकना एक प्रकार की ऊंची परोपकारी किरत है। एक बार सिद्धों ने सवाल करके इस सम्बंधी शंका भी खड़ी की कि बांटकर छकने का काम व्यवहारिक नहीं। उन्होंने गुरु साहिब के आगे एक तिल भेंट करके कहा कि इसको हमें बांटकर दिखाओ। सतिगुरु ने उनके मज़ाक पर रोष नहीं किया, बल्कि भाई मरदाना जी को कहा कि इस तिल को पत्थर पर रगड़कर थोड़ा जल डालो तथा आए हुए सिद्धों को छका दो। भाई मरदाना जी ने ऐसे ही किया। साथ ही गुरु जी ने फरमान किया कि संसार बांटकर छकने की रीति अपनाये बिना सुखी नहीं रह सकेगा तथा यह रीति जैसे-कैसे हर जगह पहुंचकर रहेगी।

अनुवादक : स. गुरप्रीत सिंघ भोमा

रुखी सुखी खाइ कै . . .

*-स. सुरिंदर सिंघ निमाणा**

भोजन सभी जीवों सहित मनुष्य की भी मूल आवश्यकता है। गुरमति में व्रत रखने तथा भूखे रहने का स्पष्ट विरोध एवं खंडन है :

अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥
बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥ (पन्ना ४६७)

गुरमति चिंतन हर पक्ष से उचित तथा इच्छित समन्वय कायम करता है। गुरमति द्वारा हमें यह मार्ग दर्शाया गया है कि हमने भोजन कैसा करना है। इस विलक्षण विश्व-दर्शन में सादा खान-पान के पक्ष में हमारा आदर्श पथ-प्रदर्शन किया गया है। समय या काल-खंड की दृष्टि से गुरमति दर्शन की अमूल्य निधि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकारों में सबसे प्रथम बाणीकार भक्त शेख़ फरीद जी 'शकरगंज' हैं। वे अरबी-फारसी भाषा के भी ज्ञाता थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज उनकी बाणी में से एक सलोक हमारे खान-पान की मर्यादा एवं मन की संतुष्टि के लिए अगुआई करता है :

रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ॥
फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥
(पन्ना १३७९)

इससे पहले के दो सलोक भी भक्त शेख़ फरीद जी द्वारा मानवता के किए गए पथ-प्रदर्शन को और अधिक स्पष्ट कर देते हैं :

फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिओ मांझा दुधु ॥
सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु ॥२७॥
फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ॥
जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ॥२८॥
(पन्ना १३७९)

'रुखी सुखी' (रूखी-सूखी) वाले पावन सलोक में 'ठंढा पाणी' पीने की भी प्रेरणा है। 'रोटी मेरी काठ की' का तात्पर्य लकड़ी के समान बनी सख़्त रोटी से है, लकड़ी से बनी रोटी से नहीं। निष्कर्ष रूपी दूसरी पावन पंक्ति में 'चोपड़ी' रोटी खाने वाले लोगों द्वारा गहरे दुख सहन् करने का तथ्य भी अंकित है।

कुछ एक प्रश्न जिज्ञासु के मन में उत्पन्न होने यहां पर संभावित हैं, जैसे क्या लकड़ी जैसी सख़्त रोटी खाने से ही भूख मिटने का महत्त्व है? क्या चोपड़ी रोटी खाने वाले लोग सचमुच ही दुख सहन् करते हैं? यहां वास्तविक रूप में लकड़ी जैसी सख़्त रोटी खाने से भक्त शेख़ फरीद जी का भाव सादा खाना खाने से है जिसमें अनावश्यक रूप में घी तथा मसाले आदि का प्रवेश न हो। चोपड़ी रोटी भी केवल जीभ के स्वाद वाले व्यंजनों की तरफ ही संकेत करती है। कहने से भाव यही है कि यदि हम केवल स्वाद की ही खातिर घी तथा मसालों आदि वाला भोजन खाने को प्रमुखता देते हैं, तो हम शारीरिक अस्वस्थता का शिकार हो जाते हैं तथा फिर शारीरिक कष्टों में उलझकर सही (आत्म) मार्ग से भटकने की दलदल में गलतान हो जाते हैं।

निष्कर्ष रूप में इसका यही प्रयोजन है कि हम जीभ के केवल स्वाद के अनावश्यक प्रभाव में न आएं। हमने शरीर को स्वस्थ तथा

**मुख्य संचालक, ऐवरग्रीन साइंस एण्ड स्पोर्ट्स स्कूल, अच्चल साहिब, चाहल कलां (गुरदासपुर)-१४३५०५*

क्रियाशील रखने में आवश्यक भोजन तो लेना ही है, लेकिन ऐसे भोजन से सावधान भी रहना है, जो हमारी शारीरिक प्रणाली में बिगाड़ पैदा करने वाले हो और साथ ही हमारे घरेलू बजट को प्रभावित करता हुआ हमारी आर्थिक स्थिति के डगमगा जाने का कारण भी बन सकता हो। हमारी जानकारी में ऐसे लोग तो हैं ही जो केवल जीभ के स्वाद में गलतान होकर अपने शारीरिक स्वास्थ्य को बिगाड़ चुके हैं, भले ही वे आर्थिक रूप से सम्पन्न हैं तथा घरेलू बजट का संतुलन बनाए रखने में सक्षम भी।

आज विश्व भर में मोटापे की समस्या काफी ज्यादा है। हमारा देश भी अब मोटापे की समस्या से पीड़ित होने वाले देशों में शामिल हो चुका है। दरअसल जिन लोगों के पास आवश्यकता से ज्यादा धन है वे खाते बहुत हैं और शारीरिक श्रम बिलकुल नहीं करते। ज़रूरत से ज्यादा खाकर ऐसे लोग मोटापे के साथ-साथ अन्य अनेकों बीमारियों को भी बुलावा देते हैं। वे मानसिक तृप्ति तथा आत्मिक संतुष्टि से बहुत दूर रहकर प्राय: दुख ही भोगते हैं। निष्कर्षत: रूखी-सूखी खाकर, ठंडा (सादा, ताजा) पानी पीकर सादा जीवन गुज़ारते हुए, गुरमति मार्ग के राही बन सुखी तथा प्रसन्नचित्त रहने की प्रेरणा है आदर्श मानव जीवन-यापन के लिए।

स्रिसटि उपाइ आपे सभु वेखै ॥

(पृष्ठ ५२ का शेष)

तन और संसार के पदार्थ साथ नहीं जाने वाले। सहायक परमात्मा है जो सदा साथ है।

अंतर के परमात्मा को पहचान लेना सच को जान लेना है, जिससे मन स्वयं ही मोह-माया से दूर हो जाता है। यही गुरसिक्खी का मार्ग है। कैसे विश्वास हो कि मन मोह-माया से दूर सच में जा समाया है? इसका समाधान इस अवस्था में दिखता है :

ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥
मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥१॥
स्रवन सुनीजै अंम्रित कथा ॥
जासु सुनी मनि होइ अनंदा दूख रोग मन सगले लथा ॥१॥ रहाउ ॥
कारजि कामि बाट घाट जपीजै ॥
गुर प्रसादि हरि अंम्रितु पीजै ॥२॥
दिनसु रैनि हरि कीरतनु गाईऐ ॥
सो जनु जम की वाट न पाईऐ ॥३॥
आठ पहर जिसु विसरहि नाही ॥
गति होवै नानक तिसु लगि पाई ॥
(पन्ना ३८६)

किसी भी समय परमात्मा विस्मृत न हो जाये। उठते-बैठते, सोते-जागते, उसकी महिमा चेतना में रहे। उसकी कथा सुनकर मन में जो आनंद उपजे वह किसी अन्य कार्य में न आए। हर समय परमात्मा के साथ प्रीति बनी रहे तो समझें कि सच का ज्ञान हो गया है।

उसे देखा नहीं जा सकता, वह अगोचर है। उस तक पहुंचा नहीं जा सकता, वह अगम्य है। वह महान और सच्चा है, शेष सब झूठ है :

अगम अगोचरु अपर अपारा पारब्रहमु परधानो ॥
आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सभु मानो ॥
(४३७)

सच, मन को आनंद से भर देता है और सारे रोग, दुख, संताप मिट जाते हैं।

अंम्रित नामु परमेसरु तेरा . . .

*-डॉ. अमृत कौर**

अंम्रित नामु परमेसरु तेरा जो सिमरै सो जीवै ॥
(पन्ना ६१६)

सिक्ख चिंतनधारा के अनुसार सृष्टि का निर्माण अमृत स्वरूप नाम-शक्ति द्वारा हुआ है-- *"नामै ही ते सभु परगटु होवै नामे सोझी पाई ॥"* परमात्मा ने सुन्न समाधि की अवस्था के उपरांत सर्वप्रथम नाम-शक्ति का सृजन किया-- *"आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥"* फिर प्रभु की इस दैवी सृजनात्मक शक्ति द्वारा संपूर्ण सृष्टि ने आकार ग्रहण किया। संपूर्ण संसार 'नाम' का प्रसार है, विकास और प्रकाश है :

बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर ॥
कीने राम नाम इक आख्यर ॥ (पन्ना २६२)

'नाम' सर्व सांसारिक जीवन-ज्योति है, सर्व सांसारिक जीवन धारा है; मानव के लिए परमात्मा द्वारा प्रदान की गई अमृतदायिनी शक्ति है; मानव-जीवन के लिए अमृत की भांति कल्याणकारी, सत्य, सुंदरता, आनंद, चढ़दी कला का स्रोत है, आध्यात्मिक, मानसिक, शारीरिक शक्तियों का स्रोत है। 'नाम' प्रभु की भांति सर्वत्र भरपूर है :

नाम के धारे सगले जंत ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥
नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान ॥ . . .
करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥
नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥
(पन्ना २८४)

नाम-सिमरन की महिमा अपर अपार है। इसके द्वारा आत्मा और परमात्मा के मिलन में बाधक हउमै की दीवार को तोड़ा जा सकता है-- *"नामे राते हउमै जाइ ॥"* तमोगुण, रजोगुण आत्मा को परमात्मा से दूर ले जाते हैं। नाम-सिमरन द्वारा प्राप्त सतोगुण (सत्वगुण) परमात्मा के मिलन में सहायक है। 'नाम' प्रभु से वार्तालाप करने का साधन है। नाम-सिमरन द्वारा हउमै को दैवी हुक्म में बदला जा सकता है :

नामु पदारथु नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ ॥ (पन्ना १२८)

जब आत्मा और परमात्मा के मध्य में आने वाली झूठ की मैल, हउमै की दीवार नाम-सिमरन द्वारा टूट जाती है तो मानव-आत्मा जागृत हो जाती है, मनुष्य सचियार बन कर आंतरिक तीर्थ में स्नान करता है :

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥ (पन्ना ७९५)

नाम की अनुभूति के द्वारा त्रिगुणातीत होकर जब सहज अवस्था की प्राप्ति होती है तो आत्मा प्रसन्नता में झूमकर पुकार उठती है :

माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥
मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥
(पन्ना ११८६)

'नाम' निर्गुण और समुण दोनों है। सगुण रूप में संसार प्रभु के नाम का प्रसार है। निर्गुण रूप में वह अपने आपको शुभ कर्मों में अभिव्यक्त करता है। 'नाम' की पूजा का अर्थ है अपने आपको शुभ कर्मों में प्रवृत्त करना, ध्यान, मनन, कीर्तन, निष्काम सेवा, दैवी हुक्म, रजा, दैवी धुन, आत्म-अनुशासन, सार्वभौमिक प्यार का जीवन में विकास करना। 'नाम' के मन में बसने से

***१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०४ (पंजाब), फोन : ९८१५१-०९९५७*

आत्मा पवित्र नाम के गुणों से भरपूर हो जाती है। ऐसे मनुष्य सचखंड के निवासी बनते हैं, जिन्हें गुरबाणी में संत-जन, योगी-जन, भक्त, अवतार, ज्ञानी, गुरमुख के नाम से पुकारा जाता है। जिनका जीवन 'नाम' के रंग में रंग जाता है, उनकी आत्मा नूरो-नूर हो जाती है।

गुरबाणी में 'नाम' के लिए शबद, सच, हुक्म, बाणी, गुरबाणी आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। जपु जी साहिब में 'नाम' को अमृत, निरंजन, सतिनाम कहा गया है। 'नाम' के लिए हरि-नाम, राम-नाम, अमृत-नाम, केवल नाम, रतन-नाम शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। *"सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥"* भी कहा गया है। सुखमनी साहिब में इसे पारजात कामधेनु भी कहा गया है, जो इंसान की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है :

-पारजातु इहु हरि को नाम ॥
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥
सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥ (पन्ना २६५)

मानव शरीर हरिमंदर है : *"हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआन रतनि परगटु होइ ॥"*

परमात्मा की नाम-शक्ति आदि, अनंत, अदृश्य, अलख, अगम है। यह नेत्रों से दिखाई नहीं देती। 'नाम' हमारे अंदर सुप्त अवस्था में रहता है :

अंतरि अलखु न जाई लखिआ ॥
नामु रतनु लै गुझा रखिआ ॥ (पन्ना १३०)

सतिगुरु की कृपा द्वारा, सतिगुरु के पथ-प्रदर्शन द्वारा, नाम-सिमरन द्वारा, भक्ति द्वारा *"आतम महि परमातम"* तक पहुंचा जा सकता है। नाम-सिमरन द्वारा परमात्मा की विशेषताओं को अपने अंदर प्रफुल्लित और विकसित किया जा सकता है। हरि-नाम सच्चाई, सुंदरता, पवित्रता की उपजाऊ शक्ति है, जीवनदायिनी शक्ति है। हरि-नाम का सिमरन करना परमात्मा का साथी बनकर जीना है। नाम-सिमरन द्वारा भक्ति करना प्रभु के गुणों, विशेषताओं पर विचार कर उस जैसा बनने का प्रयास करना है :

जैसा सेवै तैसो होइ ॥ (पन्ना २२३)

नाम-सिमरन करना, जप करना भक्ति है। नाम-सिमरन धुर अंदर आत्मा में गुंजरित होने वाली जीवन-धारा बन जाए तो कंचन-सी काया का निर्माण होता है :

आतम उपदेश भेस संजम को जापु सु अजपा जापे ॥
सदा रहै कंचन सी काया काल न कबहूं बयापे ॥
(दसम ग्रंथ)

प्रभु का नाम-सिमरन ज्ञान, ध्यान और मानसिक शक्ति प्रदान करता है। नाम-सिमरन का अर्थ है-- मन, वचन, कर्म द्वारा आत्मा का परमात्मा के साथ संयुक्त होना। सिमरन अपने मूल (प्रभु) की निरंतर याद का अभ्यास है जिसके द्वारा अज्ञान का अंधेरा मिट जाता है और परमात्मा समीप दिखाई देता है :

आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥
मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥ (पन्ना २९३)

नाम-सिमरन द्वारा जीवन में दैवी गुणों का विकास होता है, असंभव काम संभव हो जाते हैं। प्रभु-नाम की महिमा गुरबाणी में खूब पाई जाती है। श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार वास्तविक पढ़ा-लिखा, पंडित वह मनुष्य है जो प्रभु-नाम के सिमरन द्वारा अपने मन को जागृत करता है :

सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥
राम नामु आतम महि सोधै ॥
राम नाम सारु रसु पीवै ॥
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥ (पन्ना २७४)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार वास्तविक पढ़ा-लिखा व्यक्ति वह है, जिसके गले में प्रभु-नाम की माला है, हार है :

नानक सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिसु राम

नामु गलि हारु ॥ *(पन्ना ९३८)*

नाम-सिमरन, शबद-कीर्तन परमात्मा के समीप पहुंचने के प्रयास हैं, जिससे आत्मा परमात्मा के चरणों में जुड़ जाती है। 'नाम' जीवन-संगीत है। हरि-नाम की धुन हम सब के अंदर दैवी नाद है, रूहानी संगीत है :

. . .घटि घटि वाजहि नाद ॥ *(पन्ना ६)*

'नाम' या दैवी संगीत को बाहर की दुनिया में कीर्तन के रूप में सुना जा सकता है। निरंतर हरि-नाम-सिमरन के जप द्वारा जब आंतरिक नाद और बाहरी संगीत तक लय, एक रूप बन जाते हैं तो मनुष्य का अंतःकरण दैवी आनंद से भर जाता है। मन मतवाला होकर अमृत के घूंट भरता है।

मनुष्य का रोम-रोम हरि का सिमरन करने लगता है-- *"गुरमुखि रोम-रोम हरि धिआवै ॥"* उसका आंतरिक संगीत बाहरी संगीत के साथ ताल मिलाकर दैवी संगीत बन जाता है। उसकी हउमै की दीवार टूट जाती है, चारों ओर परमात्मा का जलवा दिखाई देता है :

कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥ *(पन्ना १३७५)*

ऐसे में प्रभु और भक्त एक बन जाते हैं। सब अंतर मिट जाते हैं। यह आत्मा और परमात्मा की एकाकार की भावना भक्ति द्वारा, नाम-सिमरन द्वारा संभव है।

नाम-सिमरन द्वारा, निर्मल मन द्वारा, भक्त भगवान को वश में कर लेता है :

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥
(पन्ना १३६७)

मनुष्य जब अपने भीतर बसते नाम-खज़ाने को खोज लेता है तब उसकी अंतरात्मा में रिमझिम अमृत-धारा बरसती है। इस अमृत-धारा को पीकर उसकी आत्मा तृप्त हो जाती है, शरीर कंचन बन जाता है :

अंतरि कमलु प्रगासिआ अंम्रितु भरिआ अघाइ ॥
(पन्ना २२)

जब यह आंतरिक ज्योति नाम-सिमरन द्वारा प्रकाशित हो जाती है तो मनुष्य अमूल्य बन जाता है। नाम-शक्ति द्वारा जागृत उसकी अंतरात्मा उसकी प्रेरणा बन जाती है। उसमें शुभ गुणों का विकास होता है जो उसे शुभ मार्ग पर अग्रसर करते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी ने जपु जी साहिब में नाम-सिमरन के लिए तीन साधन बताए हैं-- गायन, मनन एवं श्रवण। (प्रभु की कीर्ति के) गायन, मनन, श्रवण के द्वारा आलौकिक, आनंद की प्राप्ति होती है। गायन, मनन एवं श्रवण द्वारा जीवन में सत्य, संतोष और ज्ञान के गुण प्रफुल्लित होते हैं।

ऐसे में भक्त जीवन की संपूर्ण आंतरिक शक्तियां हरि-नाम पर केंद्रित करता है, परमात्मा के साथ एकसुर, एकसार होकर दुख और पापों से ऊपर उठकर सत्य, संतोष, ज्ञान को जीवन में विकसित कर असीम आनंद का अनुभव करता है।

प्रभु-गुणों, प्रभु-कीर्ति, प्रभु-नाम का केवल गायन, मनन, श्रवण ही काफी नहीं, उसे क्रियात्मक रूप से जीवन में ढालना भी ज़रूरी है। प्रभु-नाम के गायन, मनन, श्रवण का अर्थ है-- निराकार सेवा, दैवी ज्ञान, आत्म अनुशासन सार्वभौमिक प्यार आदि शुभ गुणों का जीवन में विकास करना।

'नाम' में दुखों को सुखों में बदलने की शक्ति है। गर्म लोह पर बैठने की, आरे से अपने शरीर को चिरवाने की, देग में उबलने की, दीवारों में खुद को चिनवाए जाने की, ज़िंदा खोपरी उतरवाने की, बंद-बंद कटवाने की सामर्थ्य प्रभु-नाम द्वारा ही प्राप्त होती है।

पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर नशों के सेवन से होने वाली हानियां

-स. गुरदीप सिंघ*

नशे का इस्तेमाल हमारे समाज में काफी लंबे समय से चलता आ रहा है। आजकल इसका सेवन भयंकर रूप ले चुका है। वर्तमान समय में नशों का इस्तेमाल हमारे समाज में काफी तेजी से बढ़ रहा है। खास तौर पर आजकल की नौजवान पीढ़ी में यह लत ऊंचे स्तर पर पहुंच चुकी है। कई लोगों को यह गलतफ़हमी होती है कि नशा करने से उनका स्वास्थ्य ठीक रहता है। यह गलतफ़हमी उनके लिए घातक सिद्ध होने लगती है। नशा जब दिमाग में दाख़िल हो जाता है तो यह हमारी सोचने की शक्ति एवं याददाश्त को कम कर देता है। कई नशे शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के रोगों को न्योता देते हैं। इसके अतिरिक्त नशे का हमारे जीवन के अन्य पहलुओं, जैसे व्यवसाय, पारिवारिक रिश्तों, आर्थिक और सामाजिक सम्बंधों पर भी बुरा असर पड़ता है।

समाज में नशेड़ी लोगों ने अपनी इस गलत आदत पर परदा डालने के लिए नशा करने के मानसिक, शारीरिक और सामाजिक अनेकों कारण बना रखे हैं, जैसे :-

- आराम महसूस करने के लिए
- चिंता और मुसीबतों को भुलाने के लिए
- मानसिक रोगों से छुटकारा पाने के लिए
- दोस्तों के दबाव में आकर या फिर उनका साथ देने के लिए
- ड्राइविंग में अपनी ध्यान-शक्ति बढ़ाने के लिए
- परिवार में तनाव और परेशानियां आने पर
- शारीरिक बल को बढ़ावा देने के लिए।

ऐसे बेहूदा कारणों के बहकावे में आकर जब कोई व्यक्ति नशा लेना शुरू करता है तो धीरे-धीरे इसकी लत पक्की होती जाती है। नशेड़ी व्यक्ति के बारे में कुछ निशानियों से अनुमान लगाया जा सकता है, जैसे :-

- धड़कन बढ़ना
- भूख न लगना
- नींद न आना
- बिना कारण सुस्त रहना
- हाथ-पांव ठंडे हो जाना या ताप निकलना
- हर समय खांसी-जुखाम लगे रहना
- हाथों-पांवों का कांपना
- ज्यादा पसीना आना या घबराहट होना
- चेहरे का रंग पीला या लाल होना
- आंखों में बेवजह पानी आना
- तेज वाहन चलाना
- टीके के निशान बाजू के नीचे के हिस्से में या पैरों के नीचे मिलना
- ध्यान न लगाना
- जिम्मेदारियों को न निभाना
- बिना वजह पैसे मांगना, चोरी करना, घर का सामान बेचना
- चक्कर आना, सिर भारी होना
- हाथों, दांतों पर दाग पड़ना
- मुंह से दुर्गंध आना

नशा बसे-बसाए परिवार को बुरी तरह से तोड़ देता है। परिवार शारीरिक और मानसिक

*३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१२६६९०

हिंसा का शिकार हो जाता है। घरेलू झगड़ों में सबसे अधिक नुकसान बच्चों का होता है। प्राय: वे ऐसे तनाव से बचने के लिए नशे का सहारा लेते हैं। जिन परिवारों में ज्यादा कलह होती है प्राय: देखा गया है कि उनके बच्चों में नशे का इस्तेमाल ज्यादा होता है। दुर्भाग्यवश बच्चे परिवार के गलत माहौल से बचने की कोशिश में नशे की चपेट में आ जाते हैं।

नशा करने वाले व्यक्ति दिन भर नशे के बारे में ही सोचते रहते हैं और दिनचर्या खराब कर लेते हैं। नशा करने वाले अपने घर की जमा-पूंजी को खत्म कर देते हैं। जब पैसे खत्म हो जाते हैं तो वे जुर्म का रास्ता अपना लेते हैं। नशे की पूर्ति के लिए जुर्म की नई-नई स्कीमें बनाते रहते हैं। इस तरह नशा करने वालों की सारी ज़िंदगी परेशानियों में ही गुज़रती है।

शौक के तौर पर शुरू हुआ नशा धीरे-धीरे लत बन जाती है। नशेड़ी व्यक्ति सोचने-समझने की शक्ति खो बैठता है। उसके अंदर गुस्सा और नफ़रत पैदा हो जाती है। कई ऐसे भी कारण हैं जिनसे नशों का सेवन बढ़ रहा है। सहन-शक्ति का कम होना, सोचने-समझने की शक्ति का कम होना, ज्यादा समय तक खाली रहना आदि कारण व्यक्ति को नशे की ओर लेकर जाते हैं। सबसे अधिक जुर्म नशे की वजह से ही होता है। नशे को पाने के लिए लूटमार, चोरी आदि अपराध करना आम बात हो गई है।

नशा करने वाला व्यक्ति आर्थिक, शारीरिक और मानसिक रूप से खोखला हो जाता है। ऐसे व्यक्ति से कोई भी सम्बंध नहीं रखना चाहता। सामाजिक स्तर पर उसे हीन दृष्टि से देखा जाता है। ऐसा व्यक्ति परिवार एवं समाज के लिए बोझ और बदनामी का कारण बन जाता है।

कविता

प्रभु हैं उनके साथ सदा . . .

प्रभु हैं उनके साथ सदा, जो करते हैं उपकार।
ऐसे लोगों के दम पे है, फलता-फूलता यह संसार।
जिनके पास न वैर फटकता और न रहता मन में द्वेष।
उद्यत रहते हैं जो प्रतिपल, हरने धरणी का सब क्लेश।
प्रेम और करुणा से प्रेरित, जिनके जीवन का व्यवहार।
प्रभु हैं उनके साथ सदा, जो करते हैं उपकार।
द्वंद्व-भाव से दूर सदा, जो स्वयं बनाते अपनी राह।
सत्य-पथ पर चल पड़ते हैं, बिना किए जग की परवाह।
संघर्षों से सदा जूझना, आता जिनको बारंबार।
प्रभु हैं उनके साथ सदा, जो करते हैं उपकार।
होते हैं जो सदा-सर्वदा, अंदर और बाहर से एक।
भाव, विचारों और क्रिया में, समरसता की जिनकी टेक।
निर्भय होकर निज समाज को, देते हैं जो शुद्ध विचार।
प्रभु हैं उनके साथ सदा, जो करते हैं उपकार।
कभी नहीं पाया जाता है, जिनमें पर-निंदा का दोष।
जीत लिया जिन्होंने जग में, लोभ, मोह, मद, मत्सर, रोष।
सदाचार का पालन करना, जिनके जीवन का है सार।
प्रभु हैं उनके साथ सदा, जो करते हैं उपकार।

-स. अमरजीत सिंघ, प्लाट-१४६, लेन-८, राजेश्वर नगर, फेस-१, निकट लोकायुक्त निवास, आई टी पार्क, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून-२४८३०१; फोन : ९४१२०-५६६७२

ख़बरनामा

सी. बी. आई द्वारा जगदीश टाईटलर को कलीन चिट देना अत्यंत निंदनीय : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : २५ मार्च : जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष, शिरोमणि गु प्र कमेटी ने कहा कि देश की सर्वोच्च जांच एजेंसी सी बी आई द्वारा जगदीश टाईटलर को नवंबर, १९८४ में हुई सिक्ख नसलकुशी केस में कलीन चिट देना अत्यंत निंदनीय है तथा समूचे सिक्ख भाईचारे के लिए निराशाजनक है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि सी. बी. आई का यह एकतरफा फैसला है। इस फैसले से विश्व के कोने-कोने में बसते सिक्खों के मन में भारी रोष है। उन्होंने कहा कि सिक्ख बार-बार यह कह रहे हैं कि नवंबर, १९८४ में इंदिरा गांधी की मृत्यु के उपरांत सिक्ख नसलकुशी करने वालों की अगुआई कांग्रेसी नेता जगदीश टाईटलर ने की थी। शोक की बात है कि उस समय हकूमत की शह पर सिक्ख कत्लेआम की सारी कार्यवाही की गई। उन्होंने कहा कि सिक्ख नसलकुशी के बारे में न तो सही तरीके से पुलिस थानों में एफ. आई आर. दर्ज की गई और न ही जांच एजेंसियों ने निष्पक्ष ढंग से जांच की। उन्होंने कहा कि सी. बी. आई देश में सबसे ज्यादा निष्पक्ष ढंग से जांच करने वाली एजेंसी मानी जाती है परंतु इसने भी यह साबित कर दिया है कि हकूमत के आगे किसी का ज़ोर नहीं।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने रोष भरे स्वर में सी. बी. आई से पूछा है कि अगर टाईटलर दोषी नहीं है तो अकेली दिल्ली में लगभग ४ हज़ार सिक्ख मारे गए थे, फिर उनका कातिल कौन है? आज तक कितनों को फांसी दी गई है और कितनों को अन्य सज़ा मिली है? उन्होंने कहा कि देश की स्वतंत्रता हेतु हुई कुर्बानियों में ८० प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा डालने वाली सिक्ख कौम गत ३० वर्षों से इंसाफ की राह देख रही है किंतु अफ़सोस कि इंसाफ देने की बजाए उसे अपने ही देश में बेगानगी का एहसास करवाया जा रहा है, जो अत्यंत निंदनीय है। उन्होंने कहा कि सी. बी. आई द्वारा जगदीश टाईटलर को कलीन चिट देने से आज समूचे विश्व में बसती सिक्ख कौम की भावनायों को गहरी चोट पहुंची है तथा सिक्खों के मन में भारी रोष है। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम इसका डटकर विरोध करेगी।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का वर्ष २०१५-१६ का बजट पारित

श्री अमृतसर : ३० मार्च : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की अध्यक्षता तले कार्यकारिणी की एकत्रता कार्यालय शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर में प्रबंधकीय ब्लॉक के एकत्रता हाल में हुई, जिसमें वर्ष २०१५-१६ का ९ अरब, ९३ करोड़, २३ लाख, ८९ हज़ार, ६ सौ रुपए का वार्षिक बजट पारित किया गया तथा होने वाले खर्चों की प्रवानगी दी गई। इस बजट में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध चलाने के अतिरिक्त लोक-भलाई के कामों के लिए शुरू की गई स्कीमों के लिए भी राशि रखी गई है।

पत्रकारों से वार्ता के दौरान जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु प्र कमेटी ने बताया कि शिरोमणि गु प्र कमेटी का वर्ष २०१५-१६ का बजट पिछले साल से ८८ करोड़, १७ लाख, ३७ हज़ार, ३ सौ रुपए अधिक है। उन्होंने कहा कि कैंसर से पीड़ित मरीजों तथा गरीब बच्चों की शिक्षा हेतु पहले की तरह सहायता जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि जनरल बोर्ड फंड के लिए ५९ करोड़ रुपए, ट्रस्ट फंड के लिए ४३ करोड़, १३ लाख, २८ हज़ार, ६ सौ रुपए, विद्या

फंड के लिए ३१ करोड़ रुपए, प्रिंटिंग प्रेसों के लिए ७ करोड़, ५ लाख रुपए, धर्म प्रचार कमेटी के लिए ६७ करोड़ रुपए, गुरुद्वारा साहिबान-दफा-८५ के लिए ६ अरब, ३ करोड़, ८४ लाख, ६१ हज़ार रुपए तथा शिक्षण संस्थाओं के लिए १ अरब, ८२ करोड़, २ लाख रुपए की राशि रखी गई है। उन्होंने कहा कि मीरी-पीरी मेडिकल कॉलेज, शाहबाद मारकंडा (हरियाणा) के लिए ५ करोड़ रुपए, श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व यूनीवर्सिटी, श्री फ़तहिगढ़ साहिब के विस्तार हेतु ८ करोड़ रुपए, श्री गुरु ग्रंथ साहिब मिशन, शाहपुर (हरियाणा) के लिए २ करोड़ रुपए तथा श्री गुरु रामदास चैरीटेबल अस्पताल की सहायता के लिए ३ करोड़ रुपए रखे गए हैं। कैंसर-पीड़ित मरीजों के लिए ६ करोड़ रुपए तथा खेल के मैदान आदि के विस्तार के लिए ३ करोड़ रुपए रखे गए हैं। गरीब एवं आर्थिक रूप से निर्धन परिवारों के होशियार बच्चों की पढ़ाई हेतु सहायता करने के लिए भी १ करोड़, ३० लाख रुपए की राशि रखी गई है। शिरोमणि गु प्र कमेटी के स्कूलों में पढ़ने वाले अमृतधारी परिवारों के अमृतधारी बच्चों हेतु प्राइमरी के विद्यार्थियों के लिए २००० रुपए, दसवीं कक्षा तक ३००० रुपए तथा इंटरमीडिएट तक ४००० रुपए वार्षिक वजीफे के रूप में देने के लिए कुल २ करोड़ रुपए रखे गए हैं। जिन धर्मी फौजियों को अभी तक सहायता नहीं मिल सकी उनके लिए २ करोड़, २५ लाख रुपए की राशि रखी गई है। नवंबर, १९८४ ई में दिल्ली तथा अन्य शहरों में हुई सिक्ख नसलकुशी से प्रभावित सिक्ख परिवारों के बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए ५० लाख रुपए रखे गए हैं। सिक्ख नसलकुशी सम्बंधी स्पेशल कोर्ट केसों की पैरवी तथा वकीलों की फीस आदि के लिए ५० लाख रुपए रखे गए हैं।

इस एकत्रता में स. रघुजीत सिंघ करनाल वरिष्ठ उपाध्यक्ष, स. केवल सिंघ बादल कनिष्ठ उपाध्यक्ष, स. सुखदेव सिंघ महासचिव, कार्यकारिणी सदस्य स. दिआल सिंघ कोलिआंवली, स. रजिंदर सिंघ महिता, स. करनैल सिंघ पंजोली, स. गुरबचन सिंघ करमूंवाल, स. रामपाल सिंघ बहिणीवाल, स. निरमैल सिंघ जौलां, स. मोहन सिंघ बंगी, स. सुरजीत सिंघ गढ़ी, स. भजन सिंघ, स. मंगल सिंघ, सचिव स. दलमेघ सिंघ तथा स. मनजीत सिंघ आदि उपस्थित थे।

पालको मोटर्स नई दिल्ली की तरफ से कैंसर राहत फंड के लिए ५० हज़ार रुपए भेंट

श्री अमृतसर : ७ मार्च : पालको मोटर्स, नई दिल्ली के मालिक स. अरविंदर सिंघ के सुपुत्र स. चेतन सिंघ ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा मानवता की भलाई हेतु चलाए जा रहे कैंसर राहत फंड के लिए ५० हज़ार रुपए की नक़द राशि स. मनजीत सिंघ सचिव को उनके कार्यालय में भेंट की। स. मनजीत सिंघ ने स. चेतन सिंघ का धन्यवाद करते हुए उन्हें श्री हरिमंदर साहिब की तसवीर एवं सिरोपा देकर सम्मानित किया।

स. चेतन सिंघ ने कहा कि जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा मानवता की भलाई के लिए शुरू किया गया कैंसर राहत फंड कैंसर के मरीज़ों तथा उनके परिवार आदि के लिए बहुत बढ़िया प्रयत्न है। उन्होंने कहा कि वे शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के इस प्रयत्न से बहुत प्रभावित हुए हैं तथा यह गर्व करने की बात भी है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा लोक-भलाई हेतु आरंभ किए गए कैंसर राहत फंड में अधिक से अधिक लोगों को योगदान देना चाहिए।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०५-२०१५